''गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु – गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।।
ध्यानमूलं गुरोर्मूर्ति, पूजा मूलं गुरोः पदं। मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्ष मूलं गुरो कृपा।।''

!! ये मिशन चलता रहेगा !!

"तगा ! हम-तुम रहे न रहे, ये मिशन चलता रहेगा।

(जून 2010 की बात है। एक दिन सद्गुरुदेव आश्रम परिसर से बाहर, एक गुरुभाई श्री तगाराम सारण के साथ घूमने गए। घूमकर जब वापस आश्रम आये तो वर्तमान आश्रम के मंच के पास आकर सद्गुरुदेव थोड़ी देर के लिए रुक गए, फिर गंभीर होकर ये दिव्य उद्गार व्यक्त किये।) जैसा उन्होंने बताया।

अपने जीवन में सुधार

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग को अपना उद्धारकर्ता और कल्याणकारी सद्गुरु मानते हो और उनके मुख्य मिशन-"**मानवता के दिव्य रूपान्तरण**" में अपना सहयोग करना चाहते हो तो उनके द्वारा बताये दिव्य पथ-'**नाम जप**' व '**ध्यान**' पर जोर दिया जाएँ। जीवन में जो परिवर्तन आएगा, वो नाम-जप व ध्यान से ही आएगा। जीवन की हर घटना और समस्या का समाधान गुरु कृपा से ही होगा।

समर्थ सद्गुरुदेव ने हमेंशा अपने जीवन में संयम और विनयशीलता का परिचय दिया है। अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ की बातों में नहीं गंवाएँ। ये साधक को आराधना में पतन की ओर ले जाती हैं।

-सम्पादक

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

वैदिक-धर्म अर्थात हिन्दू-धर्म में गुरु का पद ईश्वर से भी महान माना गया है। इस सम्बन्ध में गुरुगीता में कहा है :—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

मैं नाथ मत का अनुयायी हूँ। मेरे मुक्तिदाता परमश्रद्धेय सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाई नाथ जी योगी आई-पंथी नाथ थे। कलियुग में नाथ मत के आदिगुरु योगेन्द्र श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी महाराज माने गये हैं। मैं उन्हीं के आदेश से पश्चिमी जगत में ज्ञान-क्रान्ति का श्रेय प्राप्त करूँगा।

भारत इस समय घोर तामसिकता में डूबा हुआ है। भारत के उत्थान के लिए सर्व प्रथम रजोगुण के विकास की आवश्यकता है। व्यावहारिक भाषा में भारतीयों की प्रथम आवश्यकता रोटी है, राम का स्थान दूसरे नम्बर पर है।

पश्चिमी जगत भौतिक-सुविधाएँ भोगते-भोगते बहुत ही दुःखी हो चुका है। आज जितना अशान्त पश्चिमी जगत है उतना अशान्त संसार का कोई देश नहीं। आज उन्हें मात्र शान्ति की ही भूख बाकी बची है, और शान्ति केवल राम अर्थात ईश्वर तत्व ही दे सकता है। [redacted]

क्योंकि यह काम केवल वैदिक-धर्म अर्थात हिन्दू-धर्म के मूलभूत सिद्धान्तों के अनुसार जीवन जीने से ही सम्भव है। अतः मुझे कलियुग के आदि गुरु से आदेश मिला है कि मेरा कार्य विशेष रूप से पश्चिमी जगत को चेतन करने का है। इसी आदेश के कारण अब मैं प्राथमिक रूप से पश्चिमी जगत में ही कार्य करना चाहता हूँ।

इक्कीसवीं सदी मानव जाति के पूर्ण विकास का समय है और पूर्ण विकास की क्रियात्मक विधि केवल भारत ही जानता है। अतः अब भारत का कार्य प्रारम्भ होता है।

राम लाल
19/9/97
जोधपुर

पु. → जो "परमहंस पद" प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिए रजोगुण की प्राप्ति ही परमकल्याण-प्रद है। बिना रजोगुण के क्या कोई सत्वगुण प्राप्त कर सकता है? बिना भोग का अन्त हुए, योग (मिलन) हो ही कैसे सकता है? बिना वैराग्य के त्याग कहाँ से आवेगा?

" स्वामी श्री विवेकानन्द जी "

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

~~ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः~~

"First" Satya-yuga of "kali"

Sri Aurobindo

"See the Avatars and great Vibhutties coming arising thickly, treading each close behind the other. Are not these the signs and do they not tell us that the "Great Avatar of all" arrives to establish the "first satya yuga of the kali"

Sri Aurobindo"

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

"योग"

भारत में योग "गुरु-शिष्य" परम्परा के आधार पर चलाया जाता है। हम योग के बारे में विद्यालय, महाविद्यालय और उस तरह के अध्ययन की कल्पना ही नहीं कर सकते। यह तो "अमेरिकी" विचार होगा। अमेरिका में योग सिखाने के केन्द्र, पाठ्यक्रम, भाषण, कक्षा आदि की व्यवस्था है।

श्री अरविन्द

"हिन्दुओं की नींद कब खुलेगी"

स्वामी श्री विवेकानन्दजी

पश्चिम के मेरे शिष्यगण जब तैयार होकर यहाँ आयेंगे और तुम लोगों से कहेंगे :- "तुम लोग क्या कर रहे हो, तुम्हारा धर्म-कर्म और रीति-नीति किस बात में कम है; देखो, हम लोग तुम्हारे धर्म को ही सर्वश्रेष्ठ समझते हैं।" तब देखोगे, उस बात को लोग "दल के दल" सुनेंगे।

उन लोगों के द्वारा इस देश का "विशेष" भला होगा। ऐसा न समझना कि वे लोग "धर्म-गुरु" होकर इस देश में आयेंगे। भौतिक अवस्था को समुन्नत बनानेवाले विज्ञान आदि व्यवहारिक शास्त्रों में वे लोग तुम्हारे गुरु होंगे, और धर्म-विषय में इस देश के लोग उनके गुरु होंगे।

"धर्म-विषय" में भारत के साथ "समस्त-जगत" का "गुरु-शिष्य" का सम्बन्ध "चिरकाल तक" बना रहेगा।

सद्‌गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

"Man", a transitional Being.

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

"आदि" और "अन्त" का मिलन ?

भौतिक विज्ञान की भाषा ?
अकाशतत्व और पृथ्वी तत्व का मिलन।

वैदिक मनोविज्ञान की भाषा ?
सम्पूर्ण मानव जाति के सातों कोश :(1) अन्नमयकोश, प्राणमय कोश
मनोमयकोश, विज्ञानमयकोश, आनन्दमय कोश, चित्तमय कोश सत्यमय कोश

बाइबल की भाषा में ?

"God-spirit" meets "God-matter", and that is divine life in a body."

स्वर्ग (ईश्वर) पृथ्वी को आलिंगन कर चूम लेगी, और वे दोनों एक हो जावेंगे।

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

We have denied the divinity in matter to confine it in our holy places, and now matter is taking its revenge - we called it crude, and crude it is. As long as we accept this imbalance, there is no hope for the earth:- we will swing from one pole to the other - both equally false, from material enjoyment to spiritual austerity, without ever finding our plenitude. We need both vigor

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

ॐ श्री गुरवे नारायणाय नमः

भारत में अन्धेरा ठोस बनकर जम गया है।

निश्चित रूप से भारत तामसिक शक्तियों से पूर्णरूपसे जकड़ा हुआ है। जिस प्रकार गज (हाथी) समुद्र में डूबने लगा था, उसी प्रकार भारत अन्धकार में डूब रहा है। और जिस प्रकार गज की करुण पुकार पर सुदर्शन-धारी ने उसे मुक्त किया था, भारत भी मात्र उसी उपाय से बच सकता है।

भारत को आजाद करना पश्चिम की मजबूरी थी। यही कारण है, वे शक्तियाँ भारत के दो टुकड़े कर गयी। और वे शक्तियाँ आज एक और विभाजन के लिए पूर्णरूपसे प्रयत्नरत हैं। उन्होंने लगभग सम्पूर्ण पूर्वोत्तर भारत को ईसाई बनाने का षड्यंत्र रचा हुआ है ताकि भारत का एक और विभाजन कर सकें।

दूसरी तरफ देश को आर्थिक जाल में बुरी तरह से जकड़ रखा है। आज देश को आय का 1/3 भाग ब्याज में देना पड़ रहा है। क्या कोई व्यवसाय 33% की दर से रकम उधार लेकर पनप सकता है? कभी नहीं।

तीसरे विभाजन की कोशिश मध्य-पूर्व की शक्तियाँ कर रही हैं। वे पश्चिमोत्तर भारत को भारत से अलग करने का पूर्ण प्रयास कर रही हैं।

इसके अतिरिक्त उपरोक्त दोनों शक्तियों ने सम्पूर्ण देश में भाषा, धर्म, जाति और क्षेत्रीय भावनाओं को भड़का कर सम्पूर्ण देश का वातावरण अशान्त बना रखा है। ऐसी स्थिति में देश के बचने का एक ही आधार है - "धर्म"। क्योंकि भगवान श्रीकृष्ण ने महर्षि श्री अरविन्द को अलीपुर जेल में कहा था - "भारत, धर्म के द्वारा और धर्म के लिए ही अस्तित्व में है"

भारत का सिद्धान्त है अहिंसा परमो धर्मः। इस देश और इस धर्म को हिंसा से कभी नष्ट किया ही नहीं जा सकता। इस सम्बन्ध में स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने कुन्नूर में 27-2-1895 में कहा था - "भारत का संदेश है कि शान्ति, शुभ, धैर्य और नम्रता की अन्त में विजय होगी। क्योंकि वे यूनानी कहाँ हैं, जो एक समय पृथ्वी के स्वामी थे? समाप्त हो गये। वे रोमवाले कहाँ हैं जिनके सैनिकों की पद-चाप से संसार काँपता था? मिट गये। वे अरबवाले कहाँ हैं, जिन्होंने पचास वर्षों में अपने झण्डे अटलांटिक महासागर से प्रशान्त महासागर तक फहरा दिये थे। और वे स्पेनवाले करोड़ों मनुष्यों के निर्दयी हत्यारे कहाँ हैं? दोनों जातियाँ लगभग मिट गईं। परन्तु अपनी संतान की नैतिकता के कारण यह दयालु जाति कभी नहीं मरेगी, और वह फिर अपनी विजय की घड़ी देखेगी।"

इस सम्बन्ध में महर्षि श्री अरविन्द ने भी कहा था - "भारत सच्ची स्वतन्त्रता - राजनैतिक अस्त्रों के माध्यम से नहीं बल्कि अध्यात्मिक उन्नति के द्वारा प्राप्त करेगा।"

इस सम्बन्ध में स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने भी कहा है -
"भारत का प्राण धर्म है, भाषा "धर्म" है तथा भाव "धर्म" है।"

[illegible]
31 मार्च, 1999, जोधपुर

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

ॐ श्री [illegible] नमः

August 8, 1926 -

The Greeks had more light than the christians who converted them; at that time there was gnosticism in Greece, and they were developing agnosticism and so forth. The christians brought darkness rather than light.

That has always been the case with aggressive religions - they tend to overrun the earth. Hinduism on the other hand is passive and therein lies its danger....; That is the reason why they have degenerated and cannot do anything. They only take the forms adopted in the previous movement without realizing the changed circumstances and fresh requirements of the time."

"Sri Aurobindo"

"Aurobindo's yoga?"

The world is not either a creation of maya or only a play, lila, of the divine, or a cycle of births in the ignorance from which we have to escape, but a field of manifestation in which there is a progressive evolution of the soul and the nature in matter and from matter through life and mind to what is beyond mind till it reaches the complete revelation of Sachchidananda of Sachchidananda:- The eternal divine principle of Existence (SAT) consciousness (CHIT) and delight (ANANDA)" in life. It is this that is the basis of yoga and gives a new sense of life."

"Sri Aurobindo"

ॐ श्री [illegible] नमः

April 8, 1907,

We reiterate with all the emphasis we can command that the kashatriya of old must again take his rightful position in our social polity to discharge the first and foremost duty of defending its interests. The brain is impotent without the right arm of strength.

"Sri Aurobindo"

ॐ श्री गँगाई नाथाय नमः

"विश्व में धार्मिकता"

आज विश्व के धार्मिक जगत में जितना अन्धकार है, पहले कभी नहीं देखने में आया। मुस्लिम और ईसाई धर्म के प्रभाव के कारण भारत में भी घोर अन्धकार है।

संसार भर के सभी धर्म, जो अहिंसा में विश्वास रखते हैं बहुत ही दयनीय स्थिति में है। लगभग सम्पूर्ण-विश्व में हिंसा में विश्वास रखने वाले धर्मों का एक छत्र साम्राज्य है। अहिंसापरमोधर्मः के सिद्धान्त में विश्वास रखने वाला भारत, धार्मिक दृष्टि से लगभग प्रभावहीन हो चुका है। जब तक भारतीय धर्म अर्थात हिन्दू-दर्शन का पुनरोत्थान नहीं होगा, विश्व-शान्ति मात्र मृगमारीचिका ही रहेगी। आणविक अस्त्रों का भय दिखाकर कभी शान्ति स्थापित नहीं हो सकेगी। भयमिश्रित शान्ति का अन्त बहुत ही बुरा होगा।

ॐ श्री गँगाई नाथाय नमः

→ भारत की नियति का सूर्य ←

" अब प्रवाह ऊपर की ओर है, और पतन का काल समाप्त हो गया है। अब प्रभात निकट है और एक बार प्रकाश अपना दर्शन दे दे तो रात्रि फिर कभी नहीं हो सकती। उषा काल शीघ्र ही पूरा हो जायेगा और सूर्य क्षितिज पर उदित होगा। भारत की नियति का सूर्य उदित होगा, और समस्त भारत को अपनी ज्योति से भर देगा और केवल भारत को ही नहीं एशिया और जगत भर को प्लावित कर देगा। हर घड़ी, हर पल इन्हें दिवस की उस कान्ति और दीप्ति के निकट लाते हैं, जिसकी स्वीकृति भगवान ने दी है।"

"श्री अरविन्द"

"पतन का काल समाप्त हो गया है। नया भारत उठ रहा है, सचेतन हो रहा है और राष्ट्रों की बिरादरी में अपना उचित स्थान लेने की तैयारी कर रहा है।"

"श्री अरविन्द"

ॐ श्री गँगाई नाथाय नमः

भारत का पुनरोत्थान मानवता में जो परिवर्तन शीघ्र लाने वाला है, उस सम्बन्ध में श्री अरविन्द कहते हैं:—

" इस युग के मानव का पथ प्रदर्शन बुद्धि की टिमटिमाती लौ नहीं, अन्तर्नभ का ध्रुव तारा होगा। पूर्ण होगी धरा स्वर्ग की सुगन्ध से। जड़ को चेतन की विजय स्वीकार करनी ही पड़ेगी।"

"श्री अरविन्द"

गुरुदेव का पत्र

आलस्य भी एक प्रकार की हिंसा है।

ईश्वर आराधना के बिना मोक्ष नहीं

x———x

भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में स्पष्ट कहा है कि ब्रह्मलोक तक के सभी लोक पुनरावर्ती स्वभाव वाले हैं। गीता के ८वें अध्याय के १६वें श्लोक में भगवान ने कहा है:-

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन ।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते ॥१६॥

हे अर्जुन, ब्रह्मलोक से लेकर सब लोक पुनरावर्ती स्वभाव वाले हैं, परन्तु हे कुन्तीपुत्र मेरे को प्राप्त होकर पुनर्जन्म नहीं होता। इसे और स्पष्ट करते हुए भगवान ने ९वें अध्याय के २५वें श्लोक में कहा है:-

यान्ति देवव्रता देवान् पितॄन्यान्ति पितृव्रताः ।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम् ॥

देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं, पितरों के पूजनेवाले पितरों को प्राप्त होते हैं, भूतों को पूजने वाले भूतों को प्राप्त होते हैं, (और) मेरे भक्त मेरे को ही प्राप्त होते हैं।

इतना स्पष्ट होने पर भी इस युग का मानव समझ नहीं पा रहा है, और विभिन्न प्रकार के देवताओं के चक्कर में फंसा पड़ा है। मूलाधार से लेकर आज्ञाचक्र पर्यन्त सभी आराधनाएं निकृष्ट श्रेणी में आती हैं। आज्ञाचक्र का भेदन गुरु कृपा के बिना सम्भव नहीं है। अतः आध्यात्मिक जगत में संत सतगुरु की कृपा के बिना चलना असम्भव है। इस कलियुग का मानव युग के गुण धर्म के कारण गुरु-शिष्य परम्परा में विश्वास नहीं करता। इसके अलावा इस युग में सात्विक संतों का नितान्त अभाव हो चला है। कपटी गुरुओं से ठगा के इस युग के मानव का गुरु भाव पूर्ण रूप से समाप्त हो चुका है। ऐसी स्थिति में संसार के जीवों का कल्याण असम्भव हो चला है। ईश्वरीय शक्ति के अवतरण के बिना अब काम चलने वाला नहीं।

(हस्ताक्षर)
06.5.86

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

उद्देश्य

- समस्त विश्व के मानवों के कल्याण हेतु बिना किसी वर्ग, वर्ण, जाति, धर्म, राष्ट्रीयता एवं लिंग भेद के इस दिव्य अध्यात्म ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार करना एवं समस्त विश्व में अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र स्थापित करना।
- विश्व के समस्त धर्मों के विकारों एवं आडम्बरों से मानव मात्र को मुक्त करना एवं अध्यात्म के मूलभूत सार्वभौम सिद्धांत के अनुसार मन मंदिर में उस परमतत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार कराना।
- विश्व भर में वैदिक दर्शन की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार करवाकर भौतिक जगत् में विज्ञान की तरह उसे सत्य प्रमाणित करना।
- विश्व कल्याण हेतु संपूर्ण विश्व में वैदिक मनोविज्ञान (अध्यात्म विज्ञान) की शिक्षा हेतु प्रबन्ध करना तथा वहीं के लोगों को इस ज्ञान का प्रशिक्षण देने योग्य बनाना।
- विश्व के सकारात्मक स्त्री-पुरुषों को शक्तिपात-दीक्षा देकर चेतन करना तथा उन्हें अपने ही देश में इस ज्ञान के प्रचार-प्रसार का अधिकार देकर मानव शान्ति का पथ प्रशस्त करना।
- सिद्धयोग में वर्णित शक्तिपात दीक्षा द्वारा मानवीय गुणों में परिवर्तन लाया जाकर तमोगुण से रजोगुण, रजोगुण से सतोगुण, सतोगुण से त्रिगुणातीत जाति में बदलकर उस परम तत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार कराना।

आकाश और पृथ्वी का मिलन-योग

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

मैं, जिस दिव्य विज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए निकला हूँ विश्व उसे अभी पूर्व-पश्चिम के मेल की संज्ञा दे रहा है। क्योंकि मानव-जाति का विकास इसी स्तर तक हुआ है। परन्तु भारतीय दर्शन आकाश और पृथ्वी के मिलन की बात करता है। पश्चिमी संस्कृति को इस दिव्य ज्ञान की जानकारी बिल्कुल नहीं है।

भारतीय योगदर्शन का मूल उद्देश्य मोक्ष है, रोग है ही नहीं। परन्तु आज, सम्पूर्ण संसार में योग का उद्देश्य मात्र रोग मुक्ति रह गया है। रोग नित्य नये-नये पैदा हो रहे हैं। क्योंकि भारतीय संस्कृति योग पर एकाधिकार मानती है, और रखती भी है, परन्तु मानवता में उसे मूर्तरूप नहीं दे पा रही है। केवल शारीरिक कसरत को ही योग की संज्ञा दे रहे हैं। इसके विरोध को, पश्चिम की शासित करके अपना बचाव करने का प्रयास कर रहे हैं। अपना बचाव कर पाएंगे, सम्भव नहीं लगता।

रामलाल
14-1-2006
AVSK, जोधपुर

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

गुरुदेव द्वारा लिखा पत्र

प्रिय श्री चुन्नी लाल जी! खुश रहो। आपकी लड़की जो कह रही है तथा कर रही है, उस पर विश्वास मत करना। यह कलियुग है, इसमें तामसिक शक्तियों का साम्राज्य है। मेरे या गुरुदेव के नाम से आपको कोई कुछ भी कहे, विश्वास मत करना। अगर मुझे या गुरुदेव को कोई आदेश या दिशा निर्देश देना होगा, तो सीधा आपको दिया जायेगा। गुरु कभी किसी के माध्यम से संदेश नहीं देता है। अतः आपके पास जो लौंग हैं उनमें से 2 सुबह 2 शाम दाल या सब्जी में डालते रहो।

लड़की के कहने के अनुसार कुछ भी मत करना। आप अपने विवेक से जो ठीक समझो करना। भविष्य में कोई भी व्यक्ति मेरे या गुरुदेव के नाम से कुछ भी कहे विश्वास मत करना। आपको दिशा निर्देश हो भी वह भी ध्यान के समय उसी को सत्य मानना।

शुभाशीष सहित

रामलाल सियाग,
08-9-95
जोधपुर

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

"बुद्ध" के अन्तिम शब्द:

अपने निर्वाण के लिए स्वयं साधना करो। मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता। तुम्हारी सहायता कोई नहीं कर सकता। अपनी सहायता अपने आप करो।

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

श्री रामकृष्ण परमहंस को कैंसर क्यों?

एक शिष्य ने श्री अरविन्द से प्रश्न किया— "कहा जाता है कि रामकृष्ण परमहंस को कैंसर अपने शिष्यों के पापके कारण हुआ?

श्री अरविन्द:— "हाँ यह बात उन्होंने स्वयं कही थी, और उनकी बात ठीक होनी ही चाहिए। तुम्हें पता है, उन्होंने इस बात के पक्ष और विपक्ष में युक्तियाँ दी थी कि गुरु को शिष्यों की बहुत सी चीजें अपने ऊपर लेनी पड़ती है।

एक प्रसिद्ध योगी ने अपने एक शिष्य से, जब वह गुरु बनने लगा, तब कहा था, "अब तुम अपनी कठिनाइयों के अतिरिक्त औरों की कठिनाइयाँ भी अपने ऊपर ले रहे हो।"

हाँ, अगर गुरु चाहे तो, शिष्यों से अपना सम्बन्ध काट सकता है, तब (गुरु को) ऐसी कोई कठिनाई नहीं आयेगी, लेकिन साथ ही उसका मतलब होगा कि काम आगे नहीं बढ़ेगा और साधक अपनी किस्मत पर बिना किसी सहारे के छोड़ दिये जायेंगे।

श्री अरविन्द

स्वामी श्री विवेकानन्द जी ने कहा है:—

जगत का नियम है:- "आदान" और "प्रदान"। इस नियम को जो लोग, जो जाति, जो देश नहीं मानेगा, उसका कल्याण नहीं होगा, हम लोगों को भी उस नियम का पालन करना चाहिए। इसी लिए मैं अमेरिका गया था। उन लोगों के भीतर इस समय अधिक मात्रा में धर्म-पिपासा है कि मेरे जैसे लोग यदि हजारों की संख्या में भी वहाँ जायें, तो भी उन्हें स्थान मिलेगा। वे बहुत दिनों से तुम लोगों को धन-रत्न दे रहे हैं, तुम लोग अब उन्हें अमुल्य-रत्न दो। तुम देखोगे घृणा के स्थान में श्रद्धा-भक्ति मिलेगी, और तुम्हारे देश का वे स्वयं ही उपकार करेंगे। वे वीर-जाति है, उपकार नहीं भूलते।

स्वामी श्री विवेकानन्द जी

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

ॐ श्री गँगाई नाथाय नमः

"मनुष्य को ईश्वर के प्रतिशोध में भले ही विश्वास न हो सके, किन्तु वह इतिहास के प्रतिशोध को कदापि अस्वीकार नहीं कर सकता। यही अंग्रेजों के ऊपर भी बीतेगा। वे हमारी गर्दन पर सवार हैं, उन्होंने अपने सुख-भोगों के लिए हमारे रक्त की अन्तिम बूँद भी चूस ली। हमारी करोड़ों की सम्पत्ति अपहरण कर ले गये, जब कि गावों और प्रान्तों में हमारी जनता भूखों मर रही थी।

"अब उनके ऊपर नीतियों के प्रतिशोध की बौछार होगी।"

यदि आज चीनी उठें और अंग्रेजों को समुद्र में डुबो दें, जिसके कि वे पात्र हैं, तो यह न्याय के अतिरिक्त और कुछ न होगा।

स्वामी श्री विवेकानन्द जी

ॐ श्री गँगाई नाथाय नमः

"यह "मूर्खों" का उपदेश है, कि तुम "पापी" हो, अतएव एक कोने में बैठकर हाय-हाय करते रहो। यह उपदेश देना मूर्खता ही नहीं, दुष्टता भी है, कोरी बदमाशी है।

(ईसाइयों की मान्यता है, मनुष्य पापी है)
(हिन्दुओं की मान्यता है, मनुष्य ईश्वर का स्वरूप है)

स्वामी श्री विवेकानन्द जी

ॐ श्री गँगाई नाथाय नमः

"First Satya Yuga of Kali"

"See the Avatars and great vibhuties coming, arising thickly, treading each close behind the other. Are not these the signs, and do they not tell us that the "great Avatar of all" arrives to establish the "First Satya yuga" of the Kali."

Sri Aurobindo

ॐ श्री गँगाई नाथाय नमः

भारत की वस्तुस्थिति स्वामी श्री विवेकानन्द जी की दृष्टि में:-

(1) भारत में हिन्दुओं ने क्या छोड़ा? भव्य और आश्चर्य-जनक मँदिर।

(2) मुसलमानों ने क्या छोड़ा? भव्य भवन

(3) अँग्रेजों ने ...? शराब की टूटी बोतलों के टीलों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं छोड़ा।

सद्‌गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

ॐ श्री गौराई नाथाय नमः

आनन्द और सुख

इस समय संसार में केवल भौतिक सुख को ही संसार का मानव आनन्द की संज्ञा दे रहा है। आनन्द और भौतिक सुख में रात और दिन का अन्तर है। आनन्द निरन्तर जीवन भर एक ही स्थिति में रहता है, परन्तु सुख की स्थिति निरन्तर बदलती रहती है। बचपन से जिन चीजों से सुख की अनुभूति होती है, किशोर अवस्था में आते ही सुख के आधार बदल जाते हैं। जवानी में उस स्थिति में और आमूलभूल परिवर्तन हो जाता है। और बुढ़ापा आते ही, बचपन किशोरावस्था और जवानी में जिन भिन्न २ कारणों से सुख की अनुभूति होती थी, उससे बिलकुल भिन्न स्थिति हो जाती है। इस प्रकार हम देखते हैं, संसार का मानव जिसे आनन्द की संज्ञा दे रहा है वह मात्र भौतिक सुख ही है। आनन्द चिर स्थाई होता है। उसका स्वरूप और कारण उम्र के साथ २ परिवर्तनशील नहीं है। क्यों कि इस युग के मानव ने आनन्द का स्वाद चखा ही नहीं है, इसलिए वह आनन्द और सुख में कोई अन्तर नहीं समझता है। सुख-दुःख की स्थिति परिवर्तनशील है, परन्तु आनन्द चिर स्थाई रहता। आनन्द अनुभूति का नाम नहीं है। वह तो चिरस्थाई स्थिति का नाम है, जो जीवन भर सुख-शान्ति के साथ २ मानव को मगन और प्रसन्नचित्त रखता है। उम्र और परिस्थितियां उसमें कोई अन्तर पैदा नहीं कर सकती। परन्तु ऐसी स्थिति का अनुमान इस युग का मानव लगा ही नहीं सकता। इसमें उनका दोष नहीं है, क्यों कि आनन्द प्रदान करने वाली शक्तियां संसार से लुप्त प्रायः हो चुकी हैं। मेरे सम्बन्धित लोग जब निरन्तर आनन्द की अनुभूति करते हैं तो उन्हें सुख और आनन्द के अन्तर का पता लगता है। आनन्द को हमारे सन्तों ने 'नाम अमल' और 'नाम खुमारी' की संज्ञा दी है। क्यों कि इस नाम खुमारी की बात इस युग का मानव काल्पनिक और झूठ समझता है, अतः उसकी समझ के बाहर की वस्तु है। यही कारण है, बेचारे इस युग के मानव सुख और आनन्द में कोई भेद नहीं कर पा रहे हैं। भौतिक साधनों से आनन्द मिलता तो पश्चिम जगत के लोग शान्ति के लिए भारत के भटकते नहीं आते। [illegible] [illegible]-3-88

→ मानव का दिव्य-रूप में रूपान्तरण ←

उच्चतर तत्व का अवतरण संभव है, और यह अवतरण हमारे अध्यात्मिक आत्मस्वरूप को केवल जगत से "बाहर" ले जाकर ही मुक्त नहीं करेगा, बल्कि इस जगत के "अन्दर" भी मुक्त करेगा, मन के अज्ञान या इसके अत्यन्त सीमित ज्ञान के स्थान पर, अतिमानसिक चेतना को स्थापित करेगा, जो आन्तरिक-आत्मा का ठीक यन्त्र होगी, और इसी की सहायता से मनुष्य अन्तर्मुखी और क्रियाशील दोनों भावों में अपने आपको प्राप्त करेगा, और अपनी पशुता से भरी मनुष्यता से निकलकर एक दिव्य-जाति में परिणित होगा।

"श्री अरविन्द"

"मनुष्य जब अतिमानवत्व प्राप्त करेगा तो अतिमानसिक रूपान्तर द्वारा उसका मन, प्राण और शरीर दिव्य-स्वरूप में रूपान्तरित हो जायगा। इसी का नाम है पार्थिव-अमरत्व (Terrestrial immortality) जीते जी जीवनमुक्त होना।"

"श्री अरविन्द"

इस सम्बन्ध में संत कबीरदास जी ने भी स्पष्ट शब्दों में कहा है:—

साधो भाई जीवत ही करो आशा।
जीवत समुझै जीवत बूझै, जीवत मुक्ति निवासा।
जियत करम की फाँस न काटी, मुए मुक्ति की आसा॥
तन छूटे जिव मिलन कहत है, सो सब झूठी आसा।
अबहुँ मिला सो तबहुँ मिलैगा, नहिं तो जमपुर वासा॥

"कबीर"

"यदि यह सत्य है कि सब कुछ उस "एक" ही परमसत्ता का विभिन्न रूप में प्रकाश है, एक ही चेतना का उत्तरोत्तर विकास है, तो मन का अतिमानस से, प्राण का चिन्मय से, शरीर का सत से और आत्मा का आनन्द से पुनर्मिलन असम्भव नहीं माना जा सकता, और तब मानव मंदिर में सच्चिदानन्द की प्राण-प्रतिष्ठा कोई असम्भव और अलौकिक बात नहीं रह जाती।"

"श्री अरविन्द"

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

ॐ श्री गैगाई नाथाय नमः

"जीवन का रहस्य"

मैं चेतना के सर्वोच्च शिखर से, अर्थात् असीम ऊंचाई से नीचे की तरफ छिटका। एक आठ-नौ माह के बालक के रूप में ऊपर की तरफ मुंह किए बहुत लम्बे समय तक नीचे की तरफ चलता रहा। किन्तु एक भय लग रहा था कि जमीन पर गिरते ही हड्डी-पसली चूर-चूर हो जावेगी। इसलिए दोनों हाथ-पैरों को सिकोड़ कर दम साधे मौत के क्षण का इंतजार करता रहा। अन्त में पाया कि मैं गुलाबी फूल के ऊपर जाकर गिरा। ऐसा लगा कि असीम वेग के साथ नीचे आते-आते वेग धीरे-धीरे शान्त हो गया और मैं ऊपर की तरफ मुंह किये हुए ही गुलाबी फूल पर आराम से लेट गया। तब शरीर को ढीला छोड़ कर चैन की सांस ली।

अभी-अभी थोड़े समय से अनुभव कर रहा हूँ कि मैं इस पार्थिव चेतना में बिल्कुल नया और अजीब प्राणी हूँ। मैंने श्री अरविन्द दिव्य-रूपान्तरण को पढ़ा तो समझ में आया रहस्य क्या है? श्री अरविन्द ने इस सम्बन्ध में कहा है:—

"God"-spirit meets "God"-matter"

Divine Transformation:— "No more stomach, no more Heart, no more blood circulation no more Lungs: all this will disappear and be replaced by a play of vibrations representing what these organs symbols of the centers of energy; they are not the essential reality. they simply give it a form or support in certain given circumstance."

सन् 1968-69 में मैंने सवा-लाख गायत्री मंत्रों का अनुष्ठान हर मंत्र के साथ "स्वाः" के साथ हवन कुण्ड में आहुतियां दे दे कर किया था। इसके बाद मुझे ध्यान के दौरान मेरे शरीर में दुधिया रंग का सफेद दिव्य प्रकाश (दिखाई) दिया। इस प्रकाश में मुझे असीम शान्ति का अनुभव हुआ।

उस समय मुझे भी विचार आया था कि मेरे अन्दर यह प्रकाश कैसा? लीवर, तिल्ली, फेफड़े, हृदय आदि कोई भी अंग दिखाई नहीं दे रहा है। जब मैंने इन अंगों को देखने का प्रयास किया तो उस प्रकाश में मुझे ओंकार के गुंजन की ध्वनि सुनाई दी। जब मैं आवाज के केन्द्रबिन्दु तक पहुँचा तो पाया कि वह तो गायत्री मंत्र की [illegible] ध्वनि थी, जो मेरी नाभि के अन्दर में से निरन्तर निकल रही थी।

श्री नाथ
3/7/2003
रामलाल

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

ॐ श्री गैंगाई नाथाय नमः

Comforter? Has he appeared?

(1) Mark 3:29— "But he that shall blaspheme against the Holy Ghost hath never forgiveness, but is in danger of eternal damnation."

(2) John 14:26— "But the comforter, which is the Holy Ghost, whom the father will send in my name, he shall teach you all things, and bring all things to your remembrace whatsoever I have said unto you."

(3) Luke 12:10— "And whosoever shall speak a word against "the son of man" it shall be forgiven him, but unto him that blasphemeth against the Holy Ghost it shall not be forgiven.

ॐ श्री गैंगाई नाथाय नमः

मानव-जाति के अन्तिम विकाश के सम्बन्ध में अविन्द आश्रम की mita Rechard (The mother) ने कहा है:—

"yet the road to reach there is a new road, that has never before been traced; none went that way, none did that. It is a beginning, a universal beginning. Therefore it is an adventure absolutely unexpected and unforeseeable."

mita Rechard (The mother)

→ योग-साधना ←

योग-साधना का उद्देश्य केवल वैयक्तिक पूर्णता नहीं है, वरन विश्व-उत्थान है। योग का उद्देश्य है समस्त मानवता, समस्त विश्व का दैवतीकरण अर्थात् सार्वभौम मुक्ति।" "श्री अरविन्द"

मानव जब अतिमानवत्व प्राप्त करेगा तो अतिमानसिक रूपान्तर द्वारा उसका मन प्राण और शरीर दिव्य स्वरूप में रूपान्तरित हो जायेगा। इसी का नाम पार्थिव-अमरत्व (Terrestrial immoratality) है।

"श्री अरविन्द"

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

"First" Satya-yuga of "kali"

Sri Aurobindo

"See the Avatars and great Vibhutties coming arising thickly, treading each close behind the other. Are not these the signs and do they not tell us that the "Great Avatar of all" arrives to establish the "first satya yuga of the kali"

Sri Aurobindo"

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

"योग"

भारत में योग "गुरु-शिष्य" परम्परा के आधार पर चलाया जाता है। हम योग के बारे में विद्यालय, महाविद्यालय और उस तरह के अध्ययन की कल्पना ही नहीं कर सकते। यह तो "अमेरिकी" विचार होगा। अमेरिका में योग सिखाने के केन्द्र, पाठ्यक्रम, भाषण, कक्षा आदि की व्यवस्था है।

श्री अरविन्द

"हिन्दुओं की नींद कब खुलेगी"

स्वामी श्री विवेकानन्दजी

पश्चिम के मेरे शिष्यगण जब तैयार होकर यहाँ आयेंगे और तुम लोगों से कहेंगे :- "तुम लोग क्या कर रहे हो, तुम्हारा धर्म-कर्म और रीति-नीति किस बात में कम है; देखो, हम लोग तुम्हारे धर्म को ही सर्वश्रेष्ठ समझते हैं।" तब देखोगे, उस बात को लोग "दल के दल" सुनेंगे।

उन लोगों के द्वारा इस देश का "विशेष" भला होगा। ऐसा न समझना कि वे लोग "धर्म-गुरु" होकर इस देश में आयेंगे। भौतिक अवस्था को समुन्नत बनानेवाले विज्ञान आदि व्यवहारिक शास्त्रों में वे लोग तुम्हारे गुरु होंगे, और धर्म-विषय में इस देश के लोग उनके गुरु होंगे।

"धर्म-विषय" में भारत के साथ "समस्त-जगत" का "गुरु-शिष्य" का सम्बन्ध "चिरकाल तक" बना रहेगा।

सद्‌गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

ॐ श्री गैणाई नाथाय नमः

वैदिक-धर्म अर्थात् हिन्दू-धर्म में गुरु का पद ईश्वर से भी महान माना गया है। इस सम्बन्ध में गुरुगीता में कहा है :—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

मैं नाथमत का अनुयायी हूँ। मेरे मुक्तिदाता परमश्रद्धेय सद्‌गुरुदेव बाबा श्री गैणाई नाथ जी योगी आई-पंथी नाथ थे। कलियुग में नाथ मत के आदिगुरु योगेन्द्र श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी महाराज माने गये हैं। मैं इन्हीं के आदेश से पश्चिमी जगत में ज्ञान-क्रान्ति का नेतृत्व करूँगा।

भारत इस समय घोर तामसिकता में डूबा हुआ है। भारत के उत्थान के लिए सर्व प्रथम रजोगुण के विकास की आवश्यकता है। व्यावहारिक भाषा में भारतीयों की प्रथम आवश्यक रोटी है। राम का स्थान दूसरे नम्बर पर है।

पश्चिमी जगत भौतिक-सुविधाएं भोगते-भोगते बहुत ही दुःखी हो चुका है। आज जितना अशान्त पश्चिमी जगत है उतना अशान्त संसार का कोई देश नहीं। आज इन्हें मात्र शान्ति की ही भूख बाकी बची है, और शान्ति केवल राम अर्थात् ईश्वर तत्व ही दे सकता है।

क्योंकि यह काम केवल वैदिक-धर्म अर्थात हिन्दू-धर्म के मूलभूत सिद्धान्तों के अनुसार जीवन जीने से ही सम्भव है। अतः मुझे कलियुग के आदि गुरु से आदेश मिला है कि मेरा कार्य विशेष रूप से पश्चिमी जगत को चेतन करने का है। इसी आदेश के कारण अब मैं प्राथमिक रूप से पश्चिमी जगत में ही कार्य करना चाहता हूँ।

21वीं सदी मानव जाति के पूर्ण विकास का समय है और पूर्ण विकास की क्रियात्मक विधि केवल भारत ही जानता है। अतः अब भारत का कार्य प्रारम्भ होता है।

रामलाल
19/9/97
जोधपुर

पु. —> जो "परमहंस पद" प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिए रजोगुण की प्राप्ति ही परमकल्याण-प्रद है। बिना रजोगुण के क्या कोई सत्त्वगुण प्राप्त कर सकता है। बिना भोग का अन्त हुए, योग (मिलन) हो ही कैसे सकता है? बिना वैराग्य के त्याग कहाँ से आवेगा।

" स्वामी श्री विवेकानन्द जी "

"रत्ति भर की हेरा फेरी भी सम्भव नहीं।"

इस आध्यात्मिक जीवन का क्षेत्र तो सारे विश्व का मैदान है। भौतिक जीवन की तरह ही इस जीवन में भी विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करना ही पड़ा, यह स्पष्ट नजर आ रहा है। "केवल ईश्वर के सहारे नितान्त अकेले ही इस पूरे संसार के मैदान में बिलकुल विपरीत और विषम परिस्थितियों में संघर्ष करने के लिए झोंक दिया गया हूँ।" अर्जुन की तरह सभी रास्ते अवरुद्ध कर दिये गये हैं। मात्र एक ही संघर्ष का रास्ता खुला छोड़ा गया है, मुझे अकेले ही संसार भर की आसुरी वृत्तियों से जूझना पड़ेगा, यह देख कर कभी-कभी भारी निराशा का अनुभव करता हूँ। परन्तु जब पीछे के जीवन पर नजर डालता हूँ कि किस प्रकार नितान्त अकेला ही विपरीत विषम परिस्थितियों को परास्त करता हुआ, यहाँ तक आ पहुँचा हूँ तो कुछ हिम्मत बन्धती है।

इसके अलावा दूसरा सहारा उस अदृश्य असीम सत्ता का है, जिसने पहले ही मेरे जीवन के अन्तिम सांस तक के पूरे जीवन के दृश्य, टुकड़ों में सिनेमा के ट्रेलर की तरह दिखा रखे हैं। और आज भी वह पूर्ण सत्ता, पग-पग पर मेरा पथ प्रदर्शन कर रही है। "मुझे प्रमाण सहित यह बता दिया गया है कि जो कुछ करना है, वह पूर्व निर्धारित व्यवस्था है, उसमें रत्ति भर की हेरा फेरी भी सम्भव नहीं।"

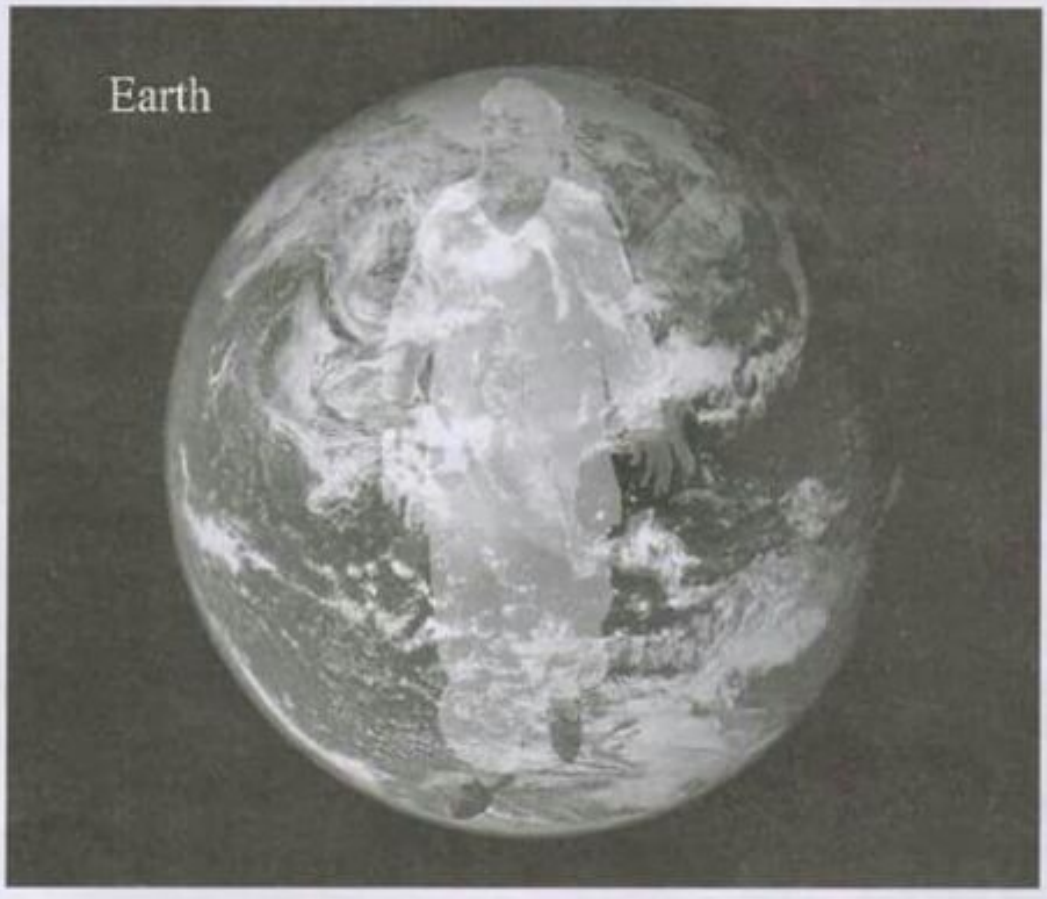

आश्रमः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org

"मेरी तस्वीर नहीं मरेगी, जब तक ये दुनिया रहेगी"

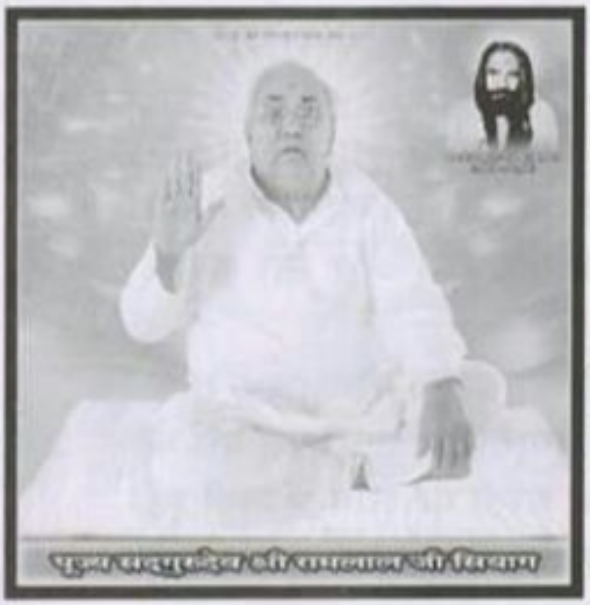

"एड्स क्योरेबल के 50 हजार पोस्टर लगा दिये। भारत सरकार को मालुम है, अच्छी तरह से। बीकानेर में मेरे पर मैजिक एक्ट की एफ आई आर करवा दी कि मैं मैजिक करता हूँ। मैंने कहा हाँ मैजिक करता हूँ, पर मैजिक तो दो तरह के होते हैं- White (सफेद) और Black(काला)। Black क्या कर रहा है, उसकी ही आपको जानकारी है, मुझे Black Magician (ब्लैक मैजिशियन) क्यों मान लिया। मैं जो दे रहा हूँ, उससे कई बीमारियाँ खत्म हो रही हैं, शांति मिल रही है, सब रोगों से मुक्त हो रहे हैं, नशों से मुक्त हो रहे हैं तो अब वो बोलते नहीं हैं, अब चुप हो गये। कहते हैं कि 81 वर्ष का तो हो गया। साल दो साल और जियेगा, मर जाएगा, पीछा छूट जाएगा। मैंने कहा मरना तो तुमको भी पड़ेगा, मुझको भी पड़ेगा। मगर मेरी तस्वीर नहीं मरेगी। मेरी तस्वीर से जो योग हो रहा है, वो नहीं मरेगी, कभी नहीं मरेगी। जब तक ये दुनिया रहेगी। ये परिवर्तन मुझमें आ गया Innocent way (सहज रूप) में आ गया। 1969 में गायत्री (निर्गुण निराकार) की सिद्धि हुई और 1984 में कृष्ण (सगुण साकार) की सिद्धि हो गई।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

ये हैं Black Magic & White Magic के प्रभाव-

काला जादू जहाँ दुनिया में कुछ चमत्कार दिखाकर, ठगने, हिंसा और पतन की ओर ले जाता है। उसका अंत बुरा ही होता है। पहले तो कुछ भला करने का प्रलोभन दिया जाता है; लेकिन आखिर में परिणाम बुरा ही निकलता है। इसकी जानकारी सारी दुनिया को है।

लेकिन एक White Magic भी होता है जिसकी जानकारी दुनिया को नहीं है, जो मनुष्य को सब कष्टों, आडम्बरों व नशों से मुक्त करके-मनुष्यत्व से देवत्व और अतिमानत्व की ओर ले जाता है। मनुष्य स्वयं परमात्मा है, इस निज स्वरूप का ज्ञान करा देता है। यदि सफेद जादू (White Magic) का करिश्मा देखना चाहते हो तो सद्गुरुदेव द्वारा दिये जाने वाले संजीवनी मंत्र का सघन जप व उनकी तस्वीर का ध्यान करके देखो !

आश्रम:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org

'गुरु'?

'Guru'--Omnipresent, Omnipotent & Omnicient

(सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान व सर्वज्ञ)

"हमारे विज्ञान में Time & Space (समय और जगह) की कोई Value (मूल्य) नहीं है। आप मेरे में हो और मैं आप में हूँ। आप जहाँ याद करोगे, मैं वहाँ Present (उपस्थित) रहूँगा। 'गुरु' अगर वास्तव में 'गुरु' है तो Omnipresent (सर्वव्यापक) है।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

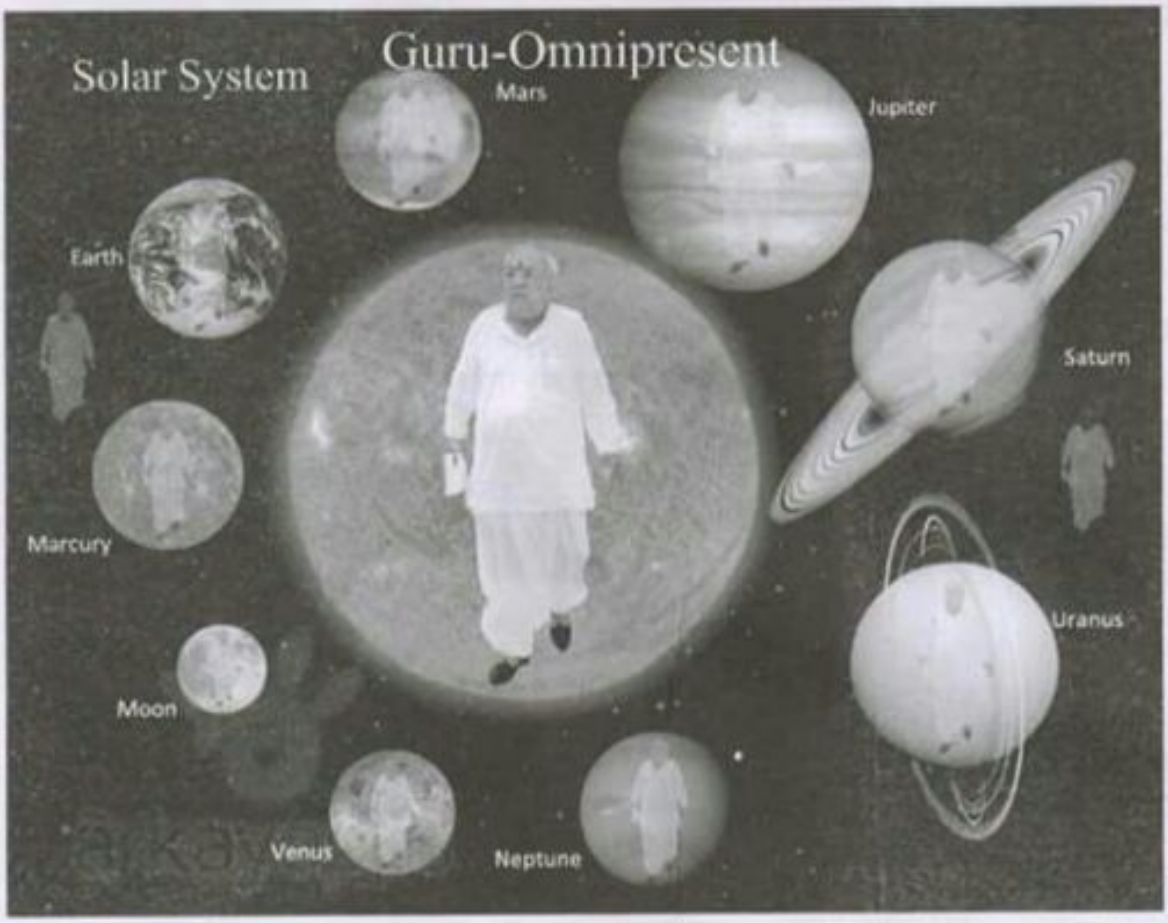

आश्रम:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org

'गुरु' ?

"हमारी **'एकाग्रता'** द्वारा सभी क्षमताएँ जाग सकती हैं। अपनी अभीप्सा द्वारा हम उन्हें पा सकते हैं, अपने **'समर्पण'** द्वारा हम उन्हें आत्मसात् कर सकते हैं। तुम जो कुछ चाहते हो, **'गुरु'** में **'भगवान्'** का वही पक्ष देखने की कोशिश करो और उसके प्रति खुलो।"

-महर्षि श्री अरविन्द

"योग"-वेदरूपी कल्पतरू का अमर फल है

"आज हम 'योग' का जो ढोल पीट रहे हैं, उसका उस योग से कोई संबंध नहीं-जो वेदरूपी कल्पतरू का अमर-फल है। हमारे योगियों ने जिस योग की महिमा की है, वह मानव के त्रिविध ताप-आदि-भौतिक, आदि-दैहिक व आदि-दैविक(Physical, Mental & Spiritual) का शमन करने के साथ-साथ कैवल्यपद अर्थात् मोक्ष देता है। इस समय हम शारीरिक कसरत को ही योग कह रहे हैं।

पातंजलि योगदर्शन में जिस क्रियात्मक ढंग से त्रिविध तापों का शमन करते हुए, संपूर्ण ज्ञान-विज्ञान की पूर्ण जानकारी प्राप्त करते हुए, कैवल्य पद प्राप्त करने का वर्णन है वही वेदरूपी कल्पतरू का अमर फल अर्थात् सिद्धयोग (पूर्णयोग) है"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
अध्यात्म विज्ञान और भौतिक विज्ञान शीर्षक से

वसुधैव कुटुम्बकम्

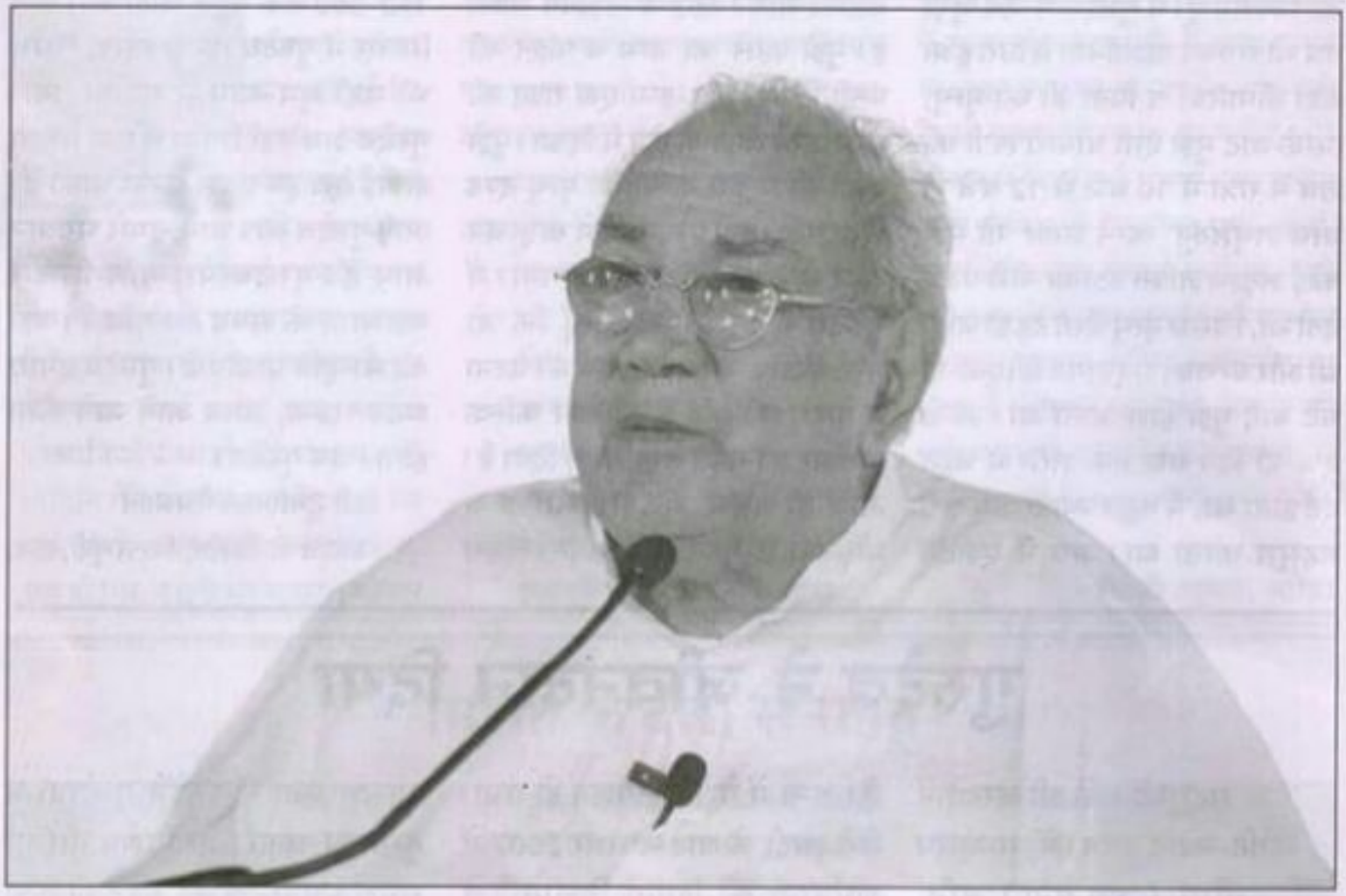

''सच्चे अर्थों में आध्यात्मिक और भौतिक जीवन एक दूसरे से भिन्न और विरोधी है ही नहीं। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। आध्यात्मिक चेतना की ही देन है-भौतिक विज्ञान। इस प्रकार जब भौतिक चेतना अपनी जननी आध्यात्मिक चेतना के आदेश पर चलने लगेगी, उस समय धरा पर स्वर्ग उतर आवेगा। ऐसी स्थिति में हमारे आदि सनातन धर्म का 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सपना साकार होगा।''

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

! ! मुक्तिदाता सद्गुरुदेव ! !

"योग"

"हमारे देश में समय-समय पर रहस्यवादी संत प्रकट होते ही रहे हैं-श्री नानकदेव जी, कबीरदास जी, रैदासजी व श्री रामकृष्ण परमहंस आदि अनेक रहस्यवादी संत हो चुके हैं। मैं भी एक ऐसे ही रहस्यवादी संत का शिष्य हूँ।

मेरे मुक्तिदाता ब्रह्मनिष्ठ संत सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी भी ऐसे ही अद्वितीय रहस्यवादी संत थे। मेरे संत सद्गुरुदेव की असीम अहैतु की कृपा के कारण ही, मेरे माध्यम से संसार के लोगों में अभूतपूर्व, अद्भुत परिवर्तन आ रहा है।

मैं मेरे सद्गुरुदेव के आदेशानुसार सनातन धर्म का शुभ संदेश, संपूर्ण विश्व के सकारात्मक लोगों तक पहुँचाने ही निकला हूँ। मैं मानव मात्र को 'योग' का प्रसाद बाँटने ही संसार में निकला हूँ। योगदर्शन; और दर्शनों की तरह किसी प्रकार का खण्डन-मण्डन नहीं करता है। यह तो मनुष्य शरीर की रचना की सच्चाई पर आधारित दिव्य ज्ञान है। यह तो मानव मात्र को सम्पूर्ण रोगों से मुक्त होने की क्रियात्मक विधि बतलाकर 'मोक्ष' प्रदान करता है।"

-सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

"क्षण भर में सम्भव"

मैंने एक बार एक दृश्य देखा। मैं किसी सागर को पार करके उसके किनारे पहुँचा। उस सागर में बहुत ऊँची-ऊँची लहरें उठ रही थी। परन्तु उससे बाहर निकलने के लिए जिन चट्टानों पर चढ़ना था, वह इतनी ऊँची थी कि मेरे हाथ की पकड़ से बाहर थी। अचानक क्या देखता हूँ कि एक बहुत ही बलिष्ट व्यक्ति ठीक मेरे ऊपर वाली चट्टान पर आकर खड़ा हो गया और झुक कर अपना दाहिना हाथ मेरी तरफ नीचे की ओर बढ़ा दिया। मैंने उसका दाहिना हाथ मेरे दाहिने हाथ से पकड़ लिया और उसके सहारे झूलने लगा। मैंने सोचा वह मुझे खींच कर निकाल लेगा, परन्तु उसने एक इंच भी मुझे ऊपर नहीं खींचा, परन्तु मेरा हाथ मजबूती से पकड़े रहा, छोड़ा नहीं। मैं बहुत परेशान हुआ, सोचा क्या किया जाय। फिर मैंने मेरे दाहिने हाथ की ताकत के सहारे मेरे शरीर को संभाला और मेरे बांये पैर को ऊपर किनारे की तरफ बढ़ाया। संयोग से मेरे बांए पैर का अंगुठा ऊपर की चट्टान के ऊपर टिक गया और उस पर शरीर का वजन संभालते हुए दाहिने हाथ की शक्ति से शरीर को ऊपर ढ़केलते हुए बाहर आ गया।

पहले मुझे बिलकुल भी उम्मीद नहीं थी कि मुझे बाहर निकलने में सफलता मिल जायेगी क्योंकि ऊपर खड़ा **अतिबलिष्ट** व्यक्ति मुझे बाहर बिलकुल नहीं खींच रहा था।

अतः जब मैं बाहर निकल कर उसके दाहिनी तरफ खड़ा हो गया तो मुझे भारी प्रसन्नता हुई। इसके तत्काल बाद वह दृश्य खत्म हो गया। और सभी बातें बाइबल से मिल कर वैसे ही सही प्रमाणित हो रही हैं, जैसा उसमें लिखा है। एक दिन ऊपर के दृश्य की बात याद आ गई और सोचा उक्त दृश्य का अर्थ आज तक समझ में नहीं आया। इस पर मुझे **प्रेरितों के काम के 2 : 33** के देखने की प्रेरणा मिली। उसे पढ़कर मुझे भारी अचम्भा हुआ। *सोचा परमात्मा किस प्रकार जीवन में होने वाली घटनाओं को निश्चित समय पर, अपने द्वारा निश्चित किये हुए तरीके से समझा रहा है।* **"मानवीय बुद्धि जिस बात की कभी कल्पना भी नहीं कर सकती, ईश्वर क्षण भर में उसे सम्भव करके कार्य रूप में परिणित कर देता है।"**

मुझे भारी अचम्भा हो रहा है। एक बार मैंने ईश्वर से प्रार्थना की थी कि मुझ जैसे साधारण व्यक्ति से ये असम्भव कार्य क्यों करवा रहे हैं? कृपया किसी योग्य और उपयुक्त व्यक्ति को यह कार्य सौपें। जिसकी संसार में **प्रतिष्ठा** और **सामाजिक** मान्यता हो, इस पर मुझे उत्तर मिला कि यह सब तुझे ही करना है, और किसी को नहीं सौंपा जा सकता।"

अतः अदृश्य सत्ता के इशारे पर संसार में निकल पड़ा हूँ। मुझे न सफलता से **खुशी** होती है न असफलता से **दुःख** क्योंकि मैं तो उस सत्ता का दास हूँ, केवल मजदूरी का अधिकारी हूँ, घाटे-नफे से मुझे कोई वास्ता नहीं।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

8.9.1988

सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी

"ज्ञान प्राप्ति में निष्कपटता"

इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए विश्व को, भारत को धर्म गुरु स्वीकार करना ही पड़ेगा। भौतिक ज्ञान की कीमत भौतिक धन है। अध्यात्म ज्ञान को भौतिक धन से न कभी खरीदा जा सका है और न ही कभी खरीदा जा सकेगा। उसके लिए तो आध्यात्मिक संत के सामने पूर्ण समर्पण ही करना पड़ेगा। तन, मन व धन से, निष्कपट भाव से उनकी सेवा करनी पड़ेगी। उस **परम आत्मा सद्गुरुदेव के दिल से प्रसन्न** होने पर ही यह ज्ञान मिलता है, अन्यथा नहीं।

भगवान् श्री कृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय के 34 वें श्लोक में कहा है-

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ने ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिन।। 4:34।।

"इसलिए तत्त्व को जानने वाले ज्ञानी पुरुषों से-"भली प्रकार दण्डवत प्रणाम (तथा) सेवा और निष्कपट भाव से किये हुए प्रश्न द्वारा उस ज्ञान को जानकर वे मर्म को जानने वाले ज्ञानी जन (तुझे उस) ज्ञान का उपदेश करेंगे। "

मनुष्य योनि ईश्वर की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। मनुष्य योनि में ईश्वर के तद्रूप बना जा सकता है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी

"पूर्व निश्चित व्यवस्था"

"मैं संकोचवश संसार के सामने प्रकट होने में कुछ झिझक रहा था। परन्तु उस परमसत्ता ने भौतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से मुझे अपनी इच्छानुसार चलाने के लिए मजबूर कर दिया। सारे रास्ते बंद करके, एक ही रास्ता खुला रखा जिस पर मुझे चलाना चाहती हैं।

मैंने प्रार्थना की, हे प्रभु ! संसार के लोग स्वांग रचे बिना मानने वाले नहीं हैं। मैं गृहस्थी जीवन से अभी निवृत्त भी नहीं हो सका हूँ। अतः संन्यास धारण करने की हालत में नहीं हूँ और इस युग के लोग स्वांग के बिना मुझे स्वीकार नहीं करेंगे।

इस पर मुझे स्पष्ट दिखाया गया कि **"देख मैंने तेरा मन और तन सारा रंग दिया है, बनावटी स्वांग की तुझे जरूरत नहीं है। कर्ता तो मैं हूँ परन्तु माध्यम तो तुझे ही बनना पड़ेगा।"** मैंने तुझे प्रारम्भ से अंत तक सब कुछ दिखा और सिखा दिया है, फिर झिझक कैसी ? मुझे स्पष्ट आदेश है कि जो कुछ होना है, सभी पूर्व निश्चित हैं। सारे माध्यम तुझे स्वयं निश्चित समय पर निरन्तर मिलते जाएंगे। इस प्रकार मुझे भौतिक संसार के सामने स्वयं प्रकट होना ही पड़ेगा।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

संदर्भ-बड़ी सिद्धयोग पुस्तक पृष्ठ-47

जीते-जागते अखबार

सत्य कभी दबता नहीं है। भगवान् के घर देर है, अन्धेर नहीं। गुरुदेव के प्रिन्ट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया हैं-गुरुदेव के शिष्य, जो इस दर्शन के प्रसार-प्रचार में लगे हुए हैं। एक बार गुरुदेव ने कहा था कि-

"मेरे शिष्य ही मेरे जीते जागते अखबार है, जो वर्षों तक मेरा प्रसार करेंगे-कोई पचास साल, साठ साल, सौ साल तक। दूसरे अखबार तो बारह बजे बाद रद्दी की टोकरी में चले जाते हैं।"

अतः आप समस्त साधक गुरु भाई बहनों से विनम्र अपील है कि अपने इस जीते जागते अखबार में वे बातें ही छापें जो सद्गुरुदेव भगवान् ने अपने श्री मुख से कही हैं। उन्होंने जो दर्शन विश्व को दिया है। इस मिशन के जो सिद्धांत हैं उसी के तहत ही प्रचार कार्य करें। अपनी बुद्धि के प्रयास से कुछ जोड़ने या घटाने की जरूरत नहीं है। एक सच्चा यंत्र बनकर, एक पोस्टमैन बनकर गुरुदेव की डाक को जनमानस तक निस्वार्थ और निष्कपट भाव से पहुँचानी है। गुरुदेव द्वारा स्थापित मिशन की मर्यादाओं का पूर्ण ध्यान रखें।

-संपादक

सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी

"सद्गुरु कृपा से क्षणभर में परिवर्तन"

"लोग जिस कार्य को कई जन्मों में होना असंभव बताते हैं, गुरु कृपा से वह परिवर्तन क्षणभर में हो जाता है। मैंने इस प्रकार के परिवर्तन प्रत्यक्ष होते देखे हैं। मुझे परमसत्ता ने स्पष्ट बताया है कि जिस प्रकार चावल की हांडी में से एक चावल का दाना लेकर देखने से सभी चावलों के पकने का ज्ञान हो जाता है, उसी प्रकार सभी समर्पित लोगों के अंगीकार और न्याय की प्रार्थना का, एक जैसा प्रभाव होता है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

''संजीव और चेतन शक्ति ही संसार का भला कर सकती है''

''जिस व्यक्ति में ईश्वर कृपा से और गुरु के आशीर्वाद से वह आध्यात्मिक प्रकाश प्रकट हो जाता है, ऐसा व्यक्ति सारे संसार को चेतन करने में सक्षम होता है। ईश्वर कभी जन्म नहीं लेता है, ऐसे चेतन व्यक्ति के माध्यम से अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है। इस प्रकार के संत सद्गुरु के प्रकट होने पर संसार का अंधकार दूर होने में कोई समय नहीं लगता। केवल सजीव और चेतन शक्ति ही संसार का भला कर सकती है। ईश्वर के धाम का रास्ता मनुष्य शरीर में से होकर ही जाता है। हमारे सभी संत कह गए हैं कि जो ब्रह्माण्ड में है, वही सब पिण्ड में है। अतः अन्तर्मुखी हुए बिना उस परमसत्ता से संपर्क या साक्षात्कार असंभव है।''

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

संदर्भ-सिद्धयोग बड़ी पुस्तक-पृष्ठ-154 'आखिर हमें गुरु की आवश्यकता क्यों है?' शीर्षक से

''असंख्य गुरुओं का संचित धन-
''नाम खुमारी''

''एक बात से मैं आस्वस्त हूँ कि आज भी पग-पग पर मुझे गुरुदेव पथ प्रदर्शित करते हैं। गुरु कृपा से मेरे साथ आध्यात्मिक संबंध जोड़ने वाले लोगों को 'नाम-खुमारी' और 'नाम-अमल' का आनंद आने लगता है। मुझमें कुछ भी शक्ति नहीं है। यह गुरुदेव के आशीर्वाद और ईश्वर कृपा से हो रहा है।

मुझे इस संबंध में कोई भ्रम नहीं है। मैं अच्छी प्रकार समझ रहा हूँ कि यह शक्ति असंख्य गुरुओं द्वारा संचित की हुई है, जो कि अनायास ही मुझे गुरुदेव द्वारा वसीयत में मिल गई। गुरु कृपा की महिमा करने को न मेरे पास भाव है, और न ही शब्द।''

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

संदर्भ-सिद्धयोग बड़ी पुस्तक-पृष्ठ-94 'संसार का हर प्राणी ईश्वर कृपा का अधिकारी है' शीर्षक से

''इस नाम को जपोगे और मेरा ध्यान करोगे तो जो माँगोगे वही मिलेगा''

-सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

किसी साधक ने पूछा-''गुरुदेव अभी आप सशरीर हैं, हम आपसे अपनी समस्याओं पर प्रश्न पूछ सकते हैं, अपनी शंकाओं के समाधान के लिए बात कर सकते हैं, आपके शरीर छोड़ने के बाद, हमारी शंकाओं का समाधान कैसे होगा?

गुरुदेव ने जवाब दिया-''देखो, मैं कल्कि अवतार हूँ, मेरी तस्वीर से ध्यान लगता है। मेरे जाने के बाद ''मेरी तस्वीर'' तो नहीं मरेगी? वह आपको जवाब देगी!''

जून 2012

इससे साफ जाहिर होता है कि गुरुदेव से दीक्षित शिष्य को केवल और केवल, गुरुदेव के प्रति ही एकनिष्ठता रखनी चाहिए। यही शिष्य के लिए कल्याणकारी है।

"विश्व गुरु भारत"

"मनुष्य जाति में जब तक ये तीनों कोश चेतन नहीं होंगे (सत्-चित्-आनंद -सच्चिदानंद), शांति नहीं हो सकती।"

इसका दान तो हमेशा से भारत ही करता आया है और अभी भी करेगा। ये समय ऐसा आ रहा है कि भारत वापस विश्व गुरु बनेगा। अपनी Golden Age (स्वर्णमय युग) में जाएगा।

आज का मानव युग परिवर्तन के संधिकाल में जी रहा है-महर्षि अरविन्द ने कहा है कि "Iron Age Is Ended" अर्थात् कलियुग खात्म हो चुका है, मगर बोलवाला अभी भी कलियुग का ही है, लेकिन ऐसा विस्फोट होगा कि 'दुनिया चकाचौंध' रह जाएगी कि ये क्या हो गया?"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
संस्थापक और संरक्षक
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) भारत
Web:www.the-comforter.org

❖❖❖

''तस्वीर''

''आप लोग इस देश में नहीं, दुनिया में कहा कि इस व्यक्ति की तस्वीर के ध्यान से एड्स, कैसर, हेपेटाइटिस बी आदि मिट रहे हैं। अब मेरी आवाज तो चली गई आकाश में, अब इसको कोई रोक नहीं सकता और इसकी ''तस्वीर'' नहीं मरेगी।''

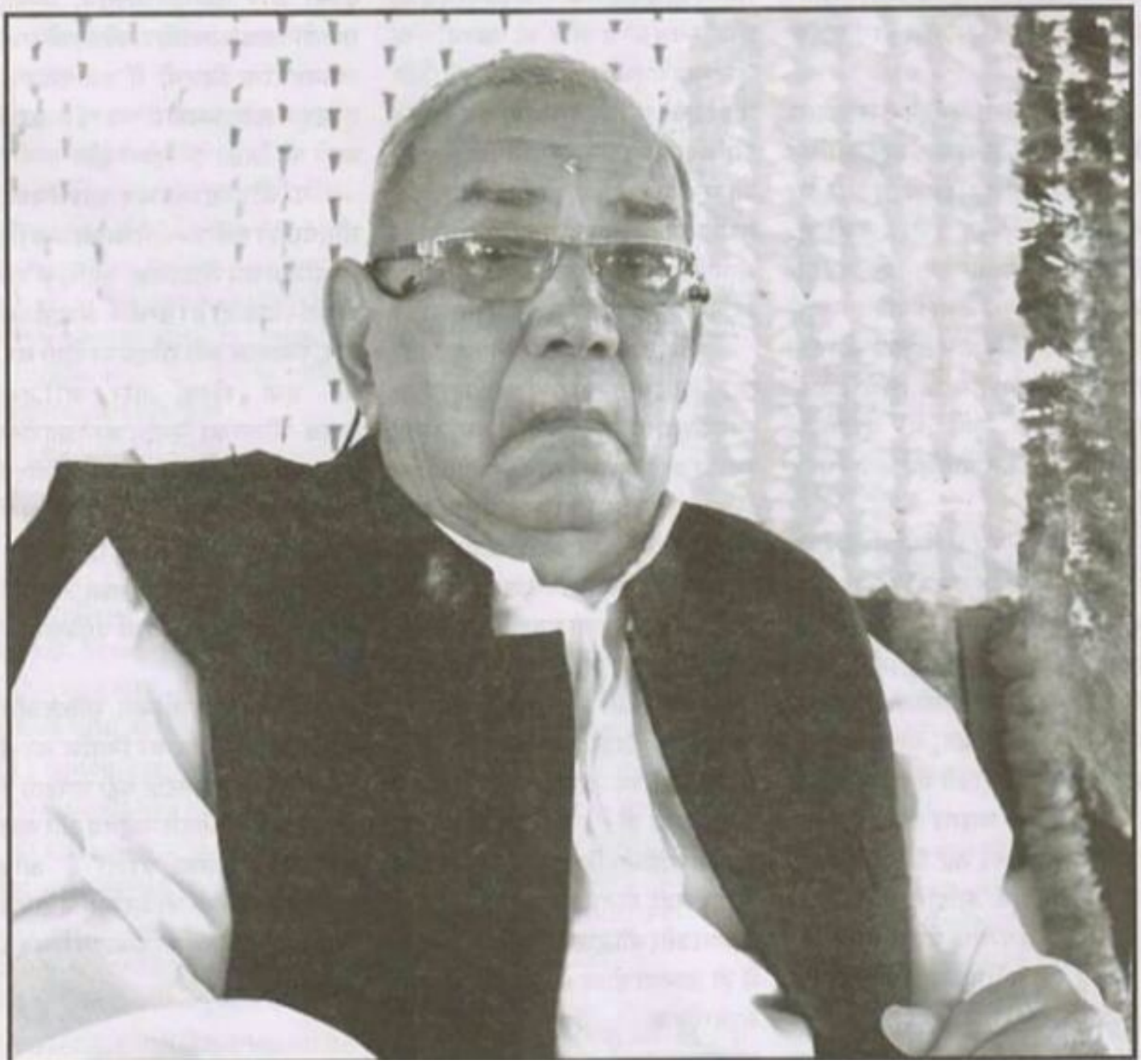

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से.....

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

बुद्ध के अंतिम शब्द

अपने निर्वाण के लिए स्वयं साधना करो। मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता। तुम्हारी सहायता कोई नहीं कर सकता। अपनी सहायता अपने आप करो।

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

श्रीरामकृष्ण परमहंस को कैंसर क्यों?

एक शिष्य ने श्री अरविन्द से प्रश्न किया-"कहा जाता है कि श्री रामकृष्ण परमहंस को **कैंसर अपने शिष्यों के पाप के कारण हुआ?**"

श्री अरविन्द- हाँ यह बात उन्होंने स्वयं कही थी, और उनकी बात ठीक ही होनी चाहिए। तुम्हें पता है, उन्होंने इस बात के पक्ष और विपक्ष में युक्तियाँ दी थी कि गुरु को शिष्यों की बहुत सी चीजें अपने ऊपर लेनी पड़ती हैं।

एक प्रसिद्ध योगी ने अपने एक शिष्य से, जब वह 'गुरु' बनने लगा तब कहा था, **"अब तुम अपनी कठिनाइयों के अतिरिक्त औरों की कठिनाइयाँ भी अपने ऊपर ले रहे हो।"**

हाँ अगर गुरु चाहे तो शिष्यों से अपना संबंध काट सकता है। तब गुरु को ऐसी कोई कठिनाई नहीं आयेगी, लेकिन साथ ही उसका मतलब होगा कि काम आगे नहीं बढ़ेगा और साधक अपनी किस्मत पर बिना किसी सहारे के छोड़ दिये जायेंगे।

-श्री अरविन्द

स्वामी श्री विवेकानंद जी ने कहा है-

जगत् का नियम है-"आदान और प्रदान"। इस नियम को जो लोग, जो जाति, जो देश नहीं मानेगा, उसका कल्याण नहीं होगा। हम लोगों को भी उस नियम का पालन करना चाहिए। इसलिए मैं अमेरिका गया था। उन लोगों को भीतर इस समय अधिक मात्रा में धर्म-पिपासा है कि मेरे जैसे लोग यदि हजारों की संख्या में भी वहाँ जायेंगे तो भी उन्हें स्थान मिलेगा। वे बहुत दिनों से तुम लोगों को धन-रत्न दे रहे हैं। तुम लोग अब उन्हें अमूल्य-रत्न दो। तुम देखोगे, घृणा के स्थान में **'श्रद्धा-भक्ति'** मिलेगी और तुम्हारे देश का वे स्वयं ही उपकार करेंगे। वे वीर जाति है, उपकार नहीं भूलते।

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग की लेखनी से.....

"गुरु" ?

"गुरु-निर्गुण निराकार ईश्वर के सगुण साकार रूप होते हैं।"

"जो परिवर्तन मुझमें आया, वो मानव मात्र में आयेगा। 'मनुष्य', मनुष्य है और मैंने लाखों को यह परिवर्तन मूर्तरूप से करवाकर बता दिया। 'गुरु' में गुरुत्वाकर्षण होता है इसलिए गुरु का यहाँ (आज्ञाचक्र) पर ध्यान कराया जाता है। अगर गुरु में गुरुत्त्वाकर्षण है तो मन रुक जाएगा और नहीं तो प्रोफेशनल (व्यावसायिक) है तो जीवन भर आँख बन्द किये बैठे रहो, गुरु को भेंट चढ़ाते रहो, कुछ नहीं होना। मैं तो कह देता हूँ, दूसरा गुरु बदलो। बहुत से गुरु रोक लगाते हैं -इस बात का मुझे यहाँ आकर पता लगा। दूसरा गुरु धारण किया तो पता नहीं क्या हो जाएगा ? नरक में चला जाएगा, द्रोह हो जाएगा। मैं तो मेरे शिष्यों को कह देता हूँ कि सौ गुरु और बना लो, मुझे कोई परेशानी नहीं ! दो विद्या हैं - परा और अपरा। अपरा विद्या में पहली क्लास से एम. ए. तक कितने गुरु बदलते हो ? यह परा विद्या (पेरासाईकोलॉजी) है। इसमें भी गुरुओं की स्टेजेज (अवस्थाएँ) अलग-अलग होती हैं। रोक लगाने वाली बात मेरी समझ में नहीं आती। मैं नहीं लगाता रोक। मैं तो कहता हूँ-सौ गुरु और बना लो मुझे कोई परेशानी नहीं। दत्तात्रेय जी ने कितने गुरु बनाए थे ?

इस प्रकार यहाँ (आज्ञाचक्र) पर गुरु का ध्यान किया जाता है। नाम जप चल रहा है। इससे आगे आपकी ड्यूटी खत्म। अब बताने वाले में, जो बताया है, अगर उसमें सच्चाई है तो आगे का काम शुरु हो जाएगा और नहीं तो जीवन भर आँख बन्द किये बैठे रहो, कुछ नहीं होना।

- समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

अमृतवाणी

प्रिय शिष्य

"मुझे तो वही शिष्य प्रिय है,
जो नाम जप करता है,
चेतन है।
सातों कोश चेतन हो जाएंगे,
मेरे गुरु की कृपा से।"

- पूज्य सद्गुरुदेव श्री सियाग -

शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम
22 अक्टूबर, 2009

परम इच्छा

यदि तुम दिव्य कर्मों के सच्चे कर्ता बनना चाहते हो तो तुम्हारा पहला लक्ष्य यह होना चाहिये कि तुम सारी कामनाओं से और अपने आपको ही सर्वस्व मानने वाले अहंकार से, सर्वथा मुक्त हो जाओ। तुम्हारा समस्त जीवन भगवान् के प्रति अर्पण और उनके लिये यज्ञ हो। कर्म में तुम्हारा एकमात्र लक्ष्य हो भगवती शक्ति की सेवा करना, उनका स्वागत करना, परिपूर्ण करना, उनको प्रकट करने वाला यंत्र बनना। तुम्हें भागवत चेतना में तब तक विकसित होते जाना है जब तक तुम्हारी इच्छा और उनकी इच्छा में भेद न रह जाये, तुम्हारे अंदर उनकी प्रेरणा के अतिरिक्त और प्रेरक हेतु न रहे, कोई कर्म ऐसा न हो जो तुम्हारे अंदर और तुम्हारे द्वारा होने वाला उन्हीं का सचेतन कर्म न हो।

- श्री अरविंद

ॐ श्री साँगाई नाथाय नमः

अमृतवाणी

योग का उद्देश्य

जिस योग की साधना हम करते हैं 'वह केवल हमारे लिये ही नहीं प्रत्युत भगवान् के लिये है; उसका उद्देश्य है इस जगत् में भगवान् की इच्छा को कार्यान्वित करना; एक आध्यात्मिक रूपांतर साधित करना और मनुष्य जाति के मनोमय, प्राणमय और अन्नमय प्रकृति और जीवन के अंदर दिव्य प्रकृति और दिव्य जीवन को उतार लाना। उसका उद्देश्य व्यक्तिगत मुक्ति नहीं है, यद्यपि मुक्ति योग की एक आवश्यक अवस्था है, बल्कि उसका उद्देश्य है मानव सत्ता की मुक्ति और रूपांतर सिद्ध करना। हमारा उद्देश्य व्यक्तिगत रूप से आनंद पाना नहीं है, बल्कि हमारा उद्देश्य है दिव्य आनंद को.....ईसा के स्वर्गीय राज्य को, हमारे सत्य युग को.... पृथ्वी पर उतार लाना। मोक्ष की हमें व्यक्तिगत रूप से कोई आवश्यकता नहीं; कारण आत्मा तो नित्य-मुक्त है और बंधन केवल भ्रम है। हम तो बद्ध होने का अभिनय मात्र करते हैं, वास्तव में हम बद्ध नहीं हैं। जिस समय भगवान् की इच्छा होगी, उसी समय हम मुक्त हो सकते हैं, क्योंकि वह, हमारे परम आत्मा ही, इस लीला के अधीश्वर हैं और उनकी कृपा और आज्ञा के बिना कोई आत्मा इस लीला से अलग नहीं हो सकती। बहुधा हमारे अंदर यह भगवान् की ही इच्छा होती है कि मन के द्वारा अज्ञान का, द्वंद्वों का, हर्ष और शोक का, सुख और दुःख का, पुण्य और पाप का, भोग और त्याग का रसास्वादन किया जाय। बहुत दीर्घ काल तक, बहुत से देशों में तो वह योग का कभी विचार तक नहीं करते, बल्कि इसी लीला को शताब्दियों खेला करते हैं और इससे जरा भी नहीं थकते। इसमें कोई बुराई नहीं, ऐसी कोई बात नहीं जिसे हम दोष दें या जिससे मुँह मोड़ें.....यह तो भगवान् की लीला है। वही मनुष्य बुद्धिमान है जो इस सत्य को स्वीकार करता और अपनी स्वतंत्रता को जानते हुए भी भगवान् की इस लीला में भाग लेता है और इस लीला की पद्धति में परिवर्तन करने के लिये उनके आदेश की प्रतीक्षा करता है।

महर्षि श्री अरविंद

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

अमृतवाणी

भगवान् ही साधक और साधना है

जगत् में जो कुछ भी होता है उसमें भगवान् अपनी शक्ति का आश्रय किये हुए, प्रत्येक कार्य के पीछे रहते हैं, पर यह उनका योगमाया से समावृत रहना है और इस अपरा प्रकृति में उनका जो कर्म होता है वह जीव के अहंकार के द्वारा होता है।

योग में भी भगवान् ही साधक और साधना भी है : ये उन्हीं की शक्ति हैं जो अपनी ज्योति, सामर्थ्य, ज्ञान, चैतन्य और आनंद से आधार (मन, प्राण, शरीर) के ऊपर अपना कर्म किये चलती हैं और जब यह आधार उनकी ओर उद्घाटित होता है तब से ही अपनी इन दिव्य शक्तियों को उसमें भर देती हैं जिनसे साधना हो जाती है। परन्तु जब तक निम्न प्रकृति सक्रिय है तब तक साधक के वैयक्तिक प्रयत्न की आवश्यकता रहती ही है।

यह वैयक्तिक प्रयत्न अभीप्सा, त्याग और समर्पण से युक्त त्रिविध अभ्यास है। **- श्री अरविन्द**

पार्थिव-अनुभूति

अतीत की परंपराएँ अतीत में अपनी जगह बहुत महान् रही हैं पर मैं नहीं समझता कि क्यों हम केवल उन्हीं को दोहराते जायें तथा और आगे न जायें। पृथ्वी पर चेतना के आध्यात्मिक विकास में महान अतीत का अनुसरण एक महान् भविष्य को करना चाहिए।

मेरा संबंध पृथ्वी से है, न कि उसके परे के लोगों से, उन्हीं की खातिर; मैं एक पार्थिव अनुभूति चाहता हूँ न कि सुदूर शिखिरों की ओर उड़ान।

भारत सभी राष्ट्रों का गुरु है, मानव आत्मा का, उसके अधिक गंभीर रोगों में चिकित्सक; उसके भाग्य में एक बार फिर विश्व के जीवन को नये साँचे में ढालना लिखा है।

- महर्षि श्री अरविन्द (भारत का पुनर्जन्म, 39)

दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण घटना

इस शाश्वत सत्य के हस्तक्षेप के कारण जगत् का रूपांतर प्रारम्भ हो चुका है। और जो लोग इस महानतम् सत्य के अवरोहण में तैर रहे हैं, के प्रमाण जुटाने की आवश्यकता नहीं है कि पृथ्वी के भाग्य जाग उठे हैं। ''अब समय आ गया है जब पृथ्वी से असत्य का राज्य समाप्त होगा।'' यह निरा आशावाद ही नहीं है वरन् स्वयं अतिमानस की घोषणा है। तो आईये पृथ्वी के नव-जागरण की वेला में इस सूर्य को नजदीक से देखें। **''दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण घटनाएँ सबसे कम कोलाहल पूर्ण होती है।''**

- श्री माताजी

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

अमृतवाणी

।। केवल मोहि एक आधारा, सतगुरु नाम सहारा ।।

चूंकि हमने प्रेम को उसी पूर्ण गरिमा के साथ अपने व्यक्तिगत सम्बन्धों के लिए सुरक्षित रखने का निर्णय लिया है, तब हम दूसरों के अपने सम्बन्धों में इस प्रेम के स्थान पर उनसे सर्वदा पूर्ण हार्दिकता, दृढ़ता एवं अभिमान रहित करुणा की भावना द्वारा उसकी पूर्ति करेंगे, और कभी भी उनसे बदले में किसी इनाम कृतज्ञता, यहां तक कि पहचान (Recognition) की भी अपेक्षा नहीं रखेंगे। चाहे जिस ढंग से दूसरे तुम्हारे साथ व्यवहार करें, तुम कभी किसी आक्रोश अथवा क्षोभ के द्वारा अपने को परिचालित नहीं होने दोगे और प्रभु के प्रति अपने शुद्ध निर्मल प्रेम में, सदा उन्हें ही अपना निर्णायक मानकर उन पर अपना सब कुछ छोड़ दोगे। वे चाहे जिस ढंग से दूसरों की गलत धारणाओं एवं दुर्भावनाओं से तुम्हारी रक्षा एवं बचाव करें।

तुम अपनी खुशी एवं प्रगति के लिये पूर्णतया केवल प्रभु पर निर्भर करोगे, उन्हीं की प्रतीक्षा करोगे और उन्हीं में अपनी सहायता एवं सहयोग ढूंढ़ोगे। वे ही प्रभु तुम्हें दुःख एवं पीड़ा में सांन्तवना देंगे, तुम्हारा मार्गदर्शन करेंगे। लड़खड़ाने पर तुम्हें संभालेंगे और यदि मूर्छित होकर या अतिश्रान्त होकर गिरने के क्षण आयें तो वे ही तुम्हें अपने प्रेम की सुदृढ़ बाहों में उठा लेंगे और शीतलता और मृदुलता से अपनी छाती से लगा लेंगे।

-श्री मां

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

अमृतवाणी

सनातन धर्म

भाईयों ! हिन्दुओं के धार्मिक विचारों की यही संक्षिप्त रूपरेखा है। हो सकता है कि हिन्दू अपनी सभी योजनाओं को कार्यान्वित करने में असफल रहा हो, पर यदि कभी कोई सार्वभौमिक धर्म होना है, तो वह किसी देश या काल से सीमा बद्ध नहीं होगा, वह उस असीम ईश्वर के सदृश ही असीम होगा, जिसका वह उपदेश देगा; जिसका सूर्य श्री कृष्ण और ईसा के अनुयायिओं पर, संतों पर और पापियों पर समान रूप से प्रकाश विकीर्ण करेगा, जो न तो ब्राह्मण होगा, न बौद्ध, न ईसाई और न इस्लाम, वरन् इन सबकी समष्टि होगा, किन्तु फिर भी जिसमें विकास के लिए अनंत अवकाश होगा; जो इतना उदार होगा कि पशुओं के स्तर से किंचित् उन्नत, निम्नतम घृर्णित जंगली मनुष्य से लेकर अपने हृदय और मस्तिष्क के गुणों के कारण मानवता से इतना ऊपर उठ गये उच्चतम मनुष्य तक को, जिसके प्रति सारा समाज श्रद्धानत हो जाता है और लोग जिसके मनुष्य होने में संदेह करते हैं, अपनी बाहुओं से आलिंगन कर सके और उनमें सबको स्थान दे सके। वह धर्म ऐसा होगा, जिसकी नीति में उत्पीड़ित या असहिष्णुता का स्थान नहीं होगा; वह प्रत्येक स्त्री और पुरूष में दिव्यता को स्वीकार करेगा और उसका संपूर्ण बल और सामर्थ्य मानवता को अपनी सच्ची दिव्य प्रकृति का साक्षात्कार करने के लिए सहायता देने में ही केन्द्रित होगा।

– स्वामी विवेकानन्द जी, 'हिन्दू धर्म पर निबंध' पुस्तक से पृष्ठ-20-21

सहन शक्ति की सीमा

किसी जंगल के निकट एक संत रहते थे। वह रोज पास से गुजरने वाले राहगीरों की सेवा करते और उसे स्नेहपूर्वक भोजन कराते थे। एक दिन किसी पथिक की प्रतीक्षा करते-करते शाम हो गई पर कोई नहीं आया। उस दिन नियम टूट जाने की आशंका में वह बड़े व्याकुल हो रहे थे कि अचानक उन्होंने देखा कि सौ साल का एक बूढ़ा थका-हारा चला आ रहा है। संत ने उसे रोककर हाथ-पैर धुलाए और भोजन परोसा। बूढ़े ने भगवान् को भोग लगाए बिना ही भोजन शुरू कर दिया। संत ने टोका तो बूढ़े ने कहा, 'मैं अग्नि को छोड़कर किसी देवता को नहीं मानता।' संत को क्रोध आ गया। उन्होंने बूढ़े के सामने से भोजन का थाल खींच लिया और उसे कुटिया से बाहर कर दिया।

रात में संत को स्वप्न आया। भगवान् कह रहे थे, 'बूढ़े के प्रति तुम्हारे व्यवहार ने अतिथि-सत्कार का तुम्हारा सारा पुण्य क्षीण कर दिया।' संत बोले, 'प्रभु, उसे तो मैंने इसलिए निकाला कि उसने आपका अपमान किया था।' प्रभु बोले, वह मेरा नित्य अपमान करता है तो भी मैंने उसे सौ साल तक सहा किंतु तुम एक दिन भी न सह सके।' भगवान् अंतर्धान हो गए और महात्मा जी की भी आँखें खुल गई।

ॐ श्री गंगाई नारायण नमः

अमृतवाणी

ध्यान

ध्यान ही महत्वपूर्ण बात है। ध्यान लगाओ। ध्यान सबसे बड़ी बात है। आध्यात्मिक जीवन की प्राप्ति के लिए ध्यान श्रेष्ठतम-निकटतम उपाय है। हमारे दैनिक जीवन में यही एक क्षण है, जब हम सांसारिकता से पृथक रह पाते हैं, इसी क्षण में आत्मा अपने आप में ही लीन रहती है, अन्य सब विचारों से मुक्त रहती है। यही है आत्मा का आश्चर्यजनक प्रभाव। -स्वामी विवेकानंदजी

सहायक या कल्कि अवतरण

"परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ, ताकि व्यवस्था के आधिनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हमको लेपालक होने का पद मिले। और तुम जो पुत्र हो इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को जो है अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है, हमारे हृदय में भेजा है। इसलिए तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है; और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ।" -मीरासा गला 4:4-7 (बाइबल)

आंतरिक प्रेरणा

हे दयालू मैं तेरे से सद्कार्य करने की करूण प्रार्थना करता हूँ। अब कर्म के लिए प्रेरणा बाहर से या किसी लोक-विशेष से नहीं आ सकती। तूं ही, हे प्रभो, सत्ता की गहराई से सभी चीजों को गतिशील करता है; तेरी इच्छा ही निर्देशन करती है, तेरी शक्ति ही कार्य करती है; और अब छोटी-सी व्यक्तिगत चेतना के सीमित क्षेत्र में नहीं बल्कि चेतना के वैश्व क्षेत्र में जो सत्ता की प्रत्येक अवस्था में समग्र के साथ युक्त है। और सत्ता को एक ही साथ अपनी जटिलताओं और अस्त-व्यस्तताओं में सभी वैश्व गतिविधियों का, तेरी परम निर्विकारता की नीरव और पूर्ण शांति का प्रत्यक्ष-दर्शन होता है। तू मुझे सम्पूर्ण रूप से तेरे कार्य में लगा दे। एक पलक भी, तेरे बिना न झपके। बस तुझे ही नमन करती हूँ। -श्रीमां (पाण्डिचेरी)

जीवित मंदिर

वैदिक मनोविज्ञान में वर्णित सातों कोषों के चेतन होने पर ही आगामी मानव जाति दिव्य शरीर धारण करेगी। -पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

(अब तक सभी देशों और कालों में शरीर को आत्म-प्राप्ति की राह में बाधक ही माना गया है। लेकिन महर्षि श्री अरविन्द ने संदेश दिया है कि क्रमशः मानव विकास में अब इस शरीर के भीतर ही आत्मा का सत्य, सौन्दर्य, ज्ञान, प्रकाश और अमृत उतरेगा। इसी से यह शरीर तिरस्कार्य नहीं, बल्कि विकासमान भगवान के अवतरण का जीवित मन्दिर है।)

ॐ श्री गंगाई नारायण नमः

अमृतवाणी

बाधा से प्रगति की ओर

बाधा जितनी ही होगी, उतना ही अच्छा है। बाधा पाये बिना क्या कभी नदी का वेग बढ़ता है? जो वस्तु जितनी नयी होगी, उतनी ही अच्छी होगी, वह वस्तु पहले-पहल उतनी ही बाधा पायेगी। बाधा ही तो सिद्धि का पूर्व लक्ष्ण है। जहाँ बाधा नहीं, वहाँ सिद्धि भी नहीं हैं।

- विवेकान्द साहित्य-स्वामी विवेकानन्द

सहायक का इन्तजार

''क्योंकि इस्राइली बहुत दिन तक बिना राजा, बिना हाकिम, बिना यज्ञ, बिना लाठ और एपोद व गृहदेवताओं के बैठे रहेंगे, उसके बाद वे अपने परमेश्वर यहोवा और अपने दाऊद को फिर ढूँढने लगेंगे और अंत के दिनों में यहोवा के पास और उसकी उत्तम वस्तुओं के लिए थरथराते हुए आयेंगे।

- बाइबल की भविष्यवाणियाँ

मानवता का उत्तरोत्तर विकास

मनुष्य प्राण-जगत् से अपनी प्राणमय सत्ता को और मनोमय-जगत् से अपनी मन: सत्ता को ग्रहण करता है। वह सदा ही इनके साथ गुप्त आदान-प्रदान करता रहता है। यदि वह चाहे तो सचेतन रूप से इनमें प्रवेश कर सकता है, इनके अन्दर उत्पन्न हो सकता है। यहाँ तक कि वह सत्य के और लोकों में भी उठ सकता है, अतिचेतन के मुख्य द्वारों में प्रवेश कर सकता है, परमदेव की देहरी को लाँघ सकता है। उसकी वर्धित होती हुई आत्मा के लिए दिव्य द्वारों के पट खुल जाएँगे।

- महार्षि श्री अरविन्द घोष वेद रहस्य (उत्तरार्द्ध)

सच्चिदानंदघन

सर्वशक्तिमान् सच्चिदानंदघन परमात्मा अज, अविनाशी और सर्वभूतों के परम गति तथा परमाश्रय हैं। वे धर्म को स्थापित करने और संसार का उद्धार करने के लिए ही अपनी योगमाया से सगुण रूप होकर प्रकट होते हैं, इसलिये परमेश्वर के समान सुहृद, प्रेमी और पतितपावन दूसरा कोई नहीं हैं, ऐसा समझकर जो पुरुष परमेश्वर का अनन्य प्रेम से निरन्तर चिन्तन करता हुआ आसक्तिरहित संसार बर्तता है, वही उनको तत्त्व से जानता है।

-''गीता'' सार

शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रमों में,

सद्गुरुदेव जो **"संजीवनी मंत्र"** देते थे, इस मंत्र के विषय में

सद्गुरुदेव के श्री मुखारविन्द-दिव्यांश

-हर युग में मनुष्य की शक्ति और सामर्थ्य को ध्यान में रखकर ही आराधना की विधि तय होती है। अब कलियुग में केवल हरि-नाम का जप ही सारे कष्टों से छुटकारा देता है।

-मुझे वही शिष्य प्रिय है, जो नाम जप करता है, चेतन है। सातों कोश चेतन हो जाएंगे, मेरे गुरु की कृपा से।

-आपको सिर्फ नाम जप व ध्यान करना है, आगे की ड्यूटी गुरु की।

-नाम जप में किसी प्रकार की हिंसा नहीं होती, कर्मकाण्ड यज्ञ करोगे, आग में घी, लकड़ी वगैरह जलाओगे तो उसमें थोड़े बहुत कमोवेश जीव जलेंगे।

-जप यज्ञ, कर्मकाण्ड यज्ञों से हजार गुना ज्यादा फायदा देता है।

-(सद्गुरुदेव का संजीवनी मंत्र) यह राधा और कृष्ण का मंत्र है। इसमें दोनों तत्त्व शामिल है। राधा तत्त्व-सांसारिक सुख देगा व कृष्ण तत्त्व-मोक्ष।

मुख्यालय:- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001

संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595

Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः

अमृतवाणी

'शब्दब्रह्म' से 'परब्रह्म' प्राप्ति का सिद्धान्त

''शब्द'' से सृष्टि की उत्पति को सभी धर्म स्वीकार करते हैं। शब्द से उत्पन्न हुआ पुरूष पुनः शब्द के रूप में परिवर्तित हो सकता है, यह बात मात्र वेदान्त दर्शन ही कहता है। शब्दब्रह्म से परब्रह्म की प्राप्ति का सिद्धान्त मात्र हमारे दर्शन की ही देन है। विश्व को इस दिव्य ज्ञान का दान भारत अनादिकाल से करता आया है, और करता रहेगा।

- सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

पुनर्जन्म

न्यायवादी तत्त्ववेताओं ने पुनर्जन्म के पक्ष में सदैव एक तर्क उपस्थित किया है, जो हमें निश्चयात्मक प्रतीत होता हैं, वह तर्क यह है कि ''**हमारे अनुभव लुप्त या नष्ट नहीं किये जा सकते।**'' हमारी कृतियाँ (कर्म) यद्यपि देखने में लुप्त-सी हो जाती है तथापि ''**अदृष्ट**'' बनी हुई रहती है और अपने परिणाम में ''**प्रवृत्ति**'' का रूप धारण करके पुनः प्रकट होती है। छोटे-छोटे बच्चे भी कुछ प्रवृतियों को - उदाहरणार्थ, मुत्यु का भय - अपने साथ लेकर आते हैं। - स्वामी विवेकानंद जी मरणोत्तर जीवन पुस्तक से

अवतार कैसे कार्य करता है?

अच्छी तरह कार्य करने का, मनुष्यों का तरीका स्पष्ट रूप से मानसिक संबंध द्वारा होता है, वे मन द्वारा चीजें देखते हैं। तो उन्हें लगता है कि उसमें साधारण मानव कार्य करने के लिये असाधारण पूर्णता होनी चाहिये-असाधारण कार्य-क्षमता, राजनीतिक, काव्यात्मक या कलात्मक क्षमता, बहुत ठीक-ठीक स्मृति, भूल न होना, पराजय और असफलता का न आना। या फिर वे ऐसी चीजों के बारे में सोचते हैं जो अतिमानस हों-जैसे भोजन न करना, रूई के भावी भाव बताना, कीलों को खा जाना या उनपर सोना। इन सब चीजों का भगवान् की अभिव्यक्ति के साथ कोई संबंध नहीं है...। ये मानव विचार गलत हैं। भागवत सत्ता एक और चेतना से काम करती है, ऊपर है सत्य की चेतना और नीचे लीला, और वह लीला की आवश्यकता के अनुसार काम करती है, मनुष्य के विचारों के अनुसार नहीं कि उसे क्या करना और क्या नहीं करना चाहिये। यह पहली चीज है जिसे तुम्हें पकड़ना चाहिये अन्यथा तुम भगवान की अभिव्यक्ति के बारे में कुछ नहीं समझ सकते।

- महर्षि श्री अरविन्द

ध्यान

'' ध्यान हमारी सत्ता की एक ऐसी स्थिति है, जिसमें हमें एक प्रकार की विश्रांति प्राप्त होती है और अपने मन को उसकी चंचल धारा से हटाकर एक ऐसी शांत स्थिर अवस्था में छोड़ देते है, जो अवस्था मन की लहरों, हिलोरों और कम्पनों तक के पीछे अटल चट्टान की तरह विद्यमान है।'' - महर्षि श्री अरविन्द

दृढ़ संकल्प

एक अकेले वीर का संकल्प हजारों कायरों के हृदय में साहस फूँक सकता है। - श्री माँ

आध्यात्मिक ज्ञान क्रांति में

"युवाओं की भूमिका"

हमारे लोगों ने दो बड़ी गलती कर दी,मेरे हिसाब से। एक तो परलोक के लालच में यह (भौतिक) लोक बिगाड़ दिया, इस लोक में भौतिक रूप से परिवर्तन नहीं आएगा, रोटी नहीं मिलेगी तो राम याद नहीं आएगा, इसलिए आराधना से पहले भौतिक जीवन में परिवर्तन आएगा।

और दूसरा, 'राम' का नाम बुढ़ापे में ले लेंगे। अब यह जवान छोरे नहीं समझते कि बुढ़ापा चीज क्या होता है? 70 साल से ऊपर निकले, उनसे पूछो, सौ तरह के रोग लग जाते हैं शरीर में और रोग की तरफ ध्यान जाता है, राम की तरफ जाता ही नहीं, केवल पछताना ही शेष रहता है।

इसलिए यह परिवर्तन भी युवावस्था में ही आना चाहिए। मेरे शिष्यों में 90 प्रतिशत से ज्यादा युवा लोग हैं और खास तौर से साइन्स (विज्ञान) के लोग हैं और मैं मानकर चलता हूँ कि धार्मिक जगत् में कोई क्रांति करनी है तो युवा वर्ग जब तक चेतन नहीं होगा तब तक परिवर्तन संभव नहीं है। परिवर्तन या क्रांति अगर लानी हो तो युवा वर्ग ही लाया है। आज तक लाया है आगे भी लाएगा।

अब दूसरे आराधना के तरीके रिजल्ट नहीं दे रहे हैं इसलिए वहाँ नहीं जाते हैं। मेरे पास इसलिए आते हैं कि इसमें बड़ा अजीब तरीके से युवाओं में परिवर्तन हो रहा है। ध्यान करने लगते हैं तो Concentrate(एकाग्र) हो जाता है। उनका मन अगर यहाँ पर (आज्ञाचक्र) एकाग्र हो जाए तो फिर किताब में भी एकाग्र हो जाता है। 3rd Division (तृतीय श्रेणी) पास करने वाला First Division (प्रथम श्रेणी) में आ रहा है और मानसिक तनाव न होने से पढ़ाई में बड़ा मन लगता है तो मनुष्य जाति में यह एक क्रियात्मक बदलाव है। अपनी शक्तियों को चेतन करके लाभ उठाना यह कोई जादू नहीं है। यह मानव में Due (बाकी) था। मानव जाति में यह विकास होना संभव है। Due था शुरू हो गया, कोई Abnormal (असाधारण) बात नहीं हो रही है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

दिव्य ज्ञान प्राप्ति का पथ

सद्गुरुदेव के पावन चरणों में पूर्ण समर्पण

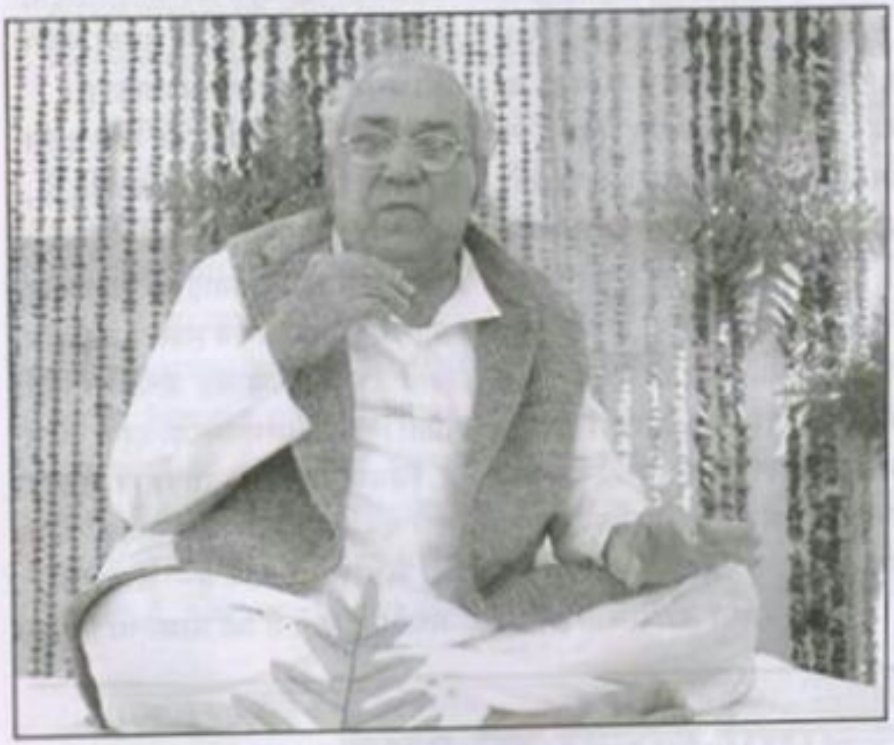

प्रवृत्तिमार्गी समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग, अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन) की अहैतुकी कृपा के कारण प्राप्त असीम दिव्य ज्ञान रूपी "कृपा-प्रसाद" बाँटने विश्व में निकले है।

इस दिव्य ज्ञान को प्राप्त करने का एक मात्र तरीका है-सद्गुरुदेव के पावन चरणों में आंतरिक भाव से पूर्ण समर्पण। इसका यही मूल्य है।

इसे भौतिक धन से, चतुराई से, चोरी से, धोखे से, डरा-धमका कर प्राप्त नहीं किया जा सकता। सद्गुरु जब हृदय से प्रसन्न होते हैं, तभी मंत्र का रहस्य खोलते हैं, और मंत्र मोक्ष देता है, अन्यथा नहीं।

-सद्गुरुदेव द्वारा स्थापित
Avsk संस्था के संविधान से

सघन नाम जप द्वारा नशों से छुटकारा

स्वामी विवेकानन्द जी ने अमेरिका में किसी अमेरिकन्स के पूछने पर व्यक्ति की वृत्ति कैसे परिवर्तित होती है, इस संबंध में बड़ा सटीक जवाब दिया-You need not to give up the things; the things will give up you. "आपको उन वस्तुओं को छोड़ने की आवश्यकता नहीं है, वह वस्तुएँ आपको छोड़कर चली जाएगी" फिर क्या करोगे? तो आप में जो परिवर्तन आएगा, वो इस नाम जप से The things will give up you के हिसाब से आएगा, न कि बुद्धि के प्रयास से !

अगर आप Seriously (गंभीरता से) नाम जपोगे तो निश्चित रूप से सभी नशे छूट जाएंगे। आपको छोड़कर चले जाएंगे; नशे आप नहीं छोड़ोगे। उनको नशे की बात करता हूँ तो स्वामी विवेकानन्द जी का एक Sentence (वाक्य) याद आ जाता है। अमेरिका में स्वामी जी कहीं प्रवचन कर रहे थे तो एक अमेरिकन्स ने कहा महाराज लम्बे चौड़े लेक्चर झाड़ रहे हो, आपके-हमारे सौदा नहीं बैठेगा। आप के धर्म में तो शाहाकारी और माँसाहारी बड़ा सख्त सिद्धान्त है।

हम सारे के सारे माँस खाने वाले लोग है तो स्वामी जी ने चलते Speech (प्रवचन) में कह दिया-You need not to give up the things; the things will give up you. आपको उन वस्तुओं को छोड़ने की आवश्यकता नहीं है, वह वस्तुएँ आपको छोड़कर चली जाएगी' फिर क्या करोगे? तो आप में जो परिवर्तन आएगा वो इस "नाम जप" से The things will give up you के हिसाब से आएगा न कि बुद्धि के प्रयास से !

इसलिए मैं कह दिया करता हूँ-शराब पी रहे हो तो एक की जगह डेढ़ बोतल शुरू कर दो, मत छोड़ो, अफिम थोड़ा ज्यादा लेना शुरू कर दो, लोग तो कहते हैं-छोड़ दो; मैं तो कहता हूँ मत छोड़ो। मगर नाम को भी मत छोड़ो तो फिर कितने दिन करोगे? चैलेंज के साथ मैंने लाखो को छुड़वा दिया। अगर नाम जप Seriously (गंभीरता से) करोगे तो नशा आपको छोड़ जाएगा, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है, वृति बदल जाएगी।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

"मानव शरीर में देव और दानव का युद्ध"

सात्त्विक वृत्ति अर्थात् देवत्व के विकास से दानवीय वृत्ति अर्थात् सभी रोगों व नशों से पूर्ण मुक्ति संभव।

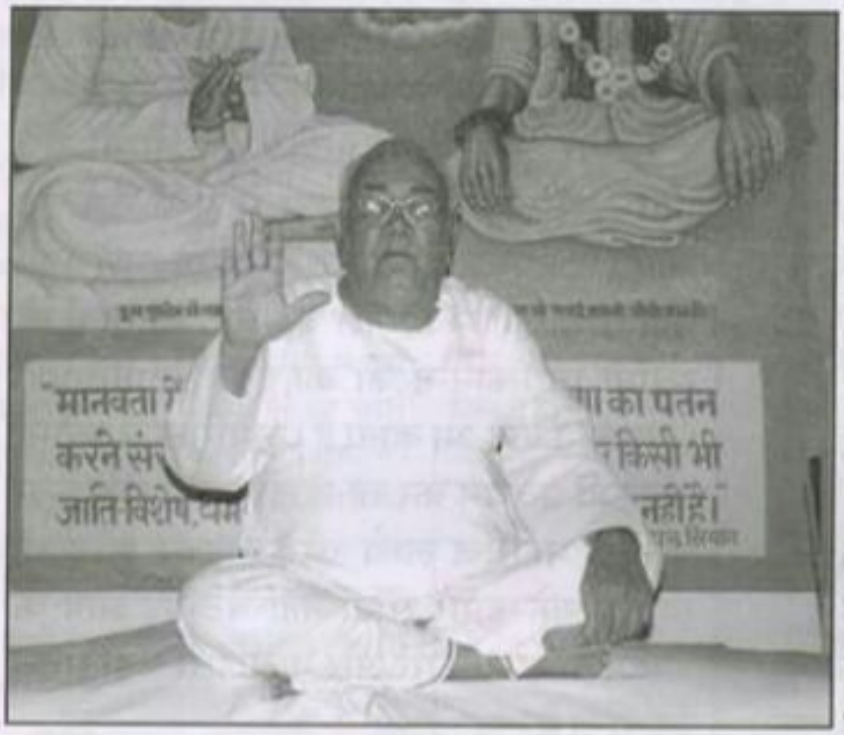

देव और दानव का संघर्ष मनुष्य के अन्दर अनादि काल से चला आया है। दानव प्रभावी हो जाता है तो आदमी को यह नुकसान (तामसिक खान-पान, रोगों व नशों से युक्त और बुरा सोचने वाला) होता है। जब देव प्रभावी हो जाता है तो आदमी सात्त्विक हो जाता है। पातंजलि योग दर्शन में भी **कैवल्यपाद** के दूसरे सूत्र में जाति परिवर्तन की बात कही है। ऋषि ने **जात्यान्त्रण** की बात स्वीकार की है।

पहले-पहले कई लोग मुझे कहा कहते थे-यह रोग ऐसे ही ठीक हो जाते हैं तो अस्पताल बंद कर दें क्या? मैंने कहा भईया आपको इस दर्शन की जानकारी नहीं है; अधूरी जानकारी है। इसलिए कह रहे हो। पातंजलि ऋषि ने '**कैवल्यपाद**' के पहले-पहले सूत्र में इस परिवर्तन के आने के लिए पाँच कारण बताये हैं। पहला तो **पूर्वजन्म** के संस्कार से परिवर्तन आना संभव है दूसरा जप से तीसरा तप से चौथा योग से पाँचवाँ **औषधि** से भी यह परिवर्तन संभव है, पातंजलि ऋषि स्वीकार करते हैं।

आज तो हम जो जहर खा रहे हैं वो तो पश्चिम की देन है। **भारतीय औषधि विज्ञान** में तो **कायाकल्प** तक का वर्णन आता है। मगर वह दर्शन तो लोप हो गया। हमारे पतन के साथ वह सब कुछ लोप हो गया। मुसलमानों ने, ईसाईयों ने वह ग्रंथ जला दिये। आज उसको उठने नहीं दे रहे हैं। आर्थिक कारणों से दबाए रख रहे हैं तो हमारा दर्शन जो है पाँच तरह से इस परिवर्तन को स्वीकार करता है, औषधि से भी करता है तो इस प्रकार आप नाम जप और ध्यान करोगे तो आप में यह परिवर्तन आएगा। योग होगा, नाम का नशा आएगा और वृत्ति बदल जाएगी-उससे शारीरिक रोग खत्म, मानसिक रोग खत्म, नशों से छुट्टी तो यह जीवन तो सुधर ही गया।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

सद्गुरु कृपा का महाप्रसाद

कुण्डलिनी जागरण

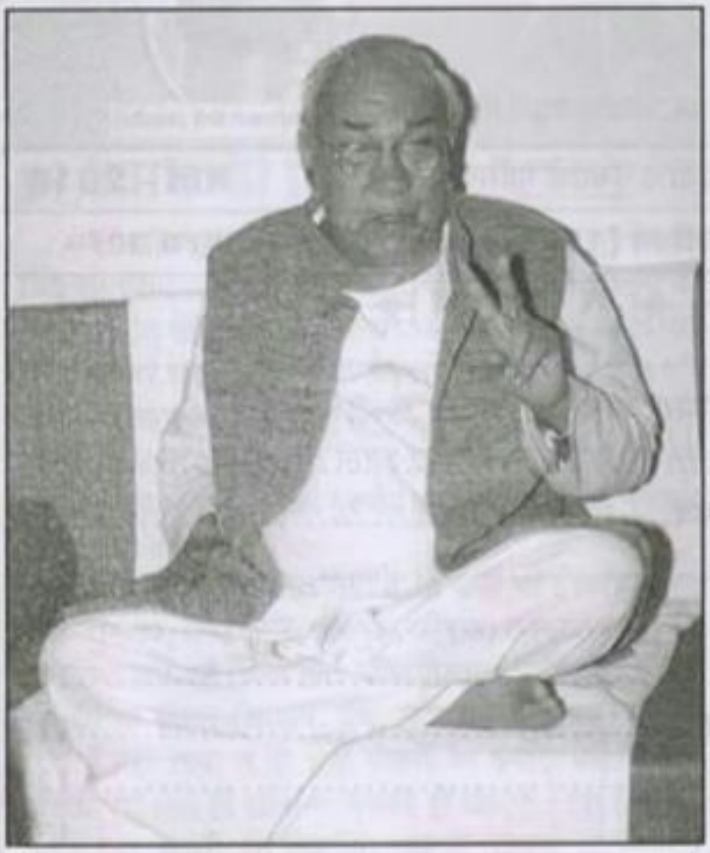

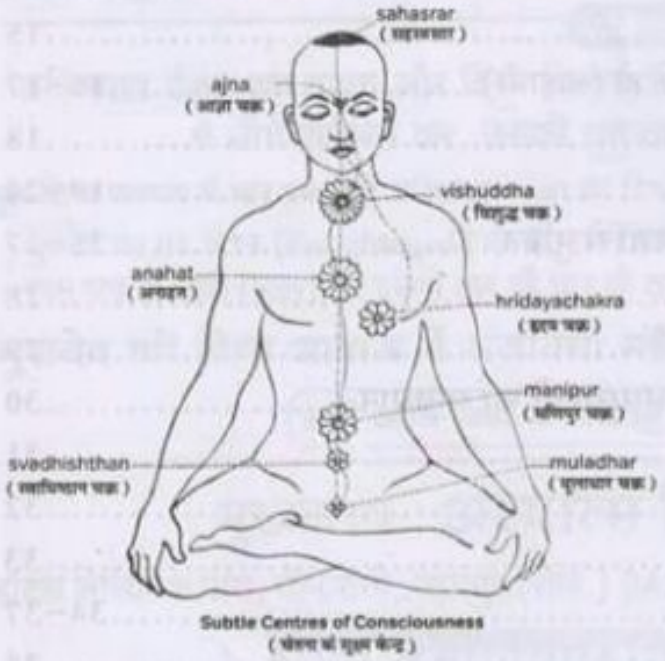

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

"जब तक कुण्डलिनी शरीर में सुषुप्तावस्था में रहेगी, तब तक मनुष्य का व्यवहार पशुवत रहेगा। और वह उस दिव्य परमसत्ता का ज्ञान पाने में समर्थ नहीं होगा, भले ही वह हजारों प्रकार के यौगिक अभ्यास क्यों न करे।" गुरुकृपा रूपी, शक्तिपात दीक्षा से जब कुण्डलिनी जाग्रत होती है, तब क्या होता है ? इस संबंध में कहा है-

सुप्त गुरु प्रसादेन, यदा जागृति कुण्डली।
तदा सर्वानी पद्मानि, भिदयन्ति ग्रन्थ्यो पि च।।

(स्वात्माराम, हठयोग प्रदीपिका-3.2)

जब गुरुकृपा से सुप्त कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है, तब सभी चक्रों और ग्रंन्थियों (ब्रह्मग्रंथि, विष्णुग्रंथि और रूद्रग्रंथि) का भेदन होता है। इस प्रकार साधक समाधि स्थिति, जो कि समत्त्व बोध की स्थिति है, प्राप्त कर लेता है। शक्तिपात होते ही साधक को प्रारब्ध कर्मों के अनुसार विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ (आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम) स्वतः ही होने लगती हैं।

शिष्य में जाग्रत हुई शक्ति (कुण्डलिनी) पर गुरु का पूर्ण प्रभुत्व रहता है, जिससे वह उसके वेग को नियंत्रित और अनुशासित करता है।

कुण्डलिनी को हमारे शास्त्रों में जगत् जननी कहा है। वह उस परमसत्ता का दिव्य प्रकाश है, जो सर्वज्ञ है, सर्वत्र है, सर्वशक्तिमान है।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

अपने वास्तविक स्वरूप में रूपान्तरण

कबीरदास जी ने एक जगह कहा है-

जहाँ मरने से जग डरे, मोरे मन आनन्द।
कब मरीयो कब पाइयो पूरण परमानंद।।

तो इस वक्त, इस तरह आप जो आराधना करोगे उससे आपका माया का आवरण क्षीण हो जाएगा। आप प्रकृति के रहस्य को खुली आँखों से देख सकोगे फिर उस मौत से डरोगे नहीं, बेसब्री से उसका इंतजार करोगे।

कबीर बेचारे बड़े रहस्य वादी संत थे, गुरु नहीं थे इसलिए उनमें जो परिवर्तन आया वह तो आ गया, मगर वह किसी दूसरे में परिवर्तन नहीं कर सके।

उन्होंने जो वाणियों में गाया है,स्पष्ट शब्दों से बोला है। एक वाणी में गाया-

'जल बिच कुम्भ, कुम्भ बिच जल है,
बाहर भीतर पानी।
विगटा कुम्भ जल जल ही समाना,
ये गति विरले जानी।।

मतलब पानी से घड़ा भरा हुआ है, पानी के अन्दर रखा हुआ है-तालाब में। वह कहते है- पानी से भरा हुआ घड़ा, तालाब के अन्दर रखा है, अगर घड़ा गल जाए तो बाहर वाले पानी व अन्दर वाले पानी में भेद नहीं कर सकोगे,वह एक हो गया तो भइया यह शरीर रूपी घड़ा गल जाएगा तो आप अपने असली Form (स्वरूप) में बदल जाओगे फिर आश्चर्य नहीं है, यह कोई अचम्भा नहीं है। मनुष्य अपने असली स्वरूप में बदल जाएगा।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

''ध्यान और समाधि अवस्था में भविष्य को देखना''

यह जो दिख रहा, वही सत्य हो रहा है और उस वक्त कहीं ख्याल आ गया, यह जा रहे हैं तेरे को भी जाना है। But Natural(लेकिन प्राकृतिक) है याल आएगा ही आएगा तो आप को पता लग जाएगा कैसे जाओगे ? किस उम्र में जाओगे ? जीते-जी मृत्यु से साक्षात्कार हो जाएगा।

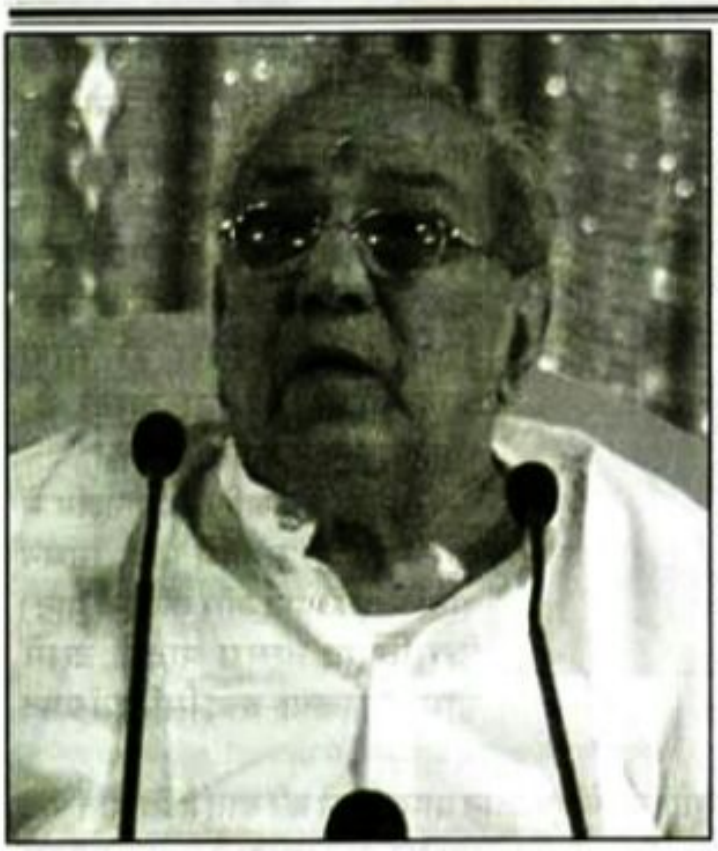

अब ध्यान की स्थिति में, समाधि की स्थित में आप जब इन चीजों को देखोगे, भविष्य को देखोगे तो भविष्य में होने वाले सारे परिवर्तन देखोगे-जन्मना, मरना, घात-प्रतिघात, घाटा-नफा सारे दिखेंगे तो इस प्रकार आपको, अपने कई परिचित लोगों की मृत्यु (Death) दिख गई कि किस कारण से होगी। अप्रोक्समेटली.... उम्र क्या होगी ? वह Correct Time (सही समय) मालूम नहीं कर सकोगे। वह तो प्रकृति ने अपने अधिकार में रखा है। एक्सीडेंट से होंगी कि बीमारी से होगी क्या होगा और वह वैसे ही होती चली जाएगी क्योंकि मरना तो सभी को है। सबका निश्चित Time (समय) है। एक की नहीं, सैकड़ों ऐसी घटनाएँ आपके सामने आएगी तो बड़ा आश्चर्य होगा। यह मामला तो गड़बड़ है। यह जो दिख रहा, वही सत्य हो रहा है और उस वक्त कहीं ख्याल आ गया, यह जा रहे हैं तेरे को भी जाना है। But Natural(लेकिन प्राकृतिक) है। ख्याल आएगा ही आएगा तो आप को पता लग जाएगा कैसे जाओगे ? किस उम्र में जाओगे ? जीते-जी मृत्यु से साक्षात्कार हो जाएगा।

जब दूसरों वाली घटनाएँ सही हो रही हैं तो आप वाली गलत कैसे होगी ? तब फिर आदमी घबरा जाता है। मौत से बहुत डरता है। कोई नहीं मरना चाहता, मगर एक भी न बच पा रहा हैं। अब जब बच भी नहीं पा रहे हो तो डरते क्यूँ हो भाई ? पर माया ने एक ऐसा आवरण आपके चारों तरफ कर दिया है कि मौत रूपी जो वरदान है, वह जन्म-मरण के चक्र को छुड़वाता है। उसकी शक्ल बड़ी भयावनी दिखाई देती है। आप उसको स्वीकार नहीं करना चाहते। आप इसी जगत् में रहना चाहते हैं, मगर फिर भी वह ले जाती है।

जब आदमी को पता लगेगा कि मेरी इस तरह से Death (मृत्यु) होगी तो घबरा जाता है, बड़ा गंभीर होता है। फिर भगवान् से प्रार्थना करता है कि हे भगवान् ! किसी तरह बचा ले ! क्योंकि जब मौत सामने आती है तो जीवन भर किये-कराये वह सब सामने आ जाते हैं। दुनिया को झाँसा दे सकता है। अपने आप को कैसे देगा, वह जो खोटे किये हैं। मनुष्य अपनी तस्वीर देखकर घबराता है। वह बड़ा Concentrate (एकाग्र) हो जाता है-हे भगवान्, बचा ले ! जैसे ही Serious(गंभीर) हुआ कि कुण्डलिनी सहस्रार में पहुँच जाती है। मृत्यु का रहस्य समझ में आ जाता है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

आराधना द्वारा प्रातिभ ज्ञान की प्राप्ति

इस योग में अन्दर और बाहर दोनों का विकास एक साथ होता है और साथ ही साथ आध्यात्मिक चेतना आती है, भौतिक रूप से शांति होती है।

अब आराधना में मैंने आपको बताया कि आप आराधना करोगे तो पातंजलि योग दर्शन में जो सिद्धियाँ वर्णित हैं, वह सब आपको हासिल होगी। **इस योग में अन्दर और बाहर दोनों का विकास एक साथ होता है और साथ ही साथ आध्यात्मिक चेतना आती है,** भौतिक रूप से शांति होती है।

देखिए पातंजलि योग दर्शन में चार भाग हैं- समाधि पाद, साधन पाद, विभूतिपाद और कैवल्य पाद। विभूतिपाद तीसरा पाद है उसमें साधक को क्या-क्या सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं-उसका वर्णन आता है।

इस आराधना से आपको सारी सिद्धियाँ मिलेगी। उसमें एक ज्ञान प्राप्त करने की बात है विभूति पाद में 33 और 36 दो सूत्रों में उसका वर्णन आता हैं। उस ज्ञान का नाम है प्रातिभ ज्ञान। ऋषि ने उसको प्रातिभ ज्ञान की संज्ञा दी है। वह स्वतः प्राप्त होता है-आराधना में।

जब प्रातिभ ज्ञान प्राप्त हो जाता है तो साधक को छह प्रकार की सिद्धियाँ हो जाती हैं। उनमें से पहली सिद्धि है-ध्यान व समाधि की स्थिति में अनिश्चित काल के भूत भविष्य को देखना-सुनना (Unlimited Past and Future)। उसका Self Realization and self visulisation (प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार) करना। भौतिक Science (विज्ञान) मानती है और इस सिद्धान्त को स्वीकार कर चुकी है कि जो शब्द बोला गया है, वो ब्रह्माण्ड में रहता है। अगर प्रोपर मशीन हो तो उसे सुना जा सकता है।

हमारा योग दर्शन कहता है कि जब ब्रह्माण्ड में शब्द है तो बोलने वाला भी रहा होगा ? उसके बिना शब्द कहाँ से आया ? उसको बोलते हुए देखा सुना जाना संभव है। आगे कहता है कि वह तो Past है वह तो फिल्म पहले बन गई। वह तो Done to done हो गई। अब वो undone नहीं हो सकता। अनिश्चित काल के भविष्य को देखा-सुना जाना संभव है।

मैं नहीं कह रहा, पातंजलि ऋषि ने विभूतिपाद के 33 और 36 दो सूत्रों में यह बात कही है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

सद्गुरुदेव की अमर तस्वीर

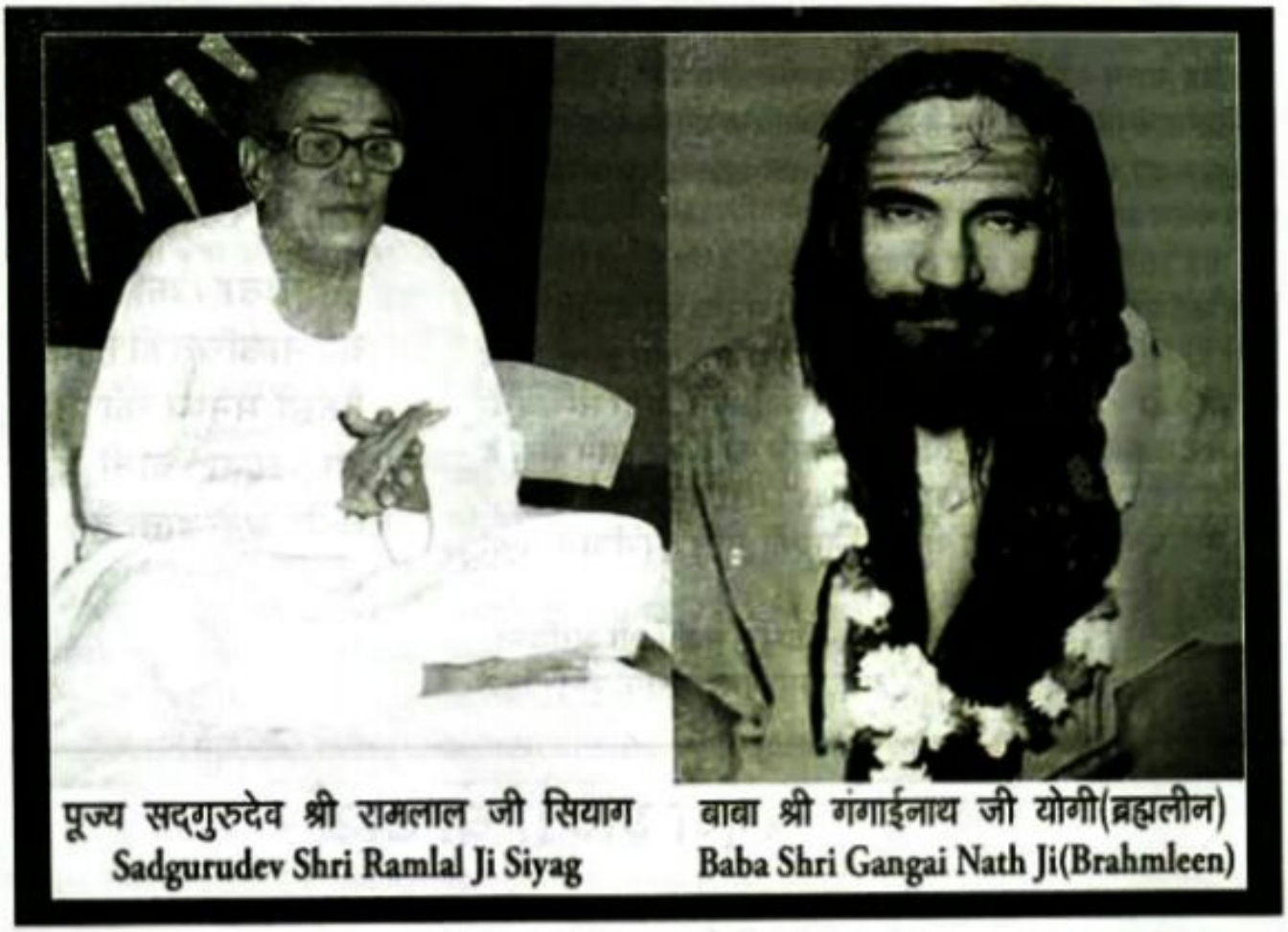

पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
Sadgurudev Shri Ramlal Ji Siyag

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी(ब्रह्मलीन)
Baba Shri Gangai Nath Ji(Brahmleen)

''देखो, मैं कल्कि अवतार हूँ। मेरी तस्वीर से ध्यान लगता है। मेरे जाने के बाद मेरी 'तस्वीर' तो नहीं मरेगी ! वह आपको 'जवाब' देगी।''

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

"वृत्ति परिवर्तन"

देखिए, गीता के 17वें अध्याय में 3 श्लोक हैं-8,9 व10-उसमें भगवान् ने अलग-अलग वृत्ति के व्यक्तियाँ के क्या-क्या खान-पान हैं? कौनसा खानपान पसन्द करता है? तामसिक कौनसा, राजसिक कौनसा और सात्विक कौनसा?

वहाँ स्पष्ट रूप से वर्णन किया है कि इस वृति का आदमी यह चीज पसन्द करता है, इसका यह पसन्द करता है और गीता में 14वें अध्याय में एक श्लोक है-10वाँ, उसमें भगवान् ने कहा है कि यह वृत्तियाँ बदल सकती है। तमोगुण और रजोगुण को दबा दो तो सतोगुण उभरेगा। इन दोनों को दबा दो तो तीसरा उभरेगा तो इस प्रकार जो आराधना करोगे तो उससे आपकी वृत्तियाँ बदल जाएंगी।

वृत्तियाँ बदलने के साथ-साथ जो पहले पसन्द था, उससे घृणा हो जाएगी। दूसरा अपने आप शुरू हो जाएगी। चाहकर आप उसको नहीं रोक सकते। बुद्धि के प्रयास से अगर आप उसको नहीं रोक सकते, बुद्धि के प्रयास से अगर नशा छूटे तो फँसने के बाद तो सभी छोड़ना चाहते हैं। पहले तो सीख लेंगे शौक-शौक में, फिर फँस गये, छोड़ नहीं सकते। तब तक नहीं छूटेगा जब तक वृत्ति नहीं बदलेंगी। मैंने हजारो को अफीम और शराब छुड़ा के बता दिया। पता नही शराब तो लाखों के छूट गया।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रमों में,

सद्गुरुदेव जो संजीवनी मंत्र देते थे, इस मंत्र के विषय में

सद्गुरुदेव के श्री मुखारविन्द-दिव्यांश

-ये चेतन मंत्र है, Enlightened है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। असंख्य ऋषियों की कमाई है-इस मंत्र में।

-ये बीज मंत्र है जिस तरह बरगद का बीज राई जितना छोटा होता है और विशाल वृक्ष बनता है।

-ये संजीवनी मंत्र है, आप चाहे किसी बीमारी से पीड़ित हो-एड्स, कैंसर, हेपेटाइटिस बी आदि। इस मंत्र को जपोगे तो उस बीमारी से नहीं मरोगे।

संजीवनी मंत्र के लिए कॉल करें-07533006009 या वेबसाइट देखें-Web:www.the-comforter.org

परमसत्ता के पथ की खोज

सद्गुरुदेव का "सच्चा त्याग"।

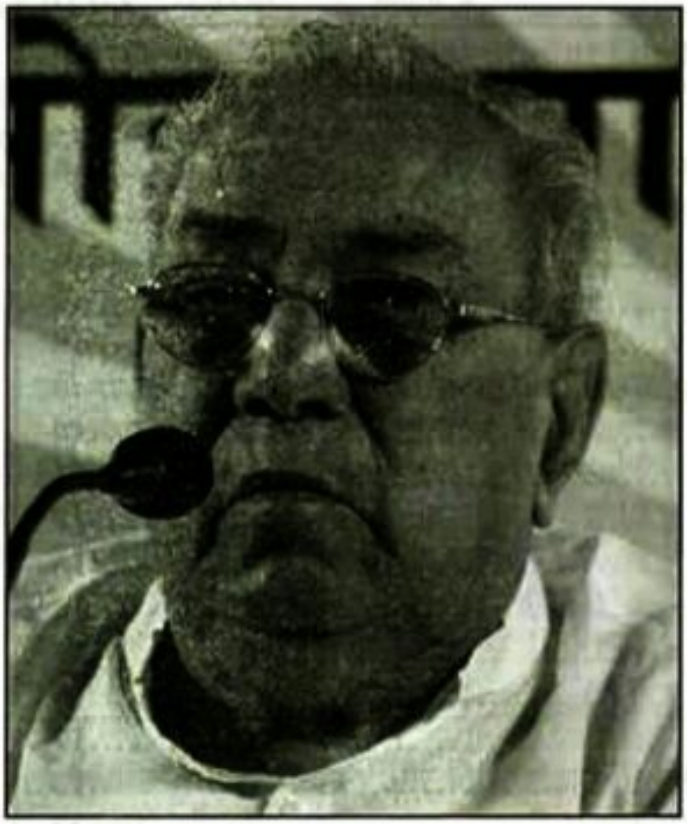

"उस परमसत्ता तक पहुँचने का रास्ता जीव मात्र के कल्याण के लिए खोजा। ऐसे ही परम हितैषी और दयालू संत सद्गुरु संसार का कल्याण करने में सक्षम होते हैं। वे अपने जीवन में इस बात की झलक तक नहीं दिखने देते कि वे क्या कर रहे हैं? उस परमसत्ता तक पहुँचने का रास्ता खोजकर, उसका साक्षात्कार करके उसी में लीन हो जाते हैं।

संसार से विदा होने से पहले वे इस अपनी अर्जित परम शक्ति को किसी ऐसे उपयुक्त पात्र को सौंप कर जाते हैं, जो संसार के प्राणी मात्र के कल्याण के लिए उपयोग कर सके। यह होता है "सच्चा त्याग"। अपनी जीवन भर की कमाई को अनायास ही संसार की भलाई के लिए अर्पित करके चुपचाप चले जाते हैं।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

"असंख्य ऋषि-मुनियों की कमाई का अमर फल अपनी घोर तपस्या से बाबा श्री गंगाई नाथ जी महायोगी (ब्रह्मलीन) ने संचित किया। फिर अहैतुकी कृपा कर जगत् कल्याण के लिए अपनी संपूर्ण सामर्थ्य, समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग को अर्पित कर, 31 दिसम्बर, 1983 को परमत्ता में विलीन हो गए। सद्गुरुदेव ने इस दिव्य संजीवनी मंत्र को विश्व मानवता के हृदय पटल पर स्थापित किया। मानव मात्र को इस ज्ञान का अधिकारी समझकर, शक्तिपात दीक्षा दी। सद्गुरुदेव ने अपने जीवनकाल में ही यह आदेश दे दिया कि मेरे जाने के बाद मेरी तस्वीर काम करेगी। यह घटना जगत् में पहली बार घटी है। जबकि प्रकृति का नियम है कि जो जगह खाली हो गई, उसकी जगह दूसरा व्यक्ति लेता है लेकिन सद्गुरुदेव की जगह सद्गुरुदेव की तस्वीर ही काम करेगी। इसलिए जो जीव अपना कल्याण चाहता है, वो सद्गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनकर, सघन जप व नियमित ध्यान कर, अपना सर्वांगीण विकास कर सकता हैं।"

संदर्भ-सिद्धयोग पृष्ठ-131

"त्रिगुणमयी माया"

मनुष्य जाति तीन प्रकार की होती है-सत्तोगुणी, रजोगुणी व तमोगुणी

अब देखिए मनुष्य जाति जो है तीन प्रकार की होती है-रजोगुणी, तमोगुणी और सतोगुणी। त्रिगुण-मयी माया से सृष्टि की उत्पति हुई है। हर एक मनुष्य में तीनों वृत्तियाँ होती हैं। एक प्रधान होती है-दो गौण होती हैं। किसी में तमोगुण ज्यादा, किसी में सतोगुण ज्यादा तो किसी में रजोगुण ज्यादा और जो वृत्ति प्रधान होती है, वह जो अन्दर से माँग करती है, वह ही सप्लाई (पूर्ति) करना पड़ता है।

किसी आदमी को खाने को कुछ पसन्द होता है, किसी को कुछ होता है। अलग-अलग पसंद (choice) होती है। वह जो वृत्ति अन्दर सक्रिय है, वह जो माँगेगी तो आपको सप्लाई करना पड़ेगा और झगड़ा तब पैदा हो जाता है जब डिमाण्ड (Demand) हो और सप्लाई (Suply) न हो।

जब डिमांड ही नहीं हो तो फिर सप्लाई क्यूँ ? आपकी इच्छा ही नहीं होगी। 20-20 साल के अफीमची आये। आज खाया कल से बंद। नहीं खाने से कोई तकलीफ नहीं है। तकलीफ उस हालत में होती है, जब अन्दर वृत्ति चेतन है, माँग कर रही है। आप उसको दे नहीं रहे हो। वह नशा करने वाला उससे दुःखी होता है तो इस नाम जप और ध्यान से आपकी वृत्तियाँ बदल जाएँगी।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

हरि नाम के जप से अक्षय आनंद

सभी रोगों व नशों से पूर्ण मुक्ति

इस प्रकार आप नाम जप करो तो उससे आपको एक आनन्द आने लग जाएगा। उससे संबन्धित बीमारियाँ-हाईब्लडप्रेशर, लो ब्लडप्रेशर, उन्माद, पागलपन आदि स्वतः ही ठीक हो जाएंगे। हजारों को हो रहा है। तेल खाओ, चाहे नमक खाओ कितना ही, हाईपर टेंशन नहीं होगा। वह तो एक मतलब सिस्टम से रिलेटेड बीमारी है न मेंटल टेंशन से सम्बन्धित है और 'हरि नाम' से जो आनन्द आने लगेगा तो वह टेंशन खत्म हो जाएगा, उससे सम्बन्धित बीमारी ठीक हो जाएगी, चाहे वह कोई हो तो इस प्रकार शारीरिक रोग खत्म हो जाएंगे, मानसिक रोग खत्म हो जाएँगे।

अब दूसरा आज जो संसार को सबसे ज्यादा परेशान कर रहा है वह है-"नशा" और पश्चिम इससे सबसे ज्यादा परेशान है। मेरे पास डेनमार्क से लड़का लड़की आए। दो औरतें लन्दन से आई, दीक्षा लेकर गई। उन्होंने कहा नशा हमको मारेगा। यह छूटता ही नहीं है। भौतिक विज्ञान (Physical Science) वाले भी शराब छुड़ाते हैं, अस्पताल में भर्ती करते हैं, दो-तीन महीने तक रहता है। जब शाम को शराब माँगता है तो उसमें कोई ऐसी ड्रग डाल देते हैं, उसे पीने से जी मचलाता है और उल्टी हो जाती है। इस तरह 2-3 महीने में छोड़ता है और बाहर निकलते ही पहले से दुगुणा शुरू कर देता है, पार नहीं पड़ रही है। इसमें (सिद्धयोग में) तो आन्तरिक परिवर्तन आ जाता है जिस चीज की खुशबू आती थी, बदबू आने लग जाती है। आप निगल नहीं सकोगे, अन्दर से माँग खत्म हो जाती है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

"हरि-नाम" की खुमारी

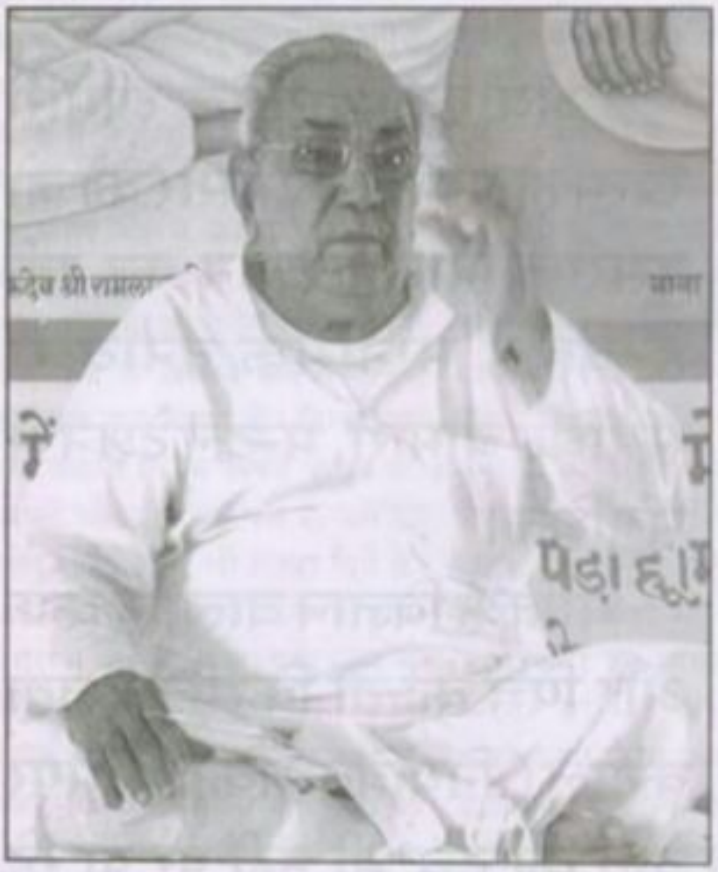

मैंने आपको पहले बताया कि यहाँ कल्पना की कोई गुँजाइस नहीं है। कल्पना करना तो शेख चिल्ली का काम है। आपने सुना होगा राम के नाम में नशा होता है। संतों ने उसको 'नाम खुमारी' कहा है, 'हरि नाम' की खुमारी।

नानक देव जी महाराज कहते हैं कि-

भांग धतूरा नानका उतर जाय प्रभात।
नाम खुमारी नानका, चढी रहे दिन-रात।

भांग धतूरा रात को पीयो और सो जाओ-सुबह साफ। कबीर दास जी भी कहते हैं-नाम अमल उतरे न भाई, नाम का नशा उतरता नहीं है। 'और अमल छिन्न-छिन्न चढ़ी उतरे।' नाम अमल दिन बढ़े सवाया। मैं जो आपको नाम बताऊ उसको आप जपोगे तो आपको मादकता आ जाएगी। इन्टोक्शिकेशन विदाऊट ड्रग **(Intoxication without drug)**। डॉक्टर बड़े हैरान हैं और सैंकड़ों डॉक्टर मेरे शिष्य हैं, इंजीनियर तो हजारों हैं। इस प्रकार नाम जप से 24 घंटे एक आनंद आता रहेगा। नाम जप करो-राउण्ड दी क्लॉक और आपका का गुस्सा, छिड़छिड़ापन, फिकर, सब खत्म हो जाएंगे।

भगवान् कृष्ण ने गीता में इसके लिए पाँच श्लोक कहे हैं-5वें अध्याय में एक श्लोक है-21वाँ, 6वें अध्याय में चार श्लोक हैं-15, 21, 27 व 28। उसमें भगवान् ने बड़े विस्तार से समझाया है।

उसको दिव्य आनन्द कहा है, अक्षय आनन्द कहा है, इन्द्रियाँ अतीत आनन्द कहा है, अद्वितीय आनन्द कहा है। मगर जब तक यह आनन्द आता नहीं, तब तक साधक जो है भौतिक सुख और आनन्द में भेद नहीं कर पाता है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

"आनंद और सुख में भेद"

भौतिक रूप से सुखी है-धन-दौलत हैं, बेटे-पोते हैं, कार-बंगले हैं तो कह देते हैं-जी आनन्दमय है; और उन में से कोई एक आईटम खिचक जाए तो आनन्द बदल गया, आनन्द खत्म हो गया। अब छोटे-छोटे बच्चे जो बैठे हैं, इनको मेरी बात से कोई मतलब नहीं है। इनको कोई आनन्द नहीं आ रहा है। इन्हे किसी और बात पर आनन्द आता है।

ज्योंहि यह जवान हो जाएंगे तो अभी जिसमें आनन्द आ रहा है, फिर उसमें नहीं आएगा; किसी और बात में आनंद आने लग जाएगा। और साठ वर्ष से ऊपर निकले कि किसी और बात में आनन्द आएगा तो वह आनन्द नहीं है; वह तो इन्द्रियों से अनुभव होने वाला सुख-दुःख है। **आनंद तो इन्द्रियातीत है।**

जब तक यह आपको नहीं आएगा, आपको नहीं पता लगेगा कि किसी इन्द्रिय विशेष से अनुभव न होने वाला आनन्द, इन्द्रियातीत आनंद है क्या ?

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

-:सद्गुरुदेव की चरण रज:-

"इस प्रकार मैं निरन्तर उसकी आकर्षण सत्ता के कारण तेज गति से उसकी तरफ बढ़ता गया। इस प्रकार निश्चित समय पर प्रत्यक्षानुभूतियाँ, अनायास ही साक्षात्कार में बदल गई।

प्रत्यक्ष आदान-प्रदान के बावजूद "गुरु" के अभाव में, जो कुछ हो रहा था, उसके बारे में, मैं कुछ भी नहीं समझ सका।

ज्यों ही 'गुरुदेव' की 'चरण रज' माथे पर लगी, एक दम काया पलट गई।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

"सिद्धयोग द्वारा मानसिक तनाव से मुक्ति"

"अब एक शारीरिक बीमारी खत्म हो गई। आज संसार को जो दूसरी बीमारी परेशान कर रही है-वह है मानसिक तनाव से संबंधित बीमारी, मेन्टल टेंशन से संबधित।

भौतिक विज्ञान वालों ने कफ और पित्त को तो किसी हद तक कंट्रोल (नियंत्रित) किया है मगर वात को टच भी नहीं पर पा रहे हैं।

स्नायु मण्डल की पेचीदगी इतनी है कि वो समझ में नहीं आ रहा, डॉक्टर टच (स्पर्श) करते हुए डरते हैं। केवल नशे की दवाई देकर सुला देते हैं, वह नशे में हो जाता है, उसमें एनर्जी रीस्टोर थोड़ी ही होती है। नेशुरल (प्राकृतिक) नींद जो होती है उसमें और इसमें (कृत्रिम नींद में) बहुत अन्तर होता है।

इसमें (सिद्धयोग) मानसिक तनाव खत्म हो जाता है, वह भी परिवर्तन एक ठोस दार्शनिक आधार पर आता है।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

"मेरा काम है नेकी कर और दरिया में डाल।"
"सब कष्टों से मुक्ति चाहते हो तो मेरी शरण में आ जाओ।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

स्वतः योग और अद्भुत आनंद

सद्गुरुदेव को कोटि-कोटि प्रणाम। मैं अश्विनी हॉस्पीटल में एडमिट हुआ। मेरे लीवर में सूजन व हाथ में दर्द रहता है। पहले मैं मेडिकल वार्ड में भर्ती था, एक सर ने आकर सिद्धयोग का कार्ड व पेम्पलेट दिया लेकिन मैंने क्लाश अटेन्ड नहीं की।

गुरुदेव की ऐसी कृपा हुई कि मैं दूसरे वार्ड में भर्ती हो गया। वहाँ सोमवार को सिद्धयोग की क्लास लगती है। वहाँ मैंने सिद्धयोग की क्लास अटेन्ड की। उस दिन सिद्धयोग दर्शन क्या है? तथा मनुष्य जीवन में सद्गुरुदेव श्री सियाग जी के ध्यान से क्या परिवर्तन आता है, इसकी जानकारी देकर 15 मिनट का ध्यान कराया गया। उस दिन काफी शांति मिली और मन हल्का हो गया।

दूसरे दिन से ही पूरे शरीर में स्वतः योग होने लगा। चार-पाँच दिन तो मुझे बहुत योग हुआ और हाथ-पांव में दर्द होने लगा जैसे बहुत ज्यादा शारीरिक कार्य किया हो।

अब मुझे पेट में अपने-आप यौगिक क्रिया हो रही है। जिस दिन मोतिया बिन्द के लिये बोलता हूँ तो आँख व सिर की यौगिक क्रियाएँ होती हैं। लेटे-लेटे मंत्र जप करने पर पूरे शरीर में यौगिक क्रियाएँ शुरू हो जाती हैं।

गुरुदेव की कृपा से बहुत आनन्द आ रहा है व हल्का महसूस हो रहा है।

रघुनाथ सिंह
प्रधान अधिकारी,
भारतीय तट रक्षक
(अश्विनी हॉस्पीटल, मुम्बई)

सिद्धयोग का कमाल-प्रत्यक्ष परिणाम

गुरुदेव को कोटि-कोटि प्रणाम। मैं अश्विनी हॉस्पीटल में मार्च 2017 में एडमिट हुआ था। वहाँ सिद्धयोग की जानकारी दी जाती है। मैंने भी अप्रेल 2017 में सिद्धयोग शुरू किया मुझे **Chronic Myeloproliferative Neoplasm Essential** की समस्या थी। अप्रेल 2017 में मेरी प्लेटलेट्स 5,07,000 थी। मैं छह महिने से ध्यान कर रहा हूँ, कोई स्वतः योग नहीं हुआ लेकिन मेरे सारे कार्य गुरुदेव की कृपा से होते हैं। मैं जो भी कार्य करता हूँ, गुरुदेव को बताकर करता हूँ और मेरा कार्य पूर्ण हो जाता है।

अब मैं Re cat (पुनः बोर्ड) के लिए एडमिट हुआ और रिपोर्ट में प्लेटलेट्स 3,50,000 जो सामान्य हो गई है। अभी कुछ दिन पहले ही मुझे पहली बार बहुत तेज स्वतः यौगिक क्रियाएँ भी शुरू हो गई है। ध्यान के बाद मुझे बहुत हल्का व शांति महसूस होती है। ऐसे समर्थ सद्गुरुदेव को बारंबार नमन् करता हूँ।

-गंगासिंह
LWK , DSC
अश्विनी हॉस्पीटल, मुम्बई,

-:सद्गुरुदेवः-

-सर्वोत्तम दाता हैं

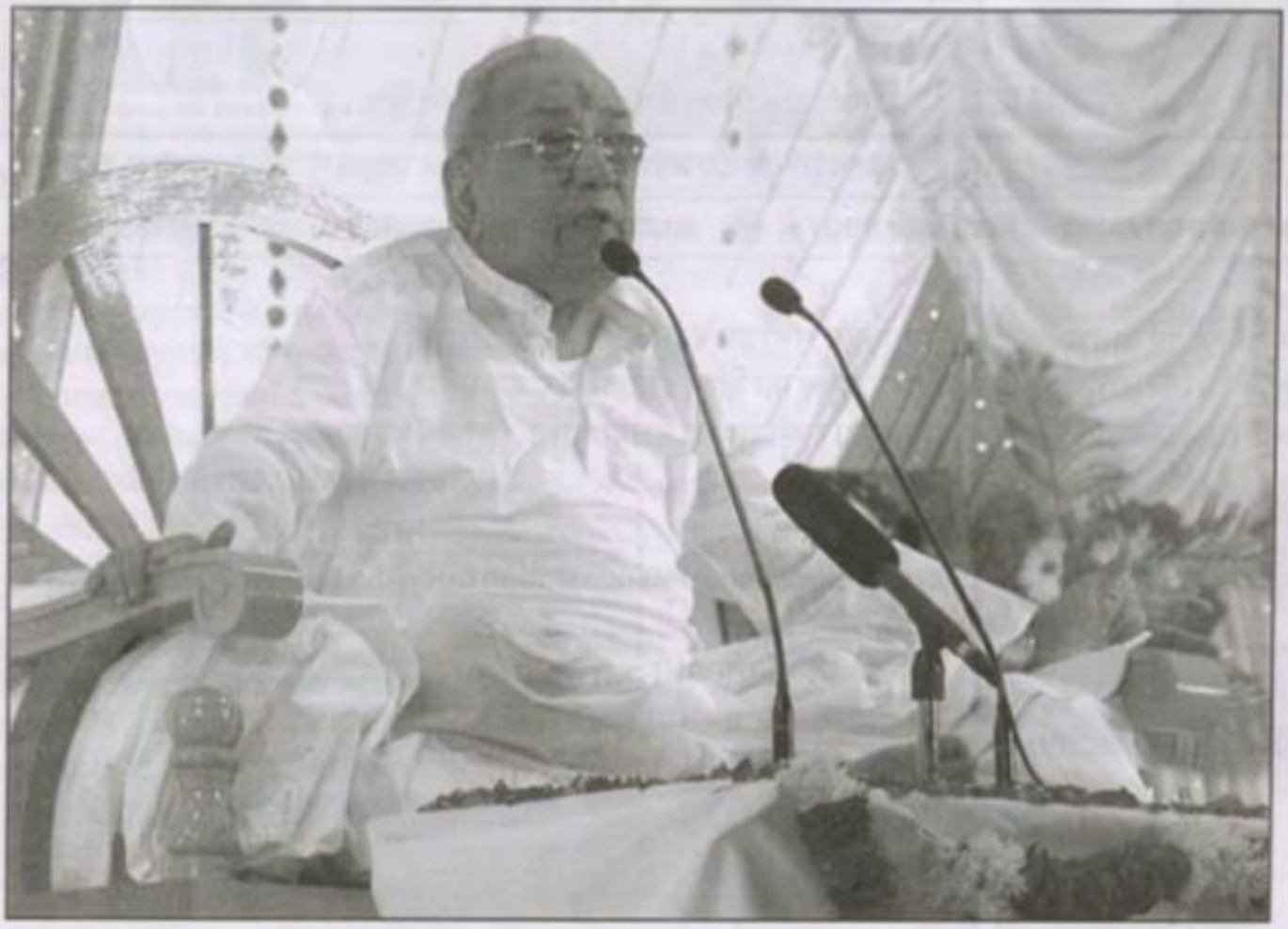

यह संसार का साधारण नियम है, देवता भी बिना माँगे अपने-आपको नहीं दे सकते। शाश्वत भी मनुष्यों के पास अनजाने में नहीं आता। हर भक्त अपने अनुभव से जानता है कि परमात्मा अपने अनिर्वचनीय सौंदर्य और आनंद के साथ तभी प्रकट होते हैं जब हम उनका आह्वान् करें।

-श्री अरविन्द, लाल-कमल पृष्ठ-58

कुण्डलिनी जनित ध्यान कैसे करें?

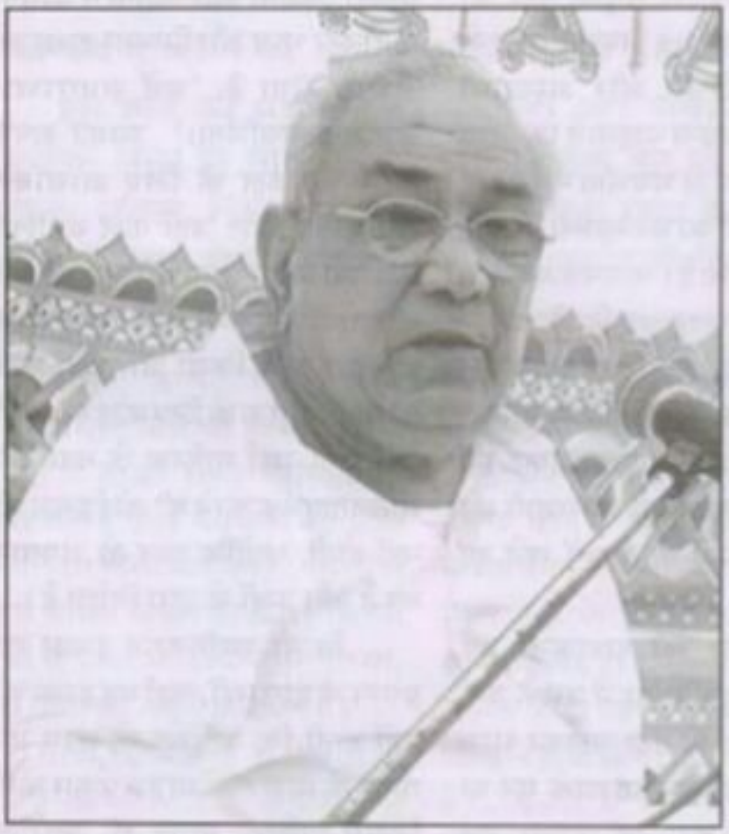

अब ध्यान जो है उसके लिए एक ही शर्त है कि सुबह नहा धोकर सूर्योदय से पहले-पहले हो तो बहुत ही अच्छा। नहाने की सुविधा नहीं है तो बिना नहाए भी कर सकते हो। किसी पर बैठ जाइए, जमीन पर बैठ जाइए, आसन बिछा लीजिए, किधर ही मुँह कर लीजिए, कोई फर्क नहीं पड़ता। भगवान् कोई एक ही दिशा में नहीं बैठा है वो तो सर्वत्र है, सर्वज्ञ है और शेर की खाल बिछाओ, कि कुशासन बिछाओ, कि मृग की खाल बिछाओ जो उसमें बैठा है भगवान् घुसा हुआ जो आपको उपर बैठते ही मिल जाएगा। ये तो सब कर्म काण्डियों के टोटके हैं, मेरे को इसमें कोई सच्चाई नजर नहीं आती।

कहीं बैठ जाइए और नाम जप चालू है, आँख बंद कर लो और गुरु को यहाँ (आज्ञाचक्र पर) देखो, अब क्या होगा उससे? जो मैं आपको नाम बताऊँगा वो चेतन मंत्र है, एनलाईटेंड है, उसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है-असंख्य गुरुओं की कमाई है उसमें। मैं तो दोनों हाथों से लुटाने निकला हूँ। उस नाम जप से आपकी कुण्डलिनी जाग्रत हो जाएगी। अब कुण्डलिनी शक्ति, रीढ़ के आखिरी-आखिरी हिस्से में रहती है-साढे तीन आटे (फेरे, कुण्डलियाँ) लगाकर के, सुषुप्ति में रहती है, अचेतन है। जब वो जाग्रत हो जायेगी, चेतन हो जायेगी तो सीधी ऊपर उठकर सुषुम्ना में खड़ी हो जायेगी। अब वो यहाँ सहस्रार में पहुँचना चाहेगी क्यों कि शिव और शक्ति का मिलन ही तो मोक्ष है, पृथ्वी तत्त्व का आकाश तत्त्व में लय होना ही मोक्ष है। अब वो ऊपर कैसे बढे? मैंने आपको पहले बताया कि ये भौतिक सांइस से भी करेक्ट सांइस है, भौतिक सांइस तो अब अधुरी है ये पूर्ण सांइस है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

"सिद्धयोग में पाँच वायु और उनके कार्य"

अब जिस तरह से आप रॉकेट देखते हो, ऊपर जाता है, नीचे स्पार्क होता है, झटका लगता है तो ऊपर खिसकता है उसी प्रकार कुण्डलिनी को भी खिसकाया जायेगा तो योग में मोटे तौर से पाँच प्रकार के वायु कहे हैं -**प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान**। हरेक वायु का शरीर के अलग-अलग हिस्सों में काम होता है। अपान वायु जो है नाभी के नीचे के डिस्चार्जेज को शरीर से बाहर फेंकता है, गन्दगी को बाहर फेंकता है। **अपान वायु** जब तक ऊपर नहीं उठेगा तो कुण्डलिनी ऊपर नहीं उठेगी क्यों कि कुण्डलिनी रीढ़ की हड्डी के आखिरी हिस्से में है तो योग में तीन प्रकार के बन्ध लगते हैं। जिस योग की बात मैं कर रहा हूँ उसने सांइस वालों के लिए बड़ी समस्या खड़ी कर दी, उसका संचालन कुण्डलिनी स्वयं करती है। वह चेतन सत्ता मनुष्य का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने वश में कर लेती है, और सारी यौगिक क्रियाएँ स्वयं करवाती है। साधक उसको न ही रोक सकता है तथा न ही कर सकता है। वो तो आँख बन्द किए यहाँ (आज्ञाचक्र पर) गुरु को देख रहा है, दृष्टा भाव से देख रहा है कि क्या हो रहा है ? जो मूवमेन्ट हो रहा उसको रोक नहीं पाता।

मैंने हजारों इंजीनियर्स, डॉक्टर्स को, विज्ञान के लोंगों को कहा अगर आप सच्चाई जानना चाहते हो तो आओ, और सबको हो गया। लाखों के हो रहा है तो ये योग पातंजलि योग में वर्णित योग है भारतीय योग दर्शन त्रिविध ताप शान्त करने की बात करता है-आदि दैहिक,आदि भौतिक, आदि दैविक। अंग्रेजी भाषा में फिजीकल डिजीज,मेन्टल डिजीज और स्पिरिचुअल डिजीज। इस से बाहर कोई बीमारी नहीं होती तो कोई भी रोग ऐसा नहीं है जिसे भारतीय योग दर्शन में क्योर करने की शक्ति नहीं है। आज जो योग करवाया जा रहा है वह तो शारीरिक कसरत है। उससे तो **ऑर्थोपेडिक सर्जन** जो **फिजियोथेरेपी** बताते हैं वो ज्यादा करेक्ट है, इन योग सिखाने वालों से।

वो योग नहीं है, योग का संचालन कुण्डलिनी करेगी, कुण्डलिनी उन्हीं अंगों का मूवमेन्ट कराएगी जो अंग बीमार है, प्रोपरली फंक्शन नहीं कर रहे हैं, इसलिए हरेक साधक को अलग-अलग योग होता है। किसी के कोई गड़बड़ है, किसी के कोई गड़बड़ तो उस सिस्टम को, फिजीकल बीमारियों को ठीक करने के लिए कुण्डलिनी योग करवाती है और जब तक वो सिस्टम बिल्कुल स्वस्थ नहीं हो जाता है, तब तक वो ऊपर नहीं बढती है। तो इस प्रकार आप ध्यान करोगे, ध्यान की स्थिति में योग होगा, चलते-फिरते नहीं होगा, आपकी इच्छा के विपरीत कुछ काम नहीं होगा, घबराने की जरुरत नहीं है। जब योग होता है तो देखने वाला घबरा जाता है, पता नहीं इसको क्या तकलीफ होती होगी ? मगर जिसको होता है उसको कुछ ऐसा आनन्द आता कि आप कल्पना नहीं कर सकते। असली जीवन तो यहीं से शुरू होता है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

"सिद्धयोग-बंध, प्राणायाम, सुषुम्ना, सहस्रार"

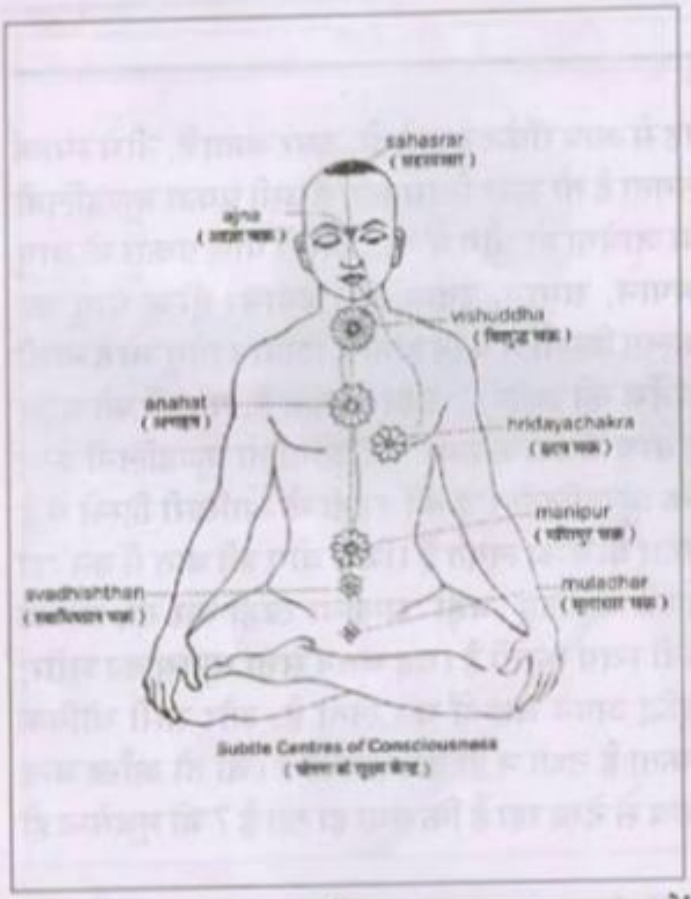

इस प्रकार आप ध्यान करोगे नाम जप करोगे तो पहला बन्ध मूलाधार में लग जाएगा। अब अपान वायु नीचे नहीं जा सकेगा तो ऊपर उठना शुरू हो जाएगा। खास तौर से रीढ़ की हड्डी की कसरत करवाई जाती है क्यों कि सुषुम्ना के अन्दर से उसको (कुण्डलिनी) जाना है और यहाँ (सहस्रार) से सुषुम्ना जुड़ी हुई है। सुषुम्ना में एक रोम भी ऐसा नहीं है जो उससे जुड़ा हुआ नहीं हो, सुषुम्ना से एक रोम को आप खैंचोगे, दर्द होता है, दर्द यहाँ (सहस्रार) होता है और कहीं नहीं होता।

डॉक्टर रीढ़ की हड्डी में इंजेक्शन लगा देते हैं नीचे का पोर्शन काट दो दर्द नहीं होता है,क्यों कि यहाँ (सहस्रार) से डिसकनेक्ट हो गया तो इस प्रकार रीढ़ की हड्डी को उसी ऐंगल से मोड़ा जाएगा जिस ऐंगल से उस सिस्टम को ठीक होना है। डाइबिटीज वाले को अलग योग होता है, अस्थमा वाले को अलग होता है, गठिया वाले को अलग होता है और जब तक वो अंग बिल्कुल स्वस्थ नहीं हो जाता तब तक योग होता रहेगा और इस प्रकार पहला बंध लग जाएगा मूलाधार में, खास तौर से रीढ की हड्डी की एक्सरसाइज होगी, मगर साथ-साथ सारा शरीर भी मूवमेन्ट करेगा, क्योंकि इण्टरलिंक्ड है पूरा सिस्टम। ज्यों ही कुण्डलिनी नाभी से ऊपर गई तो दूसरा बंध लग जाएगा, ऑटोमेटिकली लगेगा आप चाहकर वो बंध लगा ही नहीं सकते। आप चाहे कितने ही मोटे हो, नाभी रीढ़ की हड्डी से चिपक जाएगी, उसे उड़ियान बंध कहते हैं। उसके बाद में वो ऊपर उठती-उठती कुण्डलिनी, जब यहाँ से ऊपर उठ जाएगी कण्ठ कूप कहते है इसको तो तीसरा बंध लग जाएगा इसे कहते हैं जालन्धर बंध।

अब इसके बाद यहाँ से ऊपर के पोर्शन (भाग) की ऊपर के हिस्से की रीढ़ की कसरत पोसिबल नहीं है,संभव नहीं है तब फिर प्राणायाम शुरू होता है, वह भी स्वतः ही, प्राणायाम भी सैकड़ों प्रकार के होते हैं। योग की पुस्तकों में बहुत थोड़े दिए है, आसन भी बहुत थोड़े से दिए हुए हैं। सैकड़ों प्रकार के अलग-अलग आसन होते हैं। अलग-अलग अंग विशेष की बीमारी को ठीक करने के लिए।

जब प्राणायाम शुरू हो जाता है, प्राणयाम जब पूर्ण कुम्भक हो गया तो कुण्डलिनी आज्ञाचक्र से ऊपर चली जाती है, फिर साधक समाधिष्थ हो जाता है। सबको यह योग होना जरुरी नहीं है। अगर शारीरिक दृष्टि से आप फिट हो तो कोई योग नहीं होगा। अगर कोई थोड़ी सी भी गड़बड़ है तो इसको ठीक करने के लिए योग होगा। इस प्रकार जो योग होगा उससे मनुष्य के सारे शारीरिक रोग ठीक हो जाएंगे। व्यावहारिक रूप से हो रहे हैं। कथा वाचने नहीं निकला हूँ।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

योग में अनुशासन

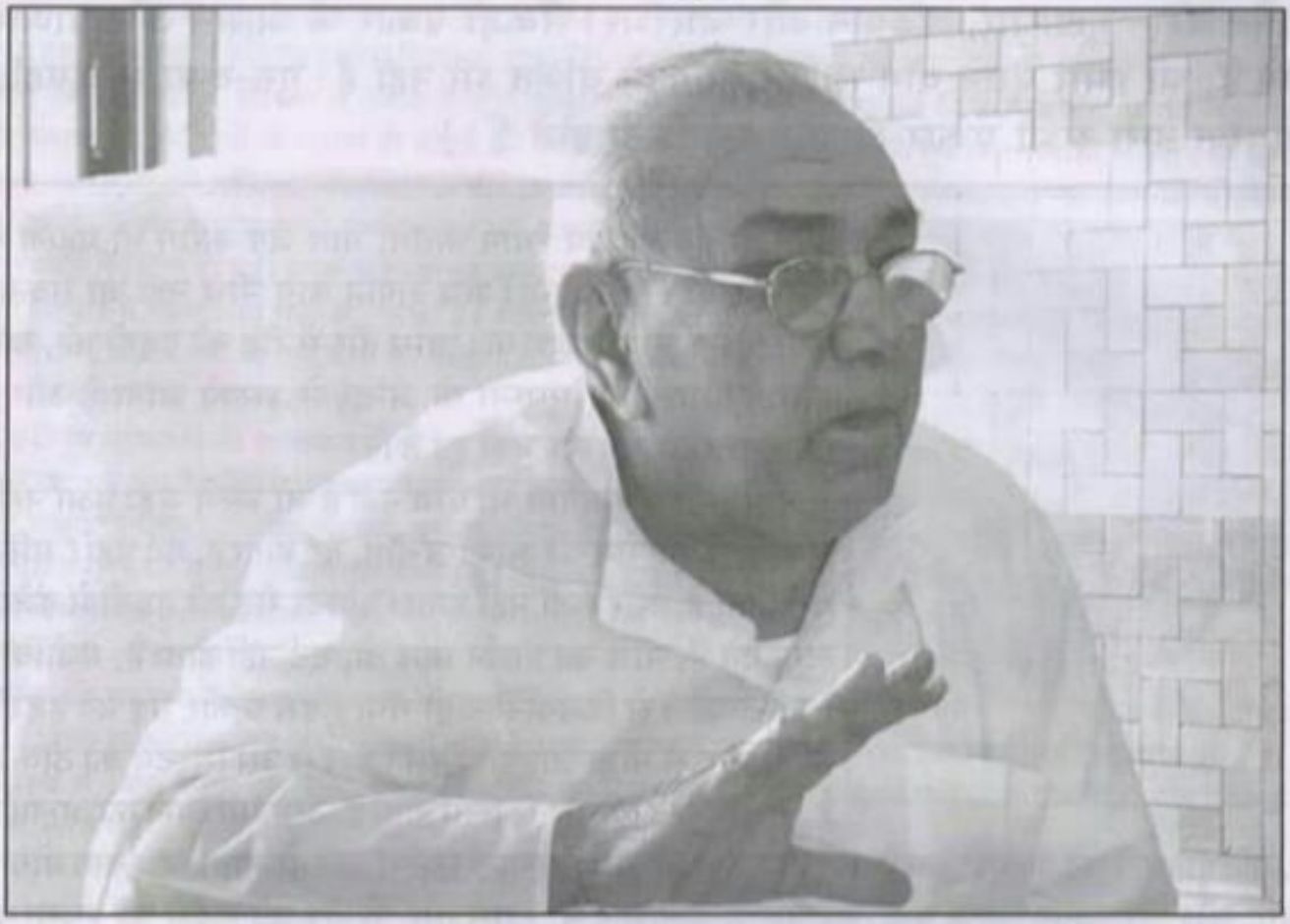

पातंजलयोग दर्शन में महर्षि पातंजलि ने 195 सूत्र में **कैवल्य पद** तक पहुँचने की बात कही है। समर्थ सद्गुरुदेव अपने प्रवचन में हमेंशा ही यह बात कहते थे। 195 सूत्रों में पहला है अनुशासन के बारे में और दूसरा है चित्त की वृत्तियों का निरोध। योग की यहीं से शुरूआत होती है। इसलिए योग रत साधक को अपने जीवन में अनुशासन रखना बहुत जरूरी है।

पहला सूत्र-**अथ योगानुशासनम्**-इस सूत्र में महर्षि पातंजलि ने योग के साथ अनुशासन पद का प्रयोग करके योग शिक्षा की अनिवार्यता सूचित की है और अथ शब्द से उसके आरम्भ करने की प्रतिज्ञा करके योगसाधना की कर्तव्यता सूचित की है। इसलिए साधक को अपने सद्गुरुदेव के आदेश की पालना करते हुए, उनके कहे अमर वाक्यों पर अडिग रहते हुए, अनुशासन में रहकर आराधनाशील रहना चाहिए।

दूसरा सूत्र-**योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः**। चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है।

❖❖❖

।।ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः।।

दिव्य ज्योति

संसार का अन्धकार उस दिव्य ज्ञान ज्योति के उदय हुए बिना हटना असंम्भव है। पहला दीपक जलना ही कठिन होता है, इसके बाद तो दीपक से दीपक जलने की प्रक्रिया के अनुसार पूरे विश्व में प्रकाश फैलने में देर नहीं लगेगी। जब यह मधुर स्वर लहरी संसार के वायु मण्डल में तरंगित होने लगेगी तो आम प्राणी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।

इस प्रकार यह दिव्य प्रकाश, प्रकाश की गति से भी तेज, पूरे ससारं में फैल जावेगा। प्रतिरोधक शक्तियाँ संभल भी नहीं पाएंगी। परंतु इसका यह मतलब नहीं कि वे बिना विरोध के शांत हो जाएंगी। उस परमसत्ता को संसार से उनका सफाया करना है। अतः उस विकृति के सफाये के लिए अंधेरे और उजाले का संघर्ष अनिवार्य है। इसके बिना पूर्ण शांति असंभव है। यह क्रम अनादिकाल से चला आ रहा है। पाप का अंत कुरुक्षेत्र में ही होता है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
'आध्यात्मिक सत्संग' शीर्षक से, सिद्धयोग
पृष्ठ-153

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

''नाम (मंत्र) का नशा चढ़ जाएगा तो इन भौतिक नशों से छुट्टी हो जाएगी। नशा छूटता है, वृत्ति परिवर्तन से।''

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

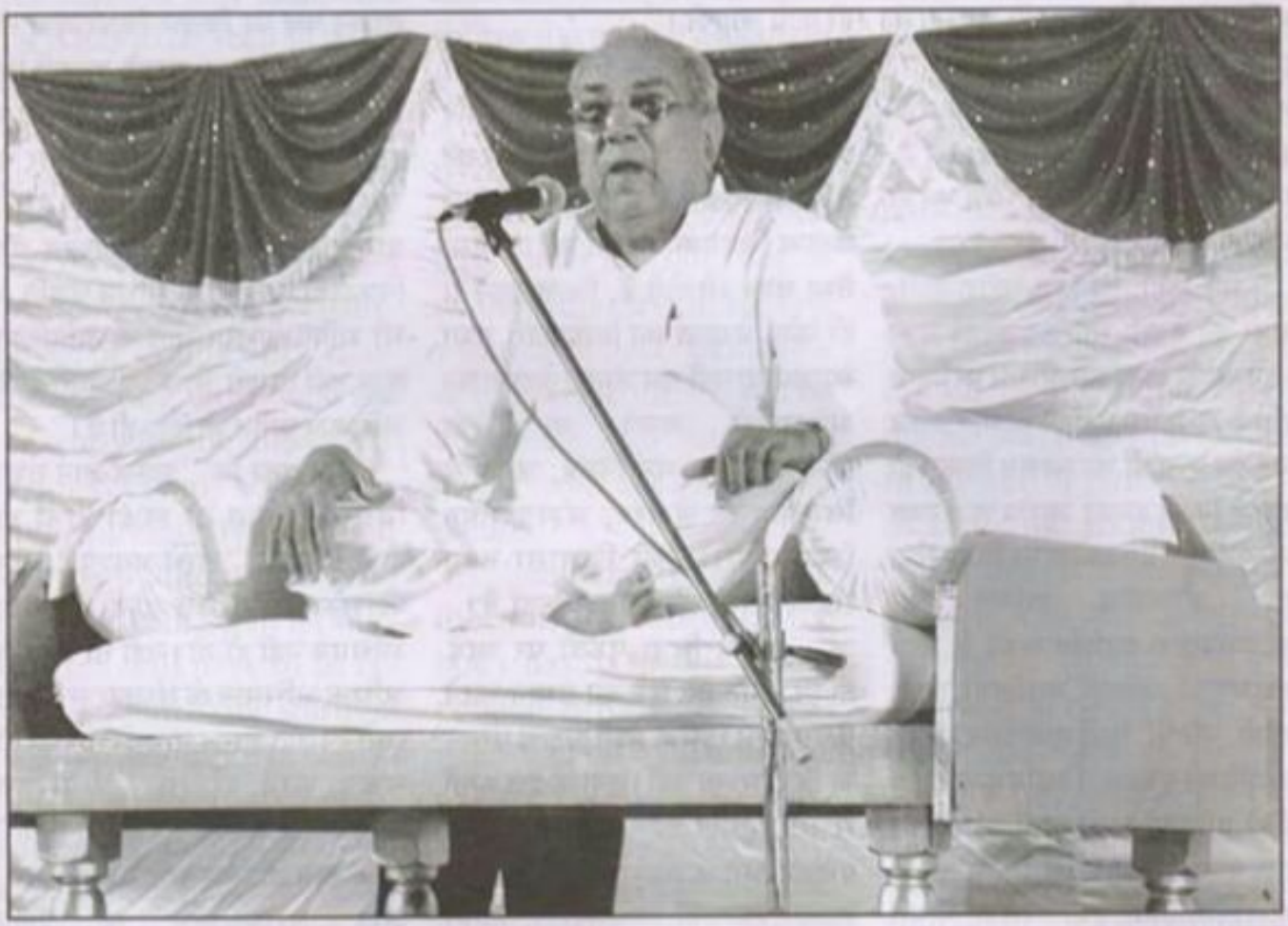

"योग"

वेदरूपी कल्पतरू का अमर फल है।

हे सत्पुरूषो ! इसका सेवन करो।

योग साधना के संबंध में गोरक्षशतक में कहा है-

द्विजसेवितशाखास्य श्रुतिकल्पतरोः फलम्।
शमनं भवतापस्य योगं भजत सत्तमाः।।

गोरक्षशतक-6

"वेदकल्पतरू है। जिस तरह कल्पतरू की शाखाएँ पक्षियों के आश्रय स्थल हैं, ठीक इसी तरह द्विजों द्वारा वेद की शाखाओं का परिशीलन किया जाता है। वेदरूपी कल्पतरू का अमर फल योग है। हे सत्पुरूषो ! इसका सेवन करो। यह योग संसार के त्रिविध तापों (आदि भौतिक, आदि दैहिक व आदि दैविक) का शमन (नाश) कर देता है।"

समर्थ सद्गुरुदेव श्रीरामलालजी सियाग

संदर्भ- 'मोक्ष के प्रति इस युग का मानव उदासीन क्यों', शीर्षक से

समर्थ सद्गुरुदेव द्वारा बताये गए संजीवनी मंत्र के सघन जप व नियमित ध्यान से अमर फल का स्वाद चखा जा सकता है।

अमृतवाणी

।।ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः।।

पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

''परब्रह्म''-माया रहित जगत्

''क्योंकि यह अलौकिक (अति अद्भुत) त्रिगुणमयी मेरी माया (योगमाया) बड़ी दुस्तर है। जो पुरुष मेरे को ही निरन्तर भजते हैं, वे इस माया का उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसार से तर जाते हैं।'' इस युग के धर्माचार्य लौकिक समस्याओं का समाधान करने में समर्थ नहीं है, अलौकिक समस्याओं के समाधान की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। मोक्ष प्राप्ति के लिए छह चक्रों और तीनों ग्रन्थियों का भेदन करने के साथ-साथ आज्ञाचक्र भेदन जैसा सर्वाधिक कठिन कार्य करने के बाद सच्चिदानंद घन (सत् चित् आनंद) परब्रह्म के जगत् में प्रवेश करना पड़ता है।

उस जगत् में माया नाम की कोई वस्तु नहीं है, परन्तु फिर भी प्रभु का दिव्य आनंद साधक को मस्त बना देता है। साधक उस आनंद के कारण सुध-बुध भूल जाता है। अगर गुरु न चेतावे तो वह आनंदमय कोश और चित्मय कोश का भेदन करके सत्मय कोश अर्थात् सहस्रार में पहुँचने का प्रयास ही नहीं कर सकता। मेरे कई साधक काफी समय तक उसी स्थिति में स्थिर रहे। मेरे चेताने पर ही उन्हें सुध आई, वे बोले कि ''गुरुजी, आनंद भी कैसा है कि संसार की सुध बुध भुला देता है। आप नहीं चेताते तो न मालूम कितने समय और इसी स्थिति में अटके रहते।''

'मोक्ष' मात्र कुण्डलिनी के सहस्रार में पहुँचने पर ही होता है। ''

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

संदर्भ- 'मोक्ष के प्रति इस युग का मानव उदासीन क्यों' शीर्षक से

!! गुरुदेव का आदेश !!

"आप अपने विवेक से जो ठीक समझो, वो करना।

भविष्य में कोई भी व्यक्ति मेरे या गुरुदेव के नाम से कुछ भी कहे, विश्वास मत करना। आपको दिशा-निर्देश हो और वह भी ध्यान के समय, उसी को सत्य मानना।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
8 सितम्बर 1994

"गुरु आज्ञा ही सर्वोपरि"

"जिसे आप राधा, सीता, पार्वती आदि के नाम से पूजते हो, हमारे योगियों ने उसे कुण्डलिनी कह दिया। वो सैक्रम (मूलाधार) में साढ़े तीन आंटे (फेरे) लगाकर, दुम को अपने मुँह में दबाकर, डोरमेंट पोजिशन में रहती है, सुषुप्ति में रहती है। अगर प्रोपर (वास्तविक) गुरु है तो ही जगती है। हठयोग से अगर छेड़छाड़ करोगे तो वो आपको "पागल" भी कर सकती है....."मृत्यु" भी हो सकती है।

इस प्रकार आपको केवल नाम जपना है और ध्यान करना है और मुझे यहाँ (आज्ञाचक्र) देखना है। मंत्र एक ही गुरु का चलेगा। आपके प्रोफेशनल (व्यावसाहिक) गुरु है तो वो इसके साथ नहीं चलेगा और ध्यान मेरा करना पड़ेगा।"

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग
30 जुलाई 2009 के विशाल कार्यक्रम

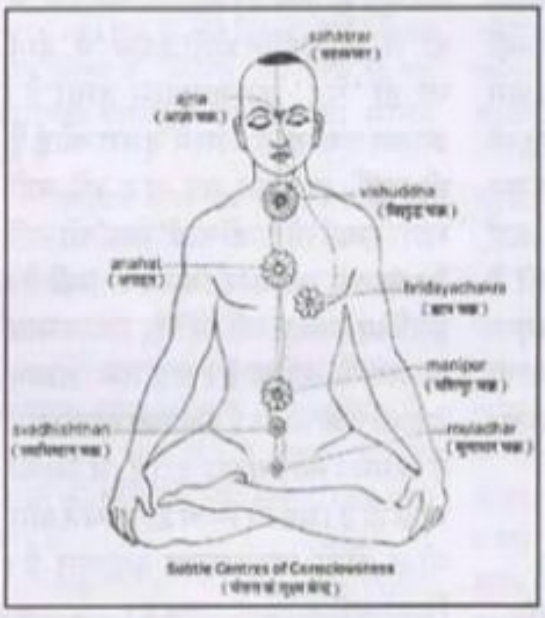

मातृशक्ति कुण्डलिनी जो कि, परमात्मा की पराशक्ति है, इसको हठयोग से जाग्रत किया जाए तो साधक पागल हो सकता, यहाँ तक कि मृत्यु भी हो सकती है। जबकि वास्तविक गुरु की आज्ञा से जाग्रत होने पर कुण्डलिनी साधक का आनंदमय सर्वांगीण विकास करते हुए, उसे सभी कष्टों से मुक्त कर कैवल्य पद तक पहुँचा देती है। आखिर ऐसा क्यों? साधक के लिए एक गंभीर चिंतन का विषय है!

❖❖❖

मंत्र का रहस्य

"मंत्र विद्या हमारे देश में आदिकाल से चली आ रही है। शब्द से सृष्टि की उत्पत्ति के सिद्धांत पर ही हमारे ऋषियों ने मंत्रों की रचना की है। शब्दब्रह्म से परब्रह्म की प्राप्ति का हमारे दर्शन का सिद्धांत पूर्णरूप से सत्य है। यह हमारे दर्शन का उच्चतम दिव्य विज्ञान है। मंत्र विद्या का पतन नकली गुरुओं के कारण हुआ।

बिना गुरु दीक्षा के कोई मंत्र सिद्ध हो ही नहीं सकता। मेरे माध्यम से जो परिवर्तन मानवता में आ रहा है, वह मात्र मंत्र शक्ति का ही प्रभाव है। शब्दब्रह्म से परब्रह्म की प्राप्ति के ही सिद्धांत को, मैं पूर्ण सत्य प्रमाणित कर रहा हूँ।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

संदर्भ-"बाइबिल की भविष्यवाणियाँ" पुस्तक पृष्ठ-72

ईश्वरीय सत्ता का पग-पग पर पथ प्रदर्शन

"मुझे भी संसार में सनातन धर्म के लिए कुछ करने का आदेश है, उसका पावन संदेश संसार के लोगों तक पहुँचाना है, इसीलिए सेवाकाल समाप्त होने से छह साल पहले, सेवानिवृत्त होने के आदेश दे कर, अपने काम में लगा दिया है। मैं एक सेवा छोड़कर दूसरी सेवा में लग गया हूँ। जो कुछ मुझे करना है, वह पहले से सुनिश्चित है। इस संबंध में सारी स्थिति मेरे सामने स्पष्ट है। मुझे मेरा पथ पग पग पर आज भी प्रदर्शित किया जा रहा है। मुझे जो करना है उसके लिए मैं पूर्ण रूप से आस्वस्त हूँ।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
22 फरवरी 1988
सिद्धयोग बड़ी पुस्तक पृष्ठ-127 पर

।।ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः।।

अमृतवाणी

''मैं तो, मानव मात्र में जो एक ही शाश्वत-अविभाज्य सत्ता कार्य कर रही है, उसी की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार करवाने के लिए ही विश्व में निकला हूँ। आज विश्व में जितने भी धर्म, जिस स्वरूप में चल रहे हैं, मैं उस संकीर्ण दायरे में कैद होने को तैयार नहीं हूँ। मेरे मिशन का दार्शनिक ग्रंथ-'**मनुष्य शरीर**' है। मैं मात्र इसी ग्रंथ को पढ़ना सिखाता हूँ। अतः जब तक यह ग्रंथ संसार में रहेगा, तब तक मेरा मिशन चलता ही रहेगा। मेरे रहने या न रहने से भी इस मिशन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, क्योंकि आज भी मैं हजारों शिष्यों को चेतन कर चुका हूँ।

यह शक्ति उनमें जो सबसे उपयुक्त होगा, उसके माध्यम से अपना कार्य सुचारु ढंग से निरन्तर चालू रखेगी। यह एक ऐसी शक्ति सिद्ध नाथयोगियों ने प्रकट कर दी है, जिसे विश्व की कोई भी शक्ति नहीं दबा सकेगी क्योंकि इसका उपयोग मात्र सृजन में ही हो सकता है विध्वंस में नहीं, इसलिए मैं बिना किसी प्रकार की झिझक के हर धर्म और हर जाति के लोगों को दीक्षा दे रहा हूँ।''

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

संदर्भ- '[illegible]' शीर्षक से

"मेरी तस्वीर नहीं मरेगी, जब तक ये दुनिया रहेगी"

"एड्स क्योरेबल के 50 हजार पोस्टर लगा दिये। भारत सरकार को मालुम है, अच्छी तरह से। बीकानेर में मेरे पर मैजिक एक्ट की एफ आई आर करवा दी कि मैं मैजिक करता हूँ। मैंने कहा हाँ मैजिक करता हूँ, पर मैजिक तो दो तरह के होते हैं- White (सफेद) और Black(काला)। Black क्या कर रहा है, उसकी ही आपको जानकारी है, मुझे Black Magician (ब्लैक मैजिशियन) क्यों मान लिया। मैं जो दे रहा हूँ, उससे कई बीमारियाँ खत्म हो रही हैं, शांति मिल रही है, सब रोगों से मुक्त हो रहे हैं, नशों से मुक्त हो रहे हैं तो अब वो बोलते नहीं हैं, अब चुप हो गये। कहते हैं कि 81 वर्ष का तो हो गया। साल दो साल और जियेगा, मर जाएगा, पीछा छूट जाएगा। मैंने कहा मरना तो तुमको भी पड़ेगा, मुझको भी पड़ेगा। मगर मेरी तस्वीर नहीं मरेगी। मेरी तस्वीर से जो योग हो रहा है, वो नहीं मरेगी, कभी नहीं मरेगी। जब तक ये दुनिया रहेगी। ये परिवर्तन मुझमें आ गया Innocent way (सहज रूप) में आ गया। 1969 में गायत्री (निर्गुण निराकार) की सिद्धि हुई और 1984 में कृष्ण (सगुण साकार) की सिद्धि हो गई।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

ये हैं Black Magic & White Magic के प्रभाव-

काला जादू जहाँ दुनिया में कुछ चमत्कार दिखाकर, ठगने, हिंसा और पतन की ओर ले जाता है। उसका अंत बुरा ही होता है। पहले तो कुछ भला करने का प्रलोभन दिया जाता है; लेकिन आखिर में परिणाम बुरा ही निकलता है। इसकी जानकारी सारी दुनिया को है।

लेकिन एक White Magic भी होता है जिसकी जानकारी दुनिया को नहीं है, जो मनुष्य को सब कष्टों, आडम्बरों व नशों से मुक्त करके-मनुष्यत्व से देवत्व और अतिमानत्व की ओर ले जाता है। मनुष्य स्वयं परमात्मा है, इस निज स्वरूप का ज्ञान करा देता है। यदि सफेद जादू (White Magic) का करिश्मा देखना चाहते हो तो सद्गुरुदेव द्वारा दिये जाने वाले संजीवनी मंत्र का सघन जप व उनकी तस्वीर का ध्यान करके देखो !

सुख-दुःख की अनुभूति ही जीवन है।

''मुझे किसी भी घटना के घटने का निश्चित समय नहीं बताया जाता था। केवल आगे घटने वाली घटना का सही दृश्य टेलीविजन की तरह दिखा दिया जाता था। ऐसी घटनाएँ, पूर्व जन्म तथा इस जन्म, दोनों से संबंधित होती थी। जिज्ञासावश मैंने उन घटनाओं का समय जानने के लिए ध्यान को केन्द्रित करके आराधना प्रारम्भ कर दी।

चन्द दिनों में उत्तर मिला कि जो होना है, पूर्व निश्चित है उसके लिए समय और शक्ति का दुरुपयोग क्यों कर रहे हो? **सुख-दुःख की अनुभूति ही तो जीवन है।** जीवन में होने वाली सभी बातें स्पष्ट मालुम होने पर सुख-दुःख की अनुभूति ही खत्म हो जायेगी। इस प्रकार जीवन पूर्णरूप से नीरस हो जायेगा। इस प्रकार उस गुलाबी पर्दे की स्थिति हो जायेगी। अतः यह निरर्थक प्रयास क्यों कर रहे हो? अतः मैंने निश्चित समय मालूम करने का प्रयास बंद कर दिया। संसार एक स्वप्न है। **दुःख-सुख की अनुभूतियाँ मात्र त्रिगुणमयी माया का खेल है।** इस संसार में विचरण करते हुए कोई भी जीव इसके प्रभाव से वंचित नही रह सकता।

ईश्वर की इस माया से कोई भी प्राणी बच नहीं सकता। परन्तु जो जीव संत सद्गुरु की शरण में चला जाता है, उसके बंधन धीरे-धीरे कटने लगते हैं। माया की पकड़ से वह जीव एक ही जन्म में छुटकारा पा कर आज्ञाचक्र को भेद कर **सत्तलोक** में अनायास ही प्रवेश कर जाता है। इस तरह के जीव को संसार के सुख-दुःख अधिक प्रभावित नहीं कर सकते हैं। क्योंकि वह जीव माया के क्षेत्र को लांघ जाता है। इसलिए माया भी उसकी चेरी बनकर उसको रोकने के स्थान पर ऊपर की तरफ आरोहण करने में मदद करती है।

संत सद्गुरु द्वारा प्राप्त किए हुए प्रकाश प्रद शब्द के सहारे वह जीव निर्विघ्न, निरन्तर उस परमसत्ता के नजदीक जाता रहता है। इस प्रकार से संसार के असंख्य जीव, जन्म मरण के चक्र से छुटकारा पा जाते हैं।

-सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

जीते-जागते अखबार

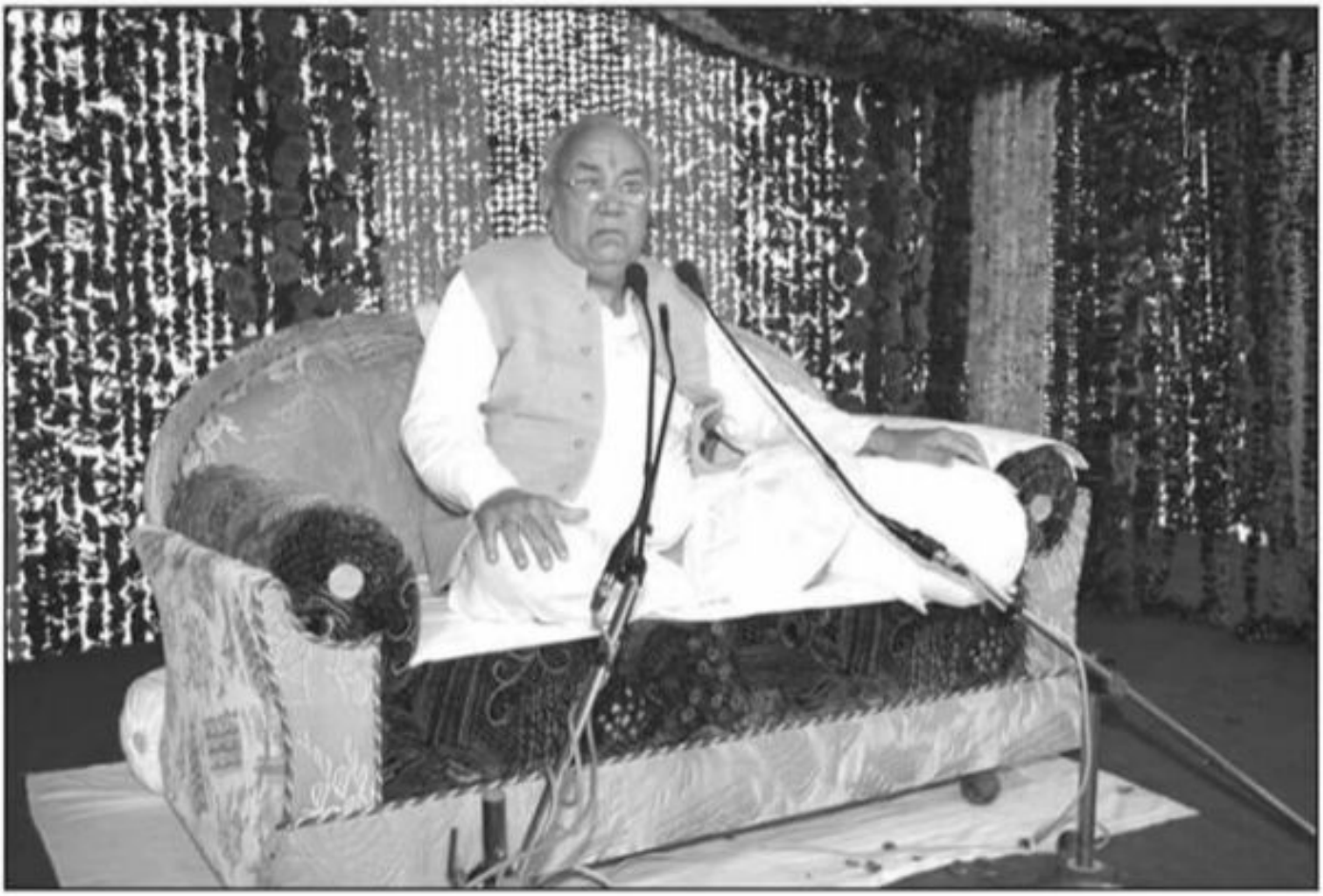

सत्य कभी दबता नहीं है। भगवान् के घर देर है, अन्धेर नहीं। गुरुदेव के प्रिन्ट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया हैं-गुरुदेव के शिष्य, जो इस दर्शन के प्रसार-प्रचार में लगे हुए हैं। एक बार गुरुदेव ने कहा था कि-

"मेरे शिष्य ही मेरे जीते जागते अखबार हैं, जो वर्षों तक मेरा प्रचार-प्रसार करेंगे-कोई पचास साल, साठ साल, सौ साल तक। दूसरे अखबार तो बारह बजे बाद रद्दी की टोकरी में चले जाते हैं।"

अतः आप समस्त साधक गुरु भाई बहनों से विनम्र अपील है कि अपने इस जीते जागते अखबार में वे बातें ही छापें जो सद्गुरुदेव भगवान् ने अपने श्री मुख से कही हैं। उन्होंने जो दर्शन विश्व को दिया है। इस मिशन के जो सिद्धांत हैं उसी के तहत ही प्रचार कार्य करें। अपनी बुद्धि के प्रयास से कुछ जोड़ने या घटाने की जरूरत नहीं है। एक सच्चा यंत्र बनकर, एक पोस्टमैन बनकर गुरुदेव की डाक को जनमानस तक निस्वार्थ और निष्कपट भाव से पहुँचानी है। गुरुदेव द्वारा स्थापित मिशन की मर्यादाओं का पूर्ण ध्यान रखें।

"मेरे लिए तो 'गुरु' ही सर्वोपरि है।"

कुण्डलिनी जाग्रत होकर सहस्रार में पहुँच जाती है, उसी का नाम 'मोक्ष' है। इसमें तीन बंध लगते हैं। मूलाधार (Sacrem) में साढ़े तीन आटे (फेरे) लगाकर, कुण्डलिनी सुषुप्त अवस्था में रहती है। गुरु कृपा से ही कुण्डलिनी जाग्रत होती है। योग में 5 प्रकार के वायु होते हैं-प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान। आजकल जितने भी गुरु हैं, उनका कोई गुरु नहीं है। वे अपने गुरु को साथ नहीं रखते। मैं अपने गुरु को हमेशा साथ रखता हूँ (दादा गुरुदेव के चित्र की ओर इशारा करते हुए), मेरे फोटो के साथ हमेशा मेरे गुरुदेव का फोटो रहता है। **मेरे अंदर जो परिवर्तन आया, मेरे गुरु की कृपा से आया है।** मेरे गुरुदेव शिव के अवतार है। यहाँ (आज्ञाचक्र) पर गुरु का ध्यान करते हैं। **मेरे लिए तो 'गुरु' ही सर्वोपरि है।** मेरी तस्वीर से ध्यान लगता है, राम और कृष्ण की तस्वीर से ध्यान नहीं लगता।

गुरु कब प्रसन्न होता है?

गुरु, धन-दौलत देने या चढ़ावा चढ़ाने से प्रसन्न नहीं होता-**बल्कि साधक जब आराधना में आगे बढ़ता है तो गुरु प्रसन्न होता है।**

धन-दौलत, रुपया-पैसा सब कुछ यहीं रह जाता है, केवल आराधना ही साथ में रहती हैं, आराधना ही साथ जाती है। अब यहाँ (आज्ञाचक्र) पर मुझे देखो और 15 मिनट ध्यान करो। मेरी तस्वीर से ही ध्यान लगता है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
रविवार 3 जून 2012

सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी

"सद्गुरु कृपा से क्षणभर में परिवर्तन"

"लोग जिस कार्य को कई जन्मों में होना असंभव बताते हैं, गुरु कृपा से वह परिवर्तन क्षणभर में हो जाता है। मैंने इस प्रकार के परिवर्तन प्रत्यक्ष होते देखे हैं।

मुझे परमसत्ता ने स्पष्ट बताया है कि जिस प्रकार चावल की हांडी में से एक चावल का दाना लेकर देखने से सभी चावलों के पकने का ज्ञान हो जाता है, उसी प्रकार सभी समर्पित लोगों के अंगीकार और न्याय की प्रार्थना का, एक जैसा प्रभाव होता है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

आध्यात्मिक आराधना करने वाले लोगों को

शारीरिक और मानसिक स्वस्थता जरूरी

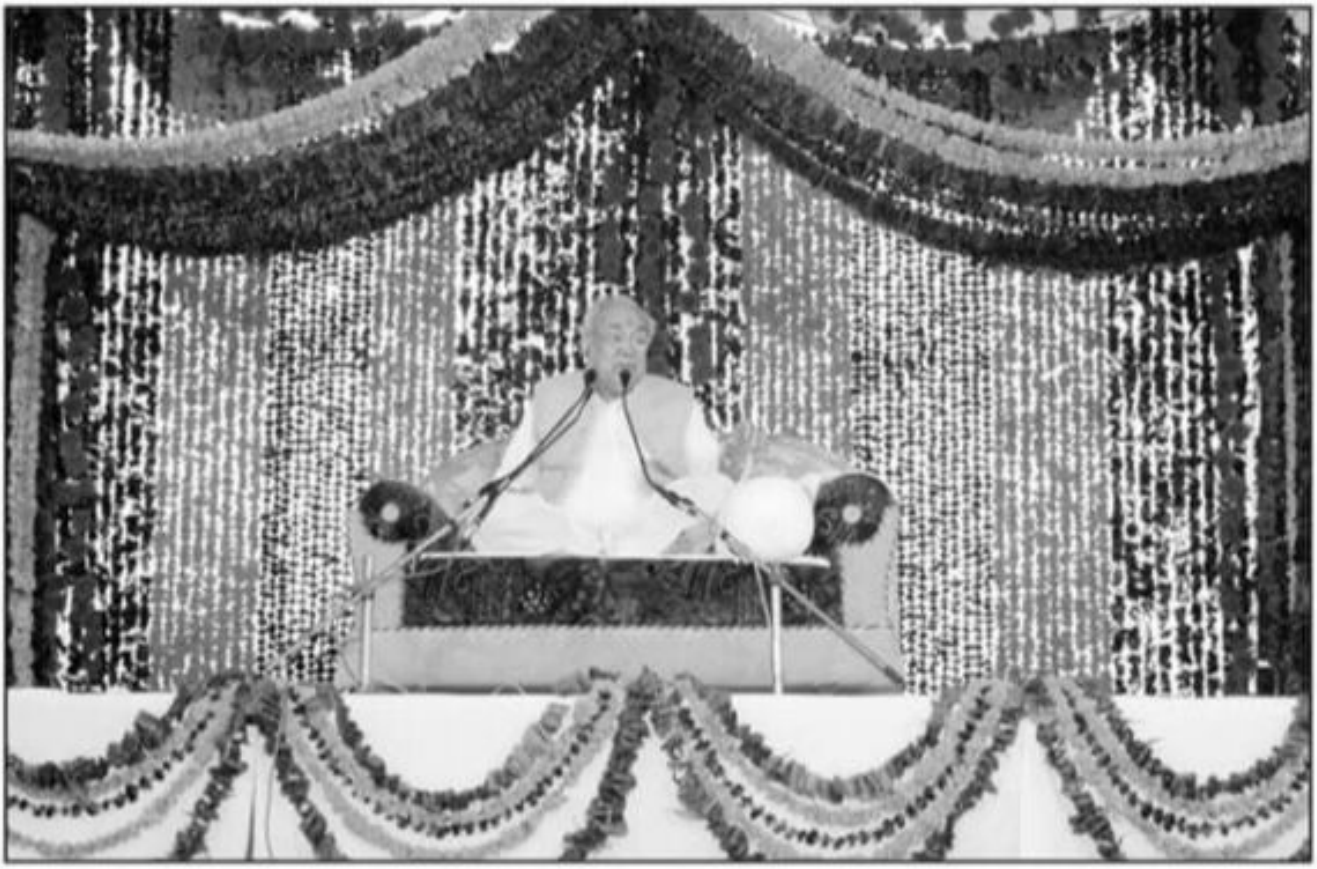

स्वामी विवेकानन्द जी ने एक स्थान पर कहा है कि **"आध्यात्मिक आराधना करने वाले लोगों को शारीरिक और मानसिक दृष्टि से स्वस्थ होना जरूरी है। शारीरिक और मानसिक दृष्टि से कमजोर व्यक्ति इसमें अधिक सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।"** आध्यात्मिक शक्तियाँ इतनी शक्तिशाली होती हैं कि स्पर्श मात्र से वह भयभीत हो जाता है।

आजकल के आध्यात्मिक गुरुओं ने आराधना का समय बुढ़ापे का निश्चित कर रखा है। बुढ़ापे में हर प्रकार की शक्तियों का ह्रास हो जाने के कारण, कई प्रकार की बीमारियाँ मनुष्य को घेर लेती हैं। ऐसी स्थिति में मनुष्य इन कष्टों से जूझने में ही अपनी बची-खुची शक्ति लगाए रखता है।

आराधना के लिए न तो उसके पास समय रहता है और न ही शक्ति। इस युग में आराधना का स्वरूप पूर्णरूप से **बहिर्मुखी** है। अतः कर्मकाण्ड, प्रदर्शन, शब्दजाल, तर्कशास्त्र और अंधविश्वास के सहारे अध्यात्म की शिक्षा देते हैं। यह रास्ता पूर्णरूप से अध्यात्म जगत् से विपरीत दिशा में ले जाता है। अतः परिणाम देने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। **युवाशक्ति** नये-नये ज्ञान को ग्रहण करने की जिज्ञासा रखती है। जो ज्ञान कोई परिणाम नहीं देता, **युवाशक्ति उसे मानने को कभी तैयार नहीं होती।** हमारे सभी **ऋषि** कह गए हैं कि **अन्तर्मुखी** हुए बिना आध्यात्मिक शक्तियों से संपर्क और उसकी प्रत्यक्षानुभूति असंभव है। जिस व्यक्ति के अंदर वह शक्ति चेतन हो चुकी होती है, मात्र वही औरों को चेतन करने की स्थिति में होता है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

सघन आराधना

गुरु से दीक्षा लेने के पश्चात् **सत्यान्वेषी साधक** के लिए आवश्यकता पड़ती है **अभ्यास** की। गुरुपदिष्ट साधनों के सहारे इष्ट के निरन्तर ध्यान द्वारा सत्य को कार्यरूप में परिणत करने के सच्चे और बारम्बार प्रयास को अभ्यास कहते हैं। मनुष्य ईश्वर-प्राप्ति के लिए चाहे कितना ही व्याकुल क्यों न हो, चाहे कितना ही अच्छा गुरु क्यों न मिले, साधना-अभ्यास, बिना किये उसे कभी **ईश्वरोपलब्धि** न होगी। जिस समय अभ्यास दृढ़ हो जाएगा, उसी समय ईश्वर प्रत्यक्ष होगा।

इसलिए कहता हूँ कि हे हिन्दुओं, हे आर्य सन्तानो, तुम लोग हमारे धर्म के हिन्दुओं के इस महान् आदर्श को कभी न भूलो। हिन्दुओं का प्रधान लक्ष्य इस **भवसागर** के पार जाना है-केवल इसी संसार को छोड़ना होगा, ऐसा नहीं है, अपितु स्वर्ग को भी छोड़ना पड़ेगा-अशुभ के ही छोड़ने से काम नहीं चलेगा, **शुभ का भी त्याग** आवश्यक है; और इसी प्रकार **सृष्टि-संसार**, बुरा-भला इन सबके अतीत होना होगा और अन्ततोगत्वा **सच्चिदानंद ब्रह्म** का **साक्षात्कार** करना होगा।

-स्वामी विवेकानंद साहित्य वॉल्यूम -5, पृष्ठ-342

''असंख्य गुरुओं का संचित धन-
''नाम खुमारी''

''एक बात से मैं आस्वस्त हूँ कि आज भी पग-पग पर मुझे गुरुदेव पथ प्रदर्शित करते हैं। गुरु कृपा से मेरे साथ आध्यात्मिक संबंध जोड़ने वाले लोगों को 'नाम-खुमारी' और 'नाम-अमल' का आनंद आने लगता है। मुझमें कुछ भी शक्ति नहीं है। यह गुरुदेव के आशीर्वाद और ईश्वर कृपा से हो रहा है।

मुझे इस संबंध में कोई भ्रम नहीं है। मैं अच्छी प्रकार समझ रहा हूँ कि यह शक्ति असंख्य गुरुओं द्वारा संचित की हुई है, जो कि अनायास ही मुझे गुरुदेव द्वारा वसीयत में मिल गई। गुरु कृपा की महिमा करने को न मेरे पास भाव है, और न ही शब्द।''

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

संदर्भ-सिद्धयोग बड़ी पुस्तक-पृष्ठ-94 'संसार का हर प्राणी ईश्वर कृपा का अधिकारी है' शीर्षक से

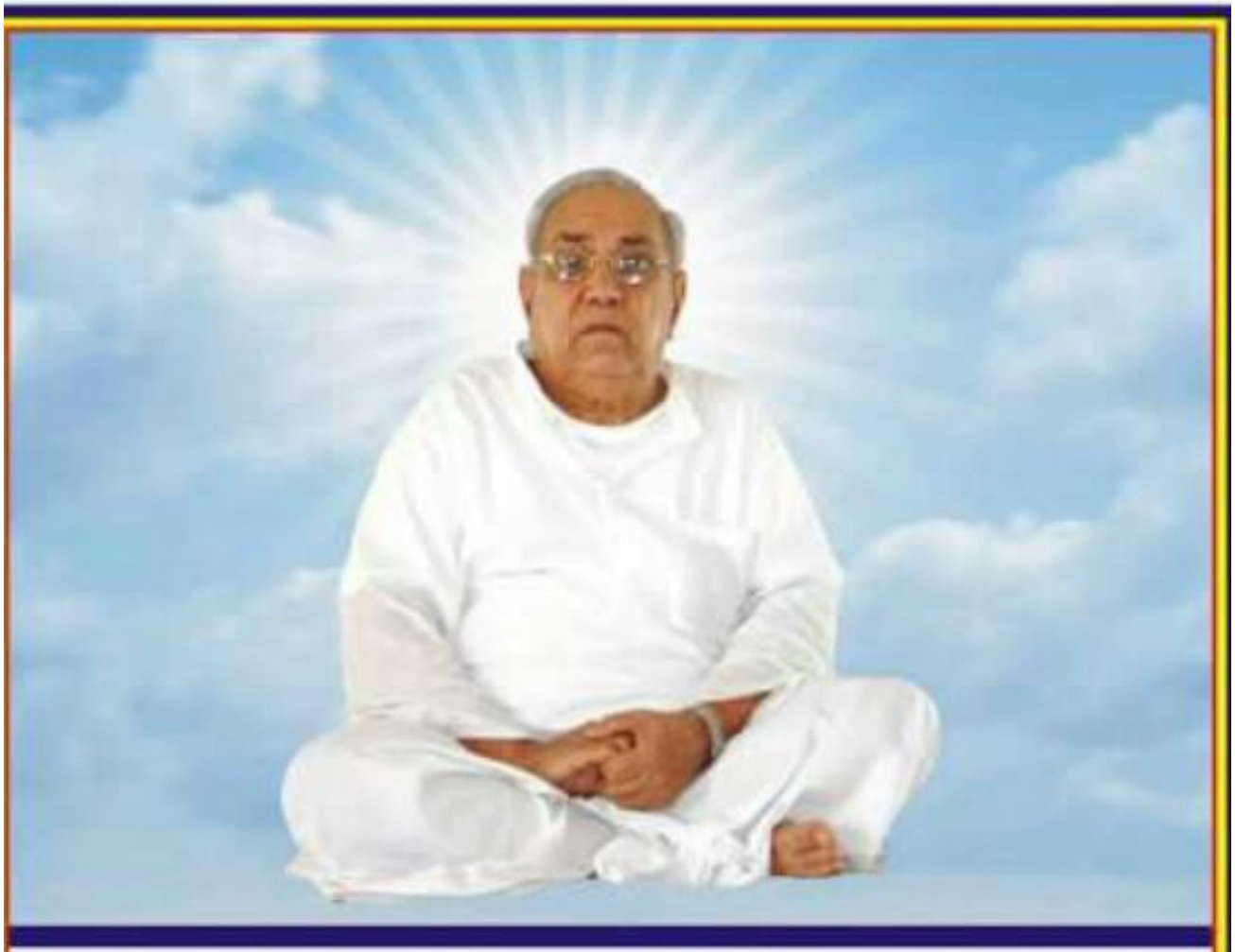

ध्यान की विधि

- आरामदायक स्थिति में किसी भी दिशा में बैठें एवं 2 मिनट तक गुरुदेव के चित्र को खुली आँखों से देखें, फिर आँखें बंद करके आज्ञाचक्र (भौंहों के बीच, जहां शिव का तीसरा नेत्र होता है) वहां पर गुरुदेव के चित्र का स्मरण करें एवं मन ही मन 15 मिनट के लिए गुरुदेव से ध्यान स्थिर करने हेतु प्रार्थना करें।
- फिर गुरुदेव के चित्र का आज्ञाचक्र पर ध्यान केन्द्रित करते हुए यदि गुरुदेव से दीक्षित हैं तो गुरुदेव द्वारा दिए गए दिव्य मंत्र का, नहीं तो गुरुदेव–गुरुदेव, राम–राम, कृष्ण–कृष्ण, जीसस–जीसस, अल्लाह–अल्लाह आदि में से किसी एक शब्द का मानसिक जाप बिना होंठ जीभ हिलाए करें।
- ध्यान के दौरान किसी भी प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसे आसन, बंध, मुद्राएँ, स्वतः होने लगें तो उन्हें रोकने का प्रयास नहीं करें तथा उन्हें सहज में होने दें। यह शरीर की शुद्धि एवं रोग मुक्त होने के लिए कुंडलिनी शक्ति करवाती है।
- ध्यान प्रतिदिन दो बार 15 मिनट सुबह तथा 15 मिनट शाम को करें ।
- बीमारियों से जल्दी छुटकारा पाने के लिए गुरुदेव द्वारा दिए गए मंत्र का हर समय साधन जप करते रहें और ध्यान से पूर्व गुरुदेव से प्रार्थना करते रहें।

।। ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः ।।

सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

सिद्धयोग

(शक्तिपात दीक्षा एवं कुण्डलिनी जागरण)

आध्यात्मिक उत्थान एवं रोग मुक्ति हेतु (निःशुल्क)

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी
(ब्रह्मलीन)

"ईश्वर प्रत्यक्ष-अनुभूति एवं साक्षात्कार का विषय है, कथा-प्रवचन का नहीं।"

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक एव संरक्षक समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग द्वारा शक्तिपात दीक्षा से मनुष्य शरीर में सुषुप्त मातृ शक्ति कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है। यह जाग्रत शक्ति प्रत्येक साधक के शरीर की आवश्यकतानुसार विविध प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसे-आसन, बंध, मुद्राएँ व प्राणायाम आदि स्वतः(Automatic) करवाती है। हमारे ऋषियों एवं योगियों ने इसे महायोग या सिद्धयोग की संज्ञा दी है। गुरुदेव द्वारा बताए गए दिव्य संजीवनी मंत्र के सघन जप व ध्यान से साधकों के त्रिविध ताप (शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक Physical, Mental & Spiritual) शांत होकर दिव्य परिवर्तन आते हैं-

- समस्त प्रकार के शारीरिक रोगों जैसे-एड्स, कैंसर, हीमोफीलिया, गठिया, ब्लड प्रेशर, डायबिटीज (शुगर), टी. बी., अस्थमा (दमा), लकवा (पेरालाइसिस) व हेपेटाईटिस आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।
- समस्त प्रकार के मानसिक रोगों जैसे -मानसिक तनाव, पागलपन, फोबिया (भय), चिड़चिड़ापन व अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति।
- समस्त प्रकार के नशों जैसे:- शराब, अफीम, हेरोइन, भाँग, चरस, गाँजा, स्मैक, तम्बाकू, सिगरेट आदि से बिना परेशानी के छुटकारा।
- विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति (Memory Power) व एकाग्रता (Concentration) में अभूतपूर्व वृद्धि।
- आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के दौरान प्रत्यक्ष देखना और सुनना।
- गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग' व 'मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति तथा जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।

मुख्यालय : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र,
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत - 342003
Web : www.the-comforter.org - 0291-2753699 +91 9784742595

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

सिद्धयोग दर्शन का प्रसार-प्रचार

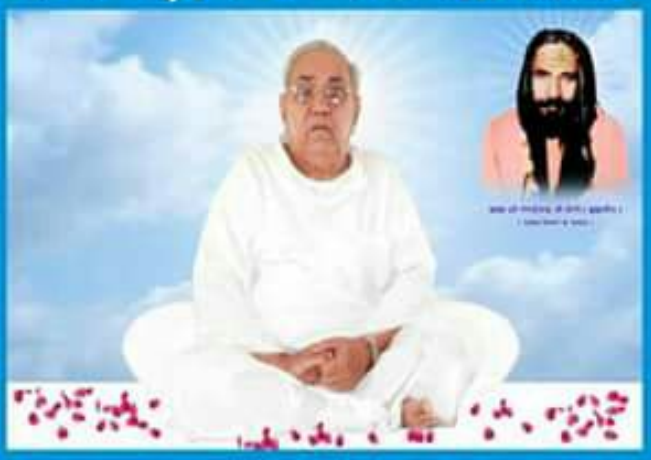

जो भी साधक संस्था से जुड़ना चाहते हैं अथवा पूज्य गुरुदेव के दिव्य संदेश, सिद्धयोग दर्शन को जन-जन तक पहुँचाना चाहते हैं तो निम्न प्रकार से सहयोग कर सकते हैं।

- स्वयं संस्था द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका स्पिरिचुअल साइंस की सदस्यता ग्रहण करें तथा नये साधकों को भी इसके सदस्य बनावें।
- शक्तिपात-दीक्षा के लिए मंत्र की सी डी ज्यादा से ज्यादा लोगों में बांटें।
- अपने अपने क्षेत्र/ शहर या गांवो के लोकल केबल चैनल पर सी.डी. चलवायें, जिससे सभी शहरवासी इसे अवगत हो।
- संस्था द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित वार्षिक कलैण्डर को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचावें।
- किसी शहर या गांव में लोगों को इकट्ठा करके एल.सी.डी. प्रोजेक्टर पर कार्यक्रम करावें।
- आस पास के विद्यालयों व महाविद्यालयों में स्वीकृति लेकर छात्रों को गुरुदेव की तस्वीर से ध्यान करावें
- अपनी यथा शक्ति संस्था में आर्थिक सहयोग कर सकते हैं।

- A.V.S.K. Jodhpur

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

पूज्य गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के सान्निध्य में शक्तिपात दीक्षा द्वारा कुण्डलिनी जागरण

कुण्डलिनी जागरण
एक पूर्ण विज्ञान

चेतना के सूक्ष्म केन्द्र

अन्तर - शक्ति (Mother Power)

कुण्डलिनी का चिन्तन करो, जो परम चिति है,
जो मूलाधार से लेकर सहस्रार तक विलास करती है, जो
विद्युत की भाँति चमकती है, जो कमल - नाल की भाँति
सूक्ष्म है, जो करोड़ों सूर्यों की भाँति जाज्वल्यमान है,
जो एक ऐसी शान्त - शीतल किरण है,
जैसे चन्द्रमा की अमृतमयी चाँदनी।

॥ ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः ॥

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

सिद्धयोग

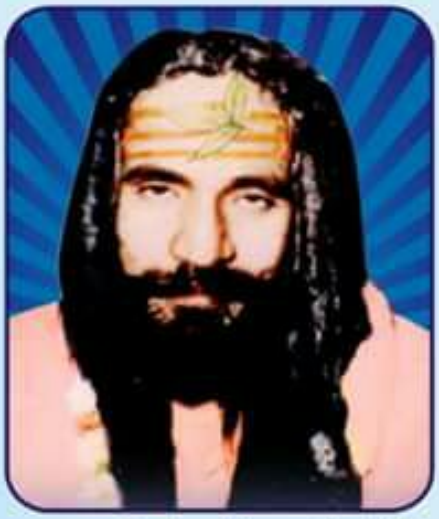

पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग

Website :
www.the-comforter.org

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी
(ब्रह्मलीन)

ध्यान की विधि - आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करूण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए दिव्य मंत्र का सघन जाप करें और यदि गुरुदेव से दीक्षित नहीं हैं तो कोई भी ईश्वरीय नाम जैसे-गुरुदेव, राम, कृष्ण, वाहेगुरु, जीसस, अल्लाह आदि का मानसिक जप करें (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। अपनी समस्या के समाधान हेतु सद्गुरुदेव से करूण प्रार्थना करें। इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रूप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

• ध्यान द्वारा विद्यार्थियों की एकाग्रता और याद्दाश्त में अभूतपूर्व वृद्धि। • सिद्धयोग द्वारा एड्स, कैन्सर सहित सभी असाध्य रोगों व नशों से पूर्ण मुक्ति संभव

संजीवनी मंत्र दीक्षा के लिए डायल करें-
07533006009

आश्रम : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पोस्ट बॉक्स नं. 41, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत-342003

☎ (0291) 2753699 M. 9784742595 web : www.the-comforter.org

॥ Om Shri Gangai Nathay Namah ॥

Adhyatma Vigyan Satsang Kendra, Jodhpur

Gurudev
Shri Ramlal Ji Siyag

Siddha Yoga

Website :
www.the-comforter.org

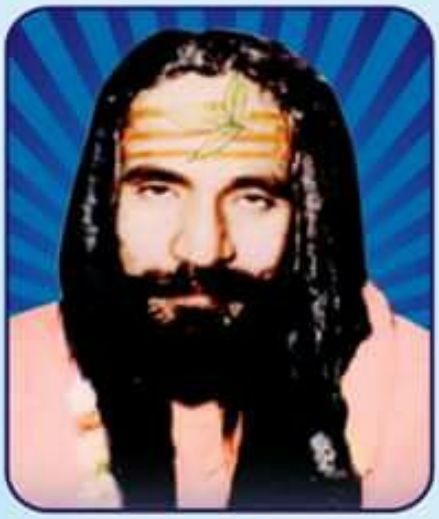

Late Baba
Shri Gangainath Ji

Method of Meditation : Sit in a comfortable position. Look gurudev's picture for some time then close your eyes and try to imagine gurudev at place between your eyebrows (third eye) and request for 15 minutes of meditation. While thinking of gurudev's image, silently (without moving your lips or tongue) gurudev's mantra or any spiritual force (**Ram, Krishna, Jesus, Waheguru, Allah etc.**) which you believe in. During meditation if you experience any kind of automatic movement then don't try to stop. The movements will stop automatically after 15 minutes.

- Improves concentration and memory power of students.
- All Physical & Mental diseases are cured included AIDS and Cancer.

To listen divine Mantra in Gurudev's blissful voice Dial - 07533006009

Ashram : Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya Resort, Chopasani, Jodhpur, (Raj.) INDIA 342003
Ph : 0291-2753699, M. +91 9784742595 Web. : www.the-comforter.org

" Om Shri Gangainathay Namah"

Does The Self Evident Need Proof of It's Existence ?

Please Do Spiritual Meditation

"प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? ध्यान करके देखें !"

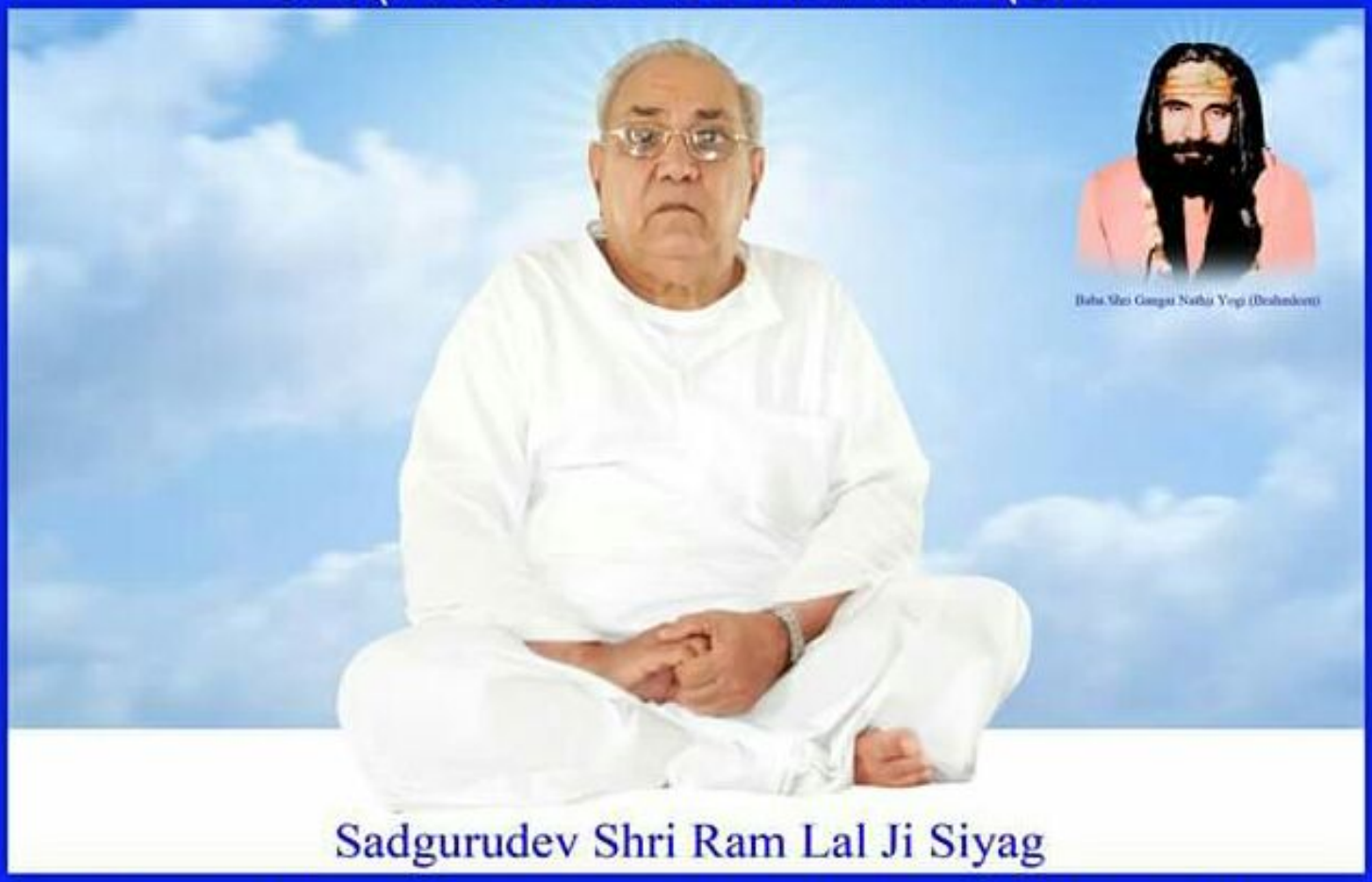

Ashram : Adhyatma Vigyan Satsang Kendra Jodhpur - 342003(Raj) India

Contact: 0291 2753699 , 09784742595 Web : www.the-comforter.org

" Om Shri Gangainathay Namah"

'YOG' Means Union Of Soul With Supreme

1+ 1= 1 = 0

''आत्मा का परमात्मा से मिलन ही 'योग' है''

सर्वं खल्विदं ब्रह्म

(निश्चित रूप से यह सब कुछ ईश्वर का स्वरूप है)

(All are brahman)

तत् त्वमसि

(तू वही है)

(You are thy)

Ashram : Adhyatma Vigyan Satsang Kendra Jodhpur - 342003, (Raj) India

सम्पर्क : 0291 2753699 , 09784742595 Web : www.the-comforter.org

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः

शक्तिपात दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा (मंत्र) प्राप्त करने के लिये डायल करें–

07533006009

पूज्य सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग (ब्रह्मलीन)

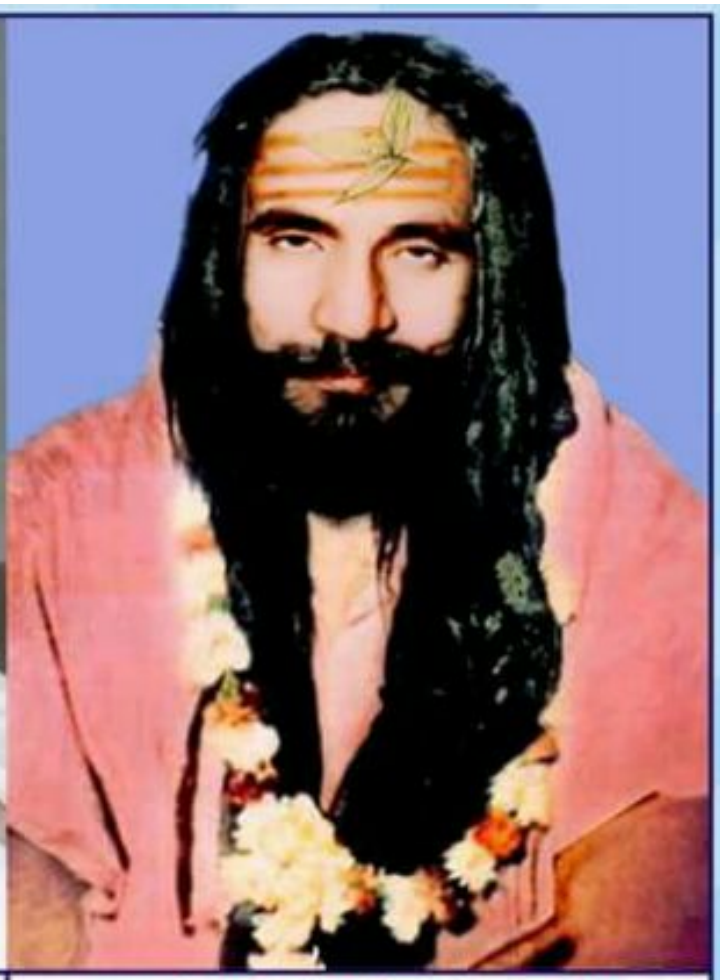

बाबा श्री गंगाईनाथ जी योगी (ब्रह्मलीन)

यह एक ऐसा विज्ञान है जो आज तक प्रकट नहीं हुआ और **अब मेरी तस्वीर से ध्यान होगा**, आप लोग इस देश में ही नहीं, दुनिया में कहो कि इस व्यक्ति की तस्वीर का ध्यान करने से, एड्स और कैंसर सहित सभी रोग ठीक हो जाएंगे।

अब यह Live (सीधा प्रसारण) जो हो रहा है, यह तो National (राष्ट्रीय) और International (अंतर्राष्ट्रीय) Level (स्तर) पर हो रहा है। मेरी आवाज तो चली गई आकाश में, अब इसको कोई रोक नहीं सकेगा और इसकी *(स्वयं की ओर इशारा करके)* तस्वीर नहीं मरेगी, इसकी तस्वीर नहीं मरेगी।

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

(30 जुलाई 2009) जोधपुर आश्रम में विशाल शक्तिपात–दीक्षा कार्यक्रम के दौरान

''समर्थ सद्गुरुदेव का महामिशन, उनकी तस्वीर का ध्यान व उनकी वाणी में दिव्य मंत्र द्वारा, जब तक ये पृथ्वी रहेगी तब तक चलता रहेगा।''